खण्ड-238, अंक-3
बुधवार, 17 माघ, शक संवत् 1884
(6 फरवरी, 1963 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 238 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६२

मूल्य : बिना महसूल 25 नये पैसे, महसूल सहित 31 नये पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	१२७–१३१
प्रश्नोत्तर	१३१–१६७
प्रश्नोत्तर में विलम्ब पर आपत्ति	१६७
उत्तर प्रदेश बिक्री-कर नियम, १९४८ में प्रख्यापित संशोधन (मेज पर रखे गये)	१६७
कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं (उपस्थित करने की अनुज्ञा नहीं दी गई) ..	१६७–१६८
नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान आकर्षणार्थ सूचनाएं	१६८
श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव (जारी) ..	१६८–२१९
नत्थियां	२२०–२३१

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, ६ फरवरी, १९६३

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में १० १/२ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री होतीलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य--३६७

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवेद्यनाथ, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह यादव, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ओंकारनाथ द्विवेदी, श्री
कंवईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुर पाल, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वर आरा, बेगम
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णपालसिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (बिजनौर)

गिरधारीलाल, श्री (वाराणसी)
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गँदादेवी, श्रीमती
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जमादारसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जियाउर्रहमान, श्री (उपसभाध्यक्ष)
जुगलकिशोर, श्री
जुगलकिशोर आचार्य, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखंडेराय, श्री
झिलमिटराम, श्री
टम्बेश्वरीप्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दीनदयाल करबरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमार देव वाशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह, श्री
नरसिंहनारायण पांडेय, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नियाज हसन खान, श्री
नियामतुल्ला अन्सारी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
नौरंगलाल, श्री
पंचमदास, श्री
परमाई लाल, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पीतमसिंह प्रधान, श्री
पुरुषोत्तमलाल बबबार, श्री (राजाजी)
पूरनलाल, श्री
प्रेमसिंह, श्री
प्रेमसुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पांडेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बंशीलाल, श्री

बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारीलाला विप्र, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवन्तसिंह, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बसन्तसिंह, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजराजसिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवानसहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
भूपसिंह, श्री
मंगल, श्री (देवरिया)
मंगलदेव, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महादेव, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधोनारायण मुद्गल, श्री
माधोप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मैवालाल जायसवाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मैनेजरसिंह, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपाल सिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री

राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह, यादव, श्री
राधेश्याम, शर्मा, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामआसरे, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचरण शाह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामरूपसिंह, श्री
रामलखन वकील, श्री
रामलखन शुक्ल, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर
रुद्रप्रतापसिंह, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री

वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
विक्रमशाह, राजा
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथ प्रसाद, श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
वीरसेन, श्री
वैजनाथ पांडेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शांतिचन्द्र शुक्ल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्तसिंह, श्री
शिवचरण, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीनिवास, श्री
श्रीपत मिश्र, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यनारायण पांडेय, श्री
सत्यवीर, कुंवर
सन्तसिंह युसुफ, श्री

सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजन राम विशारद, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरिदत्त कांडपाल, श्री
हरिशकुमार गंगवार, श्री
हरिसिंह, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतरामसिंह, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—नियोजन मंत्री श्री हरगोविन्द सिंह भी उपस्थित थे ।

प्रश्नोत्तर

बुधवार, ६ फरवरी १९६३

तारांकित प्रश्न

रासायनिक खाद के क्रय से लाभ

*१—श्री महादेव (जिला फैजाबाद) (अनुपस्थित)—

क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश के विभिन्न जिलों के जिला कोआपरेटिव फेडरेशनों के जिम्मे पी० सी० एफ० की बिकी हुई रासायनिक खाद के मूल्य का कितना-कितना बकाया ३१ मार्च, १९६२ तथा ३० जून, १९६२ को था ?

सहकारिता मंत्री (श्री चतुर्भुज शर्मा)—

सूचना नत्थी कर दी गई है ।

*२—श्री महादेव (अनुपस्थित)—

क्या सहकारिता मंत्री कृपया यह बतायेंगे कि प्रदेश के विभिन्न जिलों के फेडरेशनों को सन् १९६०-६१ में कुल कितना लाभ या हानि हुई ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

सूचना नत्थी कर दी गई है ।

*३—श्री महादेव (अनुपस्थित)—

क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि सरकार के पास फैजाबाद जिले में रासायनिक खाद वितरण के संबंध में खाद के ब्लैक किये जाने, अधिक मूल्य तथा बिना रसीद के बेचे जाने की कोई शिकायत आयी है अथवा इसकी खबर है ? यदि हां, तो उसके संबंध में क्या कार्यवाही की गयी ?

---

† छापी नहीं गई ।

श्री चतुर्भुज शर्मा—
कोई शिकायत नहीं है।

बांदा जिले के लिये हरिजन अनुदान

*४—श्री बृजमोहन लाल गुप्त (जिला बांदा) (अनुपस्थित)—
क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला बांदा में राष्ट्रीय प्रसार सेवा खंड (छाया) तथा विकास खंड, जसपुरा, तिन्दवारी, बड़ोखर में सन् १९५८ से १९६१ तक कितने हरिजन कुओं को (पानी पीने के) हरिजन विभाग द्वारा प्रतिखंड अनुदान दिया गया और उनमें से कितने बन चुके हैं तथा कितने बनना बाकी हैं ?

समाज कल्याण मंत्री (श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव)—
उक्त अवधि में हरिजनों के कूप निर्माणार्थ जसपुरा तथा तिन्दवारी क्षेत्रों में क्रमशः १ व २ कुओं के निर्माण के लिये अनुदान दिया गया। उन तीनों कुओं का निर्माण कार्य जारी है। बड़ोखर विकास क्षेत्र में इस अवधि में कोई अनुदान नहीं दिया गया।

*५—श्री बृजमोहनलाल गुप्त (अनुपस्थित)—
क्या सरकार यह भी बताने की कृपा करेगी कि बांदा जिला में सन् १९५७ से सन् १९६१ तक कितने हरिजन सम्मेलनों को अनुदान दिया गया और वह किस व्यक्ति को प्रतिवर्ष अलग-अलग दिया गया ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—
विवरण निम्न प्रकार है—

वर्ष	व्यक्ति का नाम	अनुदान
		रु०
१९५७–५८	.. ..	..
१९५८–५९	श्री महादेव प्रसाद साहू	५००·००
१९५९–६०	,, तदेव	३८०·४०
१९६०–६१	श्री महादेव प्रसाद जाटव	१७·००
		८९७·४०

जिला कोआपरेटिव बैंक एवं संघ, जौनपुर का निलम्बन

*६—श्री केशरीप्रसाद पांडेय (जिला जौनपुर)—
क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला कोआपरेटिव बैंक, जौनपुर कब और किस कारण से जब्त किया गया है ?

न्याय मंत्री के सभा सचिव (श्री चन्द्रसिंह रावत)—
जिला कोआपरेटिव बैंक जौनपुर का संचालक मंडल दिनांक २२–१२–१९६१ को निलम्बित किया गया है।

बैंक के संचालक मंडल द्वारा बैंक का ठीक से संचालन न करने तथा अनेकों गम्भीर अनियमितायें करने के कारण संचालक मंडल को भंग कर दिया गया है।

*७—श्री केशरीप्रसाद पांडेय—
क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला डी० सी० एफ०, जौनपुर कब और किस कारण से जब्त किया गया ? क्या जब्ती के कारण में गबन भी है ? यदि हां, तो कितने रुपये का ?

श्री चन्द्रसिंह रावत---

जिला सहकारी विकास संघ, जौनपुर का संचालक मंडल दिनांक ६-३-१९५९ को निलंबित किया गया। संघ का कुप्रबन्ध करने, हिसाब-किताब में अनियमितताएं करने, विभागीय आदेशों की अवहेलना करने तथा संघ में गबन होने के कारण संचालक मंडल भंग किया गया था। गबन ६८,८५४ रु० २९ न० पै० का था।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय---

क्या माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि कोआपरेटिव बैंक, जौनपुर के संचालक मंडल द्वारा कौन-कौन सी अनियमितताएं की गयीं जिनके कारण बैंक की जब्ती की गयी है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

बैंक के डाइरेक्टर्स ने बहुत-सा एडवांस ले लिया था और उसका एडजस्टमेंट नहीं किया, क्रेडिट के नियमों के विरुद्ध बहुत-सा क्रेडिट उन्होंने लेने की कोशिश की, बार-बार कहने पर भी टी० ए० एडवांस को वह एडजस्ट नहीं कर पाये, इसके अतिरिक्त उन्होंने नोटिस दे दिया कि फलां तारीख से फलां तारीख तक कोई कर्जा नहीं मिलेगा, इससे बैंक की साख को धक्का लगा, इसी तरह की अनियमितताएं थीं जिनको बार-बार कहने पर भी उन्होंने ठीक नहीं किया और इसलिये मजबूर हो कर उनको निलंबित करना पड़ा।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय---

यह देखते हुये कि यह अनियमितताएं कोई घोर या गंभीर अनियमितताएं नहीं हैं क्या माननीय मंत्री जी विचार करेंगे कि इस बैंक की जब्ती समाप्त कर दी जाय ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

यह तो अपनी-अपनी राय की बात है। किसी की राय में एडवांस ले कर खर्च न करना और अपने पास रखना मामूली चीज हो सकती है, लेकिन फिर भी माननीय सदस्य जो कह रहे हैं उस पर विचार किया जायगा।

श्री हिम्मतसिंह (जिला बुलन्दशहर)---

क्या माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि जिन लोगों ने गबन किया है उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

मैंने गबन की बात नहीं कही थी। टी० ए० वगैरह का रुपया एडवांस ले कर उन्होंने उसे ऐडजस्ट नहीं किया और कहने पर भी नहीं कर पाये।

श्री कल्पनाथसिंह (जिला गोरखपुर)---

यह बैंक १९५९ में जब्त हुआ और आज १९६३ है, तो आज तक डी० सी० डी० एफ० का चुनाव वहां न हो पाने का क्या कारण है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

पहला सवाल बैंक के बारे में था। डी० सी० डी० एफ० के बारे में कुछ विशेष आरोप थे। उनमें गबन में कुछ लोगों को सजायें हो चुकी हैं और कुछ मुकदमें चल रहे हैं, कुछ केसेज में जांच हो रही है। इसलिये यह जरूरी समझा गया कि जब तक यह केसेज चल रहे हैं तब तक बैंक जब्त रखा जाय।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)---

क्या माननीय सहकारिता मंत्री इस चीज को देखते हुये कि यह केवल जौनपुर के बैंकों का ही मामला नहीं है बल्कि सारे प्रदेश में जहां भी कोआपरेटिव बैंक चल रहे हैं वहां पर अनियमितताएं और भ्रष्टाचार तथा गबन के चार्जेज हैं--- वह देखें कि यह प्रान्तीय स्तर पर हैं, तो क्या वे बतायेंगे कि कोई ऐसी विशेष कमेटी बनी है, जो सारे कोआपरेटिव बैंकों की जांच करे ताकि सही तरीके से कोआपरेटिव के प्रति जनता की आस्था बढ़े ? इसके लिये कोई उपाय क्या विचाराधीन है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

श्रीमन्, जैसी बात माननीय सदस्य सोच रहे हैं, सभी जिलों में वास्तव में ऐसा है नहीं। कहीं कहीं जहां अनियमिततायें होती हैं, या गबन होते हैं और जिनकी रिपोर्ट होती है और जो पकड़ में आते हैं, उनके ऊपर फौरन एक्शन लिया जाता है। जो अच्छा काम हो रहा है जो कि बहुत बड़ा है उसके बारे में तो माननीय सदस्य कोई प्रश्न नहीं करते। वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं थी। फिर भी मैं बता दूं कि वैसे तमाम हमारी कमेटीज हैं, उनके जरिये से भी बराबर इसकी जांच होती है और यह कहना कि यह किसी कमेटी विशेष के लायक है इसे कहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

श्री जगन्नाथ राव (जिला जौनपुर)—

क्या सहकारिता मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि डी० सी० डी०एफ० जौनपुर में ६८ हजार ८ सौ ५४ रुपये २९ नये पैसे का जो गबन हुआ है, उसमें कुछ लोग दंडित किये गये हैं, तो वह कौन-कौन लोग हैं ?

श्री चन्द्रसिंह रावत—

श्रीमन्, इस गबन के बहुत से लोगों के ऊपर मुकदमे चल चुके हैं और इसमें कुछ लोगों को सजा भी हो चुकी है। मैं यह भी बता दूं कि कुछ और लोगों के खिलाफ भी मुकदमे चल रहे हैं तथा इन्क्वायरीज चल रही हैं।

श्री विजयसिंह (जिला जालौन)—

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि इस जौनपुर बैंक को जो जब्त किया गया है, तो उसका बाकी का काम किस तरह से चलाया जा रहा है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

श्रीमन्, दो संस्थायें हैं, एक तो जिला कोआपरेटिव बैंक और दूसरी डी०सी०डी० एफ०, तो यह जो गबन है वह डी०सी०डी० एफ० का है और उन्हीं से मुकदमा चल रहा है। बैंक में कोई गबन नहीं है।

श्री कल्पनाथसिंह—

क्या माननीय सहकारिता मंत्री जी को यह बात मालूम है कि जौनपुर जिले में, कोआपरेटिव बैंक में कांग्रेस के एक नेता जो जिले के नेता, थे और जो मौजूदा सरकार के पक्ष के खिलाफ पड़ते हैं, उनके कब्जे में वह बैंक था और इसलिये वह बैंक जब्त कर दिया गया, और वह चार्जेज लगाये गये हैं, क्योंकि वह सज्जन सरकार के पक्ष में नहीं थे ? क्या इस पर वे प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

श्रीमन्, सहकारिता विभाग में कोई आदमी कांग्रेस, सोशलिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट या जनसंघ का है, इस दृष्टि से नहीं देखा जाता है। बल्कि यह देखा जाता है कि वह सहकारी कार्यकर्त्ता हैं और उसके पदाधिकारी हैं, जो जिस तरह से कार्य करेंगे, उसी हिसाब से कार्यवाही होती है, इसमें पालिटिक्स का कोई हिसाब नहीं लगाया जाता है।

श्री मैनेजरसिंह (जिला बलिया)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कई बार खड़ा हुआ हूं। परन्तु आपने मुझे बोलने नहीं दिया। मेरा सहकारिता मंत्री जी से यह कहना है कि या तो वे इस्तीफा दे दें और या फिर गबन की परिभाषा बदल दें, क्योंकि जब से उन्होंने पदभार ग्रहण किया है तब से सहकारिता में गबन ही गबन हो रहा है। इसलिये उनको मेरी सलाह है कि वे अपने पद से त्याग-पत्र दे दें।

श्री उपाध्यक्ष—

अच्छा, आप कृपया बैठें।

महावन क्षेत्रीय सहकारी समिति के विरुद्ध आरोप

*८--श्री भीखालाल (जिला उन्नाव)--

क्या सरकार बताने को कृपा करेगी कि महावन क्षेत्रीय सहकारी समिति, जिला मथुरा के विरुद्ध बीज व खाद के वितरण व वसूली के संबन्ध में भ्रष्टाचार का शिकायती-पत्र दिनांक ३० अगस्त, १९६२ का जिलाधीश महोदय, मथुरा को प्राप्त हुआ था ? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गयी और क्या परिणाम निकला ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

जी हां ।

अतिरिक्त जिला सहकारी अधिकारी, मथुरा ने इस शिकायती पत्र पर जांच की । जांच करने पर महावन क्षेत्रीय सहकारी समिति के भूतपूर्व मंत्री व्यवस्थापक के विरुद्ध कर्जा व खाद बांटने में गोलमाल करने का आरोप सही पाया गया जिसके लिये मंत्री व्यवस्थापक पर आरोप लगा कर उनका जवाब तलब किया गया है और स्थानीय अनुशासन समिति की अगली बैठक में इस पर विचार किया जायगा ।

श्री भीखालाल--

क्या माननीय सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिस प्रार्थना-पत्र का जिक्र है उसमें किस-किस प्रकार के आरोप थे और उनके सही पाये जाने पर कितने धन के गोल-माल का अनुमान है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

कितना रुपया था इतना नहीं मालूम हुआ, लेकिन उन्होंने रुपये को मिसयूज किया और जितना रुपया दिया हुआ बतलाया गया उससे ज्यादा रुपया उन्होंने अपने पास कर लिया । इसकी रिपोर्ट आने पर चूंकि डिसिप्लिनरी कमेटी में मामला जाता है, उनकी फाइनल रिपोर्ट आने पर वह क्या कार्यवाही करते हैं, हम गौर कर सकेंगे और करेंगे ।

श्री भीखालाल--

क्या यह सही है कि ३० जून, १९६२ को इस सहकारी बैंक में करीब सवा दो लाख के बकाया था । उसकी अदायगी के लिये किसानों से फर्जी बांड भरवा करके ट्रांस्फर एंट्री करके पूरा किया गया और किसानों से यह कह कर कि महाजनों से रुपया लेकर तुम्हारा बकाया अदा किया जायगा और ३ रुपया प्रतिशत महाजन को देने के नाम पर सूद वसूल किया गया ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

इस समय डिटेल कुछ नहीं बतला सकता हूं क्योंकि सारा मामला कमेटी के सुपुर्द है ।

श्री विजयसिंह--

क्या माननीय मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि खाद को ऐग्रीकल्चर विभाग फैक्ट्री से प्राप्त करता है और पी०सी०एफ० को डिस्ट्रिब्यूशन के लिये देता है, तो इसके डिस्ट्रिब्यूशन में यह आडिट रिपोर्ट मिली कि १,४७ लाख के करीब का हिसाब अभी नहीं मिला है, तो क्या सरकार विचार करेगी कि ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे दोनों विभागों में समन्वय हो और गड़बड़ी न हो ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

इस पर सरकार जरूर विचार करेगी और जो सही बात होगी उसको देखा जायगा ।

श्री भीखालाल--

क्या सहकारिता मंत्री जी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि जो प्रार्थना-पत्र जांच के लिये दिया गया है उसमें जो बातें दी गयी हैं उससे प्रकट होता है कि हजारों रुपये का गोल-माल है इसकी जांच पुलिस के सुपुर्द करने की कृपा करेंगे ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जो लोकल डिसिप्लिनरी कमेटी है वह अगर उचित समझती है कि उसे पुलिस को दिया जाय-तो ठीक है और अगर नहीं देती है और फिर हमारे पास आता है और हम समझेंगे कि वह इस लायक है कि पुलिस में दिया जाय तो पुलिस में दिया जायगा ।

जेल्स कोआपरेटिव सोसाइटी सम्बन्धित श्री ई० पी० मेगी का मामला

*९--श्री राजेंद्रसिंह (जिला एटा) तथा श्री हिम्मतसिंह--

क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि अभी हाल में ही कोई ऐसा प्रस्ताव कारागार महानिरीक्षक ने यू०पी० जेल्स कोआपरेटिव सोसाइटी से लिखवा कर सरकार के पास भेजा है कि श्री ई० पी० मेगी के खिलाफ जो चार्ज है उसको चलाना नहीं चाहते ? क्या सरकार उस रेजोल्यूशन के आधार पर जो २४ दिसम्बर, १९५८ या २४ दिसम्बर, १९५९ को श्री ई०पी० मेगी के खिलाफ गबन की रिपोर्ट की गयी उसको वापस लेने जा रही है ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

जी नहीं।

२४-१२-५९ को यू०पी० जेल डिपार्टमेंट कोआपरेटिव सोसाइटी द्वारा पुलिस में दर्ज की गई रिपोर्ट पर पुलिस ने जांच करके समिति के क्लर्क, श्री हनुमान प्रसाद सक्सेना के विरुद्ध मुकदमा चलाया और श्री हनुमान प्रसाद सक्सेना को सेशन अदालत से सजा हुई। अतः अब श्री ई० पी० मेगी के खिलाफ २४-१२-५९ को की गई कथित रिपोर्ट को वापस लेने का प्रश्न नहीं उठता है।

*१०--श्री राजेंद्रसिंह तथा श्री हिम्मतसिंह--

क्या सहकारिता मंत्री को यह भी मालूम है कि ५ हजार रु० जो कि कई वर्षों तक श्री ई० पी० नेगी के पास था उसको जो सरकारी खजाने में नहीं जमा किया। और आडिट के छानबीन के समय रुपया जमा किया गया उसके विषय में सरकार क्या कर रही है ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

स्पेशल आडिट नोट (५५-५६ से ५८-५९) से तहवील रोकने का संकेत मिला था और इस संबंध में श्री मेगी का जवाब भी तलब किया गया था लेकिन मामले की जांच करने के लिये सोसाइटी की प्रबन्ध कमेटी द्वारा नियुक्त उप-समिति ने यह निर्णय किया कि कैशबुक लिखने व रोकड़ रखने की जिम्मेदारी खजांची, श्री ए० के० बोस के ऊपर थी न कि श्री मेगी पर। उप-समिति ने यह भी निर्णय लिया कि चूंकि तहवील श्री बोस द्वारा जमा की जा चुकी है तथा हिसाब-किताब पूर्ण हो चुके हैं अतएव कोई अग्रिम कार्यवाही करने की आवश्यकता नहीं है।

*११--श्री राजेंद्रसिंह तथा श्री हिम्मतसिंह--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उक्त सोसाइटी ने जो आटा चक्की, गल्ला की दूकान खोल रखी थी जिसके लिये एक दफा कार्यकारिणी ने तय किया था कि मामला पुलिस में दिया जाय लेकिन उसका आज तक हिसाब श्री ई० पी० मेगी के जिम्मे बाकी है और इस मामले को महानिरीक्षक कारागार दबा रहे हैं ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

समिति की आटा चक्की व गल्ला की दूकानों से संबंधित किसी मामले को पुलिस में देने के लिये कार्यकारिणी ने कोई प्रस्ताव नहीं पास किया है। आटा चक्की व गल्ले की दूकानों का कोई हिसाब भी श्री ई०पी०मेगी पर बकाया नहीं है।

श्री राजेन्द्रसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि मेगी जी ने अपने स्पष्टीकरण में क्या जवाब दिया ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

मेगी साहब ने यही जवाब दिया कि उनकी जिम्मेदारी नहीं थी और न ही उनके पास कोई रुपया बकाया था।

श्री हिम्मतसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जब इन्हीं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज हुई तो हनुमान प्रसाद के खिलाफ मुकदमा क्यों चलाया गया ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जो लोकल कमेटी थी उसने यह तय किया कि मेगी जी पर कोई चार्ज नहीं है, उनका सिर्फ इतना ही दोष है कि उन्होंने लापरवाही की। मैं यह बता दूं कि इसकी जांच के लिये एक कमेटी बनी थी और वह इससे सहमत हुई कि मेगी का इसमें कोई दोष नहीं है और उनके खिलाफ कोई चार्ज नहीं बनता।

श्री राजेंद्रसिंह---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि यह जो रुपया जमा किया गया यह आडिट के पहले जमा किया गया या जब चार्ज लग गया तब ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जहां तक मुझे मालूम है बाद को किया गया है, लेकिन इसके लिये नोटिस की आवश्यकता होगी।

श्री राजेंद्रसिंह---

क्या माननीय मंत्री जी ऐसे लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही करेंगे जो रुपये का गबन करके, बाद को रुपया जमा कर देते हैं ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

कार्यवाही तो हुई, सजा भी हुई, और अगर रुपया मिलता है तो उसे क्यों न लिया जाय ?

श्री हिम्मतसिंह--

१७ नवम्बर, १९६२ को श्री हनुमान प्रसाद एडीशनल जज के यहां से छूट गये और उसमें मेगी जी के खिलाफ स्ट्रिक्चर पास हुये हैं। तो क्या उस ओर सरकार का ध्यान गया है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जजमेंट मुझे देखने को नहीं मिला है।

श्री शारदानन्द (जिला सीतापुर)--

यह समिति कब बनी और उसके कौन-कौन से सदस्य थे ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

उसकी सूची इस समय नहीं है, मगर जो पूरी सहकारी समिति होती है उसने अपनी एक उप-समिति उसके लिये सर्वसम्मति से बनायी थी।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

हमेशा इस सदन में सहकारी समितियों में गबन से संबंधित प्रश्न हुआ करते हैं। तो क्या माननीय मंत्री जी कोई ऐसी जांच समिति बनायेंगे जो उत्तर प्रदेश की सभी सहकारी समितियों की जांच करके उनके गबन से संबंधित एक रिपोर्ट दे और उसे यहां सदन में रखा जाय ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

इसका जवाब दिया जा चुका है।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय---

श्रीमन्, जो भी जुडिशियल फाइंडिंग्स होती हैं उनके ऊपर यह सरकार कोई कार्यवाही नहीं करती है और उन आफिसरों के खिलाफ जिनके खिलाफ कोई स्ट्रिक्चर होते हैं, कोई एक्शन लेती है, सरकार हमेशा यही कहती है कि हमने देखा नहीं। तो क्या माननीय मंत्री जी इस केस में जजमेंट की कापी मंगाकर देखेंगे और जिसके खिलाफ स्ट्रिक्चर पास हुये हैं उसके खिलाफ कोई कार्यवाही करेंगे?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

मैं जजमेंट को प्राप्त करूंगा और किसी कार्यवाही की आवश्यकता होगी तो वह की जायगी।

मुरादाबाद की गृह-निर्माण समिति सम्बन्धी अनियमिततायें

*१२---श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़) (अनुपस्थित)---

क्या सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि यह सत्य है कि मुरादाबाद की गृह निर्माण समिति संबंधी भारी अनियमितताओं की शिकायतें सरकार को प्राप्त हुई हैं? यदि हां, तो क्या उन अनियमितताओं की विभागीय जांच भी करवायी गयी थी और उस जांच का क्या नतीजा निकला?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

जी हां।

विभागीय जांच से मालूम हुआ कि प्रबन्धक संचालक ने प्लाटों के एलाटमेंट मेम्बरों की भरती तथा समिति के हिसाब रखने में समिति के नियमों तथा समय-समय पर दिये गये विभागीय आदेशों के विपरीत गम्भीर अनियमिततायें की हैं।

*१३---श्री नेकराम शर्मा (अनुपस्थित)---

क्या सरकार सहकारिता विभाग, मुरादाबाद की गृह निर्माण समिति के बारे में सरकार को प्राप्त भारी अनियमितताओं के कारण नियमों के अनुसार इस सोसाइटी को अपने हाथों में लेकर उसकी व्यवस्था करेगी?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

अभी सहायक निबन्धक, मुरादाबाद को यह आदेश दिया गया है कि वह समिति के प्रबन्धक संचालक द्वारा अनियमितताओं को ठीक करायें और प्रबन्धक संचालक द्वारा ऐसा न करने पर नियमानुसार संचालक मंडल को भंग करने तथा उसके स्थान पर सरकारी प्रशासक नियुक्त करने की कार्यवाही करें। सहायक निबन्धक ने उन अनियमितताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुये उनका सुधार करने के लिये समिति को लिखा है।

कोआपरेटिव सप्लाई मिल्क यूनियन, इलाहाबाद में गड़बड़ी

*१४---श्री मैनेजरसिंह, श्री बंशीलाल (जिला इलाहाबाद) तथा श्री नैनसिंह (जिला मुजफ्फरनगर)---

क्या सरकार प्रश्न संख्या ४० और ४१, दिनांक १७ अक्टूबर, १९६२ के उत्तर के संदर्भ में बतलाने की कृपा करेगी कि यह सत्य है कि कोआपरेटिव सप्लाई मिल्क यूनियन का दूध खराब होने के कारण जनता नहीं खरीदती है? यदि नहीं, तो जब कि इलाहाबाद शहर में दूध की काफी मांग है तो बिक्री कम क्यों हुई?

श्री चन्द्रसिंह रावत---

जी नहीं। इलाहाबाद में अन्य दूध बेचने वाले निम्न श्रेणी का दूध व मक्खन, निकाला दूध अच्छे दूध के रूप में कम दाम पर तथा उधार बेचते हैं। आम तौर पर जनता क्वालिटी पर ध्यान न देकर कम दाम की ओर विशेष झुकती है। साथ ही साथ उधार

की प्रथा भी एक गूढ़ प्रश्न है। मिल्क यूनियन नकद बेचती है अतः होड़ में मुकाबिला नहीं कर पाती।

*१५---श्री मैनेजरसिंह, श्री बंशीलाल तथा श्री नैनसिंह---

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि दूध के जो १६ नमूने लिये गये उसमें से १३ नमूनों की सूचना नगर महापालिका से जो नहीं मिली है उसकी सूचना शीघ्र मंगा कर सदन में रखने की कृपा करेगी ?

श्री चन्द्रसिंह रावत---

इलाहाबाद नगर महापालिका के मुख्य नगर अधिकारी ने सूचित किया है कि १६ नमूनों में से १३ नमूने खराब पाये गये तथा ३ ठीक पाये गये। मिलावट करने वालों के खिलाफ उचित अदालती कार्यवाही की जा रही है। मुख्य नगर अधिकारी के पत्र की प्रतिलिपि सदन की मेज पर रखी है।

(देखिये नत्थी 'क' आगे पृष्ठ २२० पर)

*१६---श्री मैनेजरसिंह, श्री बंशीलाल तथा श्री नैनसिंह---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि कोआपरेटिव सप्लाई मिल्क यूनियन के मोटर के पैट्रोल में इस वर्ष कितना खर्च हुआ ?

श्री चन्द्रसिंह रावत---

इलाहाबाद कोआपरेटिव मिल्क यूनियन के मोटर के पेट्रोल में इस वर्ष रुपया १,२४६.५० न०पै० खर्चा हुये।

श्री मैनेजरसिंह---

क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे १७ अक्तूबर के प्रश्न ४०,४१ के उत्तर के संदर्भ में कि कम खपत का कारण दूध का खराब होना है ? जैसा आपने बतलाया कि १६ नमूनों में से १३ खराब निकले ....

श्री उपाध्यक्ष---

बहस न करें, केवल प्रश्न पूछें।

श्री मैनेजरसिंह---

मैं स्मरण दिला रहा था। उनसे पहले तो आप परेशान हो जाते हैं।

श्री चतुर्भुज शर्मा---

पहला उत्तर तो मेरे पास नहीं है।

श्री मैनेजरसिंह---

व्यवस्था का प्रश्न है। मेरे प्रश्न में साफ लिखा है कि प्रश्न सं० ४० और ४१, दिनांक १७ अक्तूबर के उत्तर के संदर्भ में, तो उनके पास वे उत्तर इस समय होने चाहिये थे, उनका न होना क्या उचित है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

उसका कारण दूध की क्वालिटी खराब होना नहीं है। ग्वालों से हम, दूध का स्टैंडर्ड रखने के कारण, कम्पीट नहीं कर पाते और इसलिये घाटा है। जिस पर नगरपालिका वाले शक करते हैं उनके नमूने लेते हैं। मैनेजर का हमने ट्रांसफर कर दिया। चाहे केस बने या न बने, हमने प्रासीक्यूट करने की इजाजत दे दी। गड़बड़ी को रोकने में हम पूरी मदद करते हैं।

श्री कल्पनार्थासिंह---

क्या वहां की बिक्री इसलिये कम है कि उधार और खराब दूध बेचा जाता है ? इसकी जानकारी क्या भूतपूर्व कोआपरेटिव मंत्री की रिपोर्ट से, जो उसी जिले के हैं, हुई या कैसे हुई, या मंत्री जी को निजी जानकारी है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--
विभागीय अफसरों से रिपोर्ट मंगाकर हम उत्तर देते हैं। उनकी जांच निष्पक्ष होती है। उनका मिल्क यूनियन से कोई संबंध नहीं है।

श्री कल्पनार्थसिंह---
वह जांच क्यों कराई गई थी?

श्री चतुर्भुज शर्मा---
मैंने कहा कि विभागीय अधिकारियों से जांच कराई चूंकि शिकायतें आई थीं।

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)---
अभी मंत्री जी ने बतलाया कि १ लाख, कुछ पैट्रोल पर खर्च हुआ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---
वह पढ़ने में गलती कर गये थे, बाद में ठीक कर दिया था। वह १ हजार है, लाख नहीं है।

श्री यादवेन्द्रदत्त---
यह वार्षिक है या माहवारी?

श्री चन्द्रसिंह रावत---
इसमें "इस वर्ष" लिखा है।

श्री बंशीलाल---
इलाहाबाद कोआपरेटिव मिल्क सप्लाई यूनियन में कितनी मोटरें काम कर रही है?

श्री चतुर्भुज शर्मा---
नोटिस की जरूरत है।

श्री बंशीलाल---
मैंने मंत्री जी से पूछा था कि कितनी मोटरें कार्य कर रही हैं?

श्री उपाध्यक्ष---
इसके लिये उन्होंने कह दिया कि नोटिस की जरूरत है।

श्री बंशीलाल---
इसकी सूचना कब तक मंगा ली जायगी?

श्री उपाध्यक्ष---
जब आप इसका नोटिस देंगे, तब उसकी सूचना आपको दी जायगी।

श्री सत्यनारायण पांडेय (जिला इलाहाबाद)---
माननीय मंत्री जी ने मनोवैज्ञानिक उत्तर दिया कि जनता असली दूध को नहीं चाहती बल्कि सस्ते दूध को चाहती है, तो उन्होंने यह उत्तर किस आधार पर दिया है? मेरी समझ में तो जनता असली दूध को ही पसंद करती है?

श्री चतुर्भुज शर्मा---
यह तो आपकी राय है, हमारे आफीसर्स ने जो रिपोर्ट दी थी, उसमें उनकी राय यही थी।

श्री यादवेन्द्रदत्त---
मंत्री जी ने कहा कि जनता असली दूध नहीं, नकली चाहती है तो क्या सरकार ने एडल्ट्रेशन के लिये आज्ञा दे दी है? यदि हां, तो काहे का एडल्ट्रेशन हो रहा है?

(मंत्री जी को उत्तर देने के लिये नहीं पुकारा गया।)

श्री हिम्मतसिंह--

माननीय मंत्री जी ने बताया कि शिकायतों की जांच की गयी, तो मैं जानना चाहूंगा कि उन शिकायतों में मुख्य-मुख्य शिकायतें क्या थीं ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जहां तक शिकायतों की बात है, इलाहाबाद मिल्क यूनियन के खिलाफ ४ मर्तबा तो इसी सदन में सवालात पूछे गये हैं। यह यूनियन का दुर्भाग्य है कि वह ऐसे चक्कर में पड़ गया है। अब मैं चाहता हूं कि यह यूनियन बिलकुल सही तरीके से चल जाय। इन गड़बड़ियों के बारे में जो पहले भी उत्तर दिया गया था उसमें भी बताया गया था कि इनके साथ कोई पक्षपात नहीं बरता जा रहा है।

शिकायत यह थी कि दूध में जितना फैट होना चाहिये वह नहीं था, पानी मिला था। लेकिन एक दिक्कत यह आ जाती है कि गाय के दूध में फैट की एक मात्रा होती है और भैंस के दूध में फैट की दूसरी मात्रा होती है। लेकिन मिक्स्ड दूध में क्या हो, इसका कोई फिक्ज्ड स्टैंडर्ड नहीं है और आमतौर पर गाय और भैंस का मिला हुआ दूध बेचा जाता है। इसलिये कोर्ट में भी चीज बदल जाती है। यह दिक्कत हमारे सामने आ जाती है।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय--

जैसा कि माननीय मंत्री जी ने बताया कि १६ सैंपिलों में से १३ सैंपिल खराब पाये गये। उनकी जो एक्जामिनेशन रिपोर्ट आयी है क्या उसको माननीय मंत्री जी ने देखा और क्या उसमें यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि १६ में से १३ सैंपिलों में दूध में चर्बी मिली हुई थी, ऐसे सैंपिलों की संख्या ज्यादा थी, तो क्या चर्बी मिला कर दूध बेचा जाता था ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

ऐसी कोई सूचना मेरे पास नहीं है।

रानीखेत डेवलपमेंट कोआपरेटिव सोसाइटी के मन्त्री के खिलाफ मुकदमा

*१७--श्री विजयपालसिंह (जिला मुजफ्फरनगर) तथा श्री ऊदल (जिला वाराणसी)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि रानीखेत डेवलपमेंट कोआपरेटिव सोसाइटी के खिलाफ कोई मुकदमा इस वक्त अदालत में चल रहा है ?

श्री चन्द्रसिंह रावत--

रानीखेत डेवलपमेंट सोसाइटी के खिलाफ नहीं बल्कि सोसाइटी के मंत्री व अन्य कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ मुकदमा अदालत में चल रहा है।

श्री विजयपालसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि वह कौन-सा अपराध है जिसके मातहत यह मुकदमा चल रहा है और क्या सरकार इस मुकदमे को वापस लेने का विचार कर रही है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

रानीखेत सोसाइटी के खिलाफ यह शिकायत थी कि उन्होंने इस सोसाइटी के रुपये का कुछ गोलमाल किया है। उस रुपये को सोसाइटी के काम में न लगा कर और कामों में लगाया। काफी रुपया था जो पहले बतलाया जा चुका है। उसकी फिर जांच हुई और मुकदमा वगैरह चल रहा है। अब अदालत के विचाराधीन केस है, इसलिये मैं समझता हूं कि इस सम्बन्ध में ज्यादा बात इस वक्त मैं नहीं कह सकूंगा।

श्री ऊदल--

क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इस कोआपरेटिव सोसाइटी के खिलाफ २२-६-६१ के आडिट के मुताबिक ही मुकदमा कायम किया गया है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

जी हां, जांच-पड़ताल करने के बाद आडिट करने वालों को कई चीजें मालूम हुईं, तभी वह केस किया गया है ।

श्री विजयपालसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि सन् १९६१ में जो आडिट हुआ, उसकी बिना पर मुकदमा चलाया गया है, उसके बाद भी जो आडिट हुआ उसमें भी सोसाइटी के खिलाफ रुपये के गोलमाल करने की रिपोर्ट है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

बाकी के लिये उनके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जा रही है ।

श्री ऊदल--

क्या माननीय मंत्री जी इस प्रश्न के ऊपर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे कि पहले आडिट रिपोर्ट के अनुसार सोसाइटी में लाखों रुपये का गोलमाल है और इसके बाद भी सन् १९६०-६१ में जो दूसरा आडिट हुआ है, उसको भी माननीय मंत्री जी मंगा कर देखने की कृपा करेंगे, क्योंकि मालूम हुआ है कि उसमें भी हजारों रुपये का गोलमाल दिखलाया गया है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा--

दूसरी आडिट रिपोर्ट की बात जो माननीय सदस्य ने देखने की कही, मैं उसे मंगवा कर देखूंगा और यदि उसके ऊपर कोई कार्यवाही की आवश्यकता हुई तो की जायगी ।

(व्यवधान)

श्री मैनेजरसिंह--

श्रीमन्, माननीय नरसिंहनारायण पांडेय जी ने इस सम्बन्ध में एक खत माननीय मुख्य मंत्री जी को लिखा था । क्योंकि सुनने में आया है कि इस मुकदमे को दबाने की कोशिश की जा रही है। यह माननीय मुख्य मंत्री जी के चुनाव क्षेत्र का ही मामला है ।

श्री उपाध्यक्ष--

अब यह खत्म हो गया ।

*१८--श्री लखपतराम शर्मा (जिला झांसी)--

[१३ फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किया गया ।]

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव--

श्रीमन्, इसके पहले कि मैं प्रश्न संख्या १९, २० और २१ का उत्तर दूं, मैं आपकी तथा सदन की आज्ञा से यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि मुझे तथा विभाग को खेद है कि इसी विषय पर पहले पूछे गये तारांकित प्रश्न संख्या ११ जो माननीय सदस्य मुकुटबिहारीलाल ने पूछे थे और जिसका उत्तर १९ सितम्बर, १९६२ को दिया गया था वह गलत सूचना मिलने के कारण ठीक नहीं था । इस सम्बन्ध में क्षेत्रीय अधिकारी के विरुद्ध उचित कार्यवाही की जा चुकी है और अब पुनः जांच करने के बाद जो सूचना उपलब्ध है, उसके आधार पर प्रश्न संख्या १९, २० और २१ का उत्तर मैं दे रहा हूं ।

बाराबंकी जिले में सैनिटरी इन्स्पेक्टर्स

*१९--श्री मुकुटबिहारीलाल (जिला बाराबंकी)--

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि तहसील रामसनेही घाट, जिला बाराबंकी के अन्तर्गत ब्लाक सैनिटरी इन्सपेक्टरों द्वारा अलग-अलग फूड मिलावट तथा सैनिटेशन में दिनांक १ अप्रैल, १९६१ से ३० मार्च, १९६२ तक कितने चालान किये गये ?

चिकित्सा उप मंत्री (श्री धर्मसिंह)—

तहसील रामसनेही घाट, जिला बाराबंकी के अन्तर्गत १-४-६१ से ३०-३-६२ तक ब्लाक इन्सपेक्टरों द्वारा अलग-अलग ब्लाकों में फूड मिलावट के निम्नलिखित चालान किए गए :

क्षेत्र	फूड मिलावट के चालानों की संख्या
इन्स्पेक्टर, पूरे डलही ब्लाक	..
इन्स्पेक्टर, मवई ब्लाक	..
इन्स्पेक्टर, रूदौली नोटीफाइड एरिया	५
इन्स्पेक्टर, बनी कौडर ब्लाक	५
इन्स्पेक्टर, दरियाबाद ब्लाक	..
इन्स्पेक्टर, रूदौली ब्लाक (बिल्सर)	१
योग ..	११

नोट: (क) इन चालानों के समय पूरे डलही तथा मवई ब्लाक और रुदौली नोटीफाइड एरिया एक ही सेनिटरी इन्स्पेक्टर के चार्ज में थे ।

(ख) रामसनेही घाट तहसील में कोई भी सैनीटेशन कानून का चालान उपरोक्त समय में नहीं हुआ ।

*२०—श्री मुकुटबिहारीलाल—

क्या स्वास्थ्य मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि तहसील रामसनेही घाट के अन्तर्गत सभी ब्लाक सैनिटरी इन्स्पेक्टरों को गैंग मैन प्राप्त हैं ? अगर नहीं, तो क्यों ?

श्री धर्मसिंह—

जी नहीं । इस तहसील के जिला परिषद् के केवल दो सेनिटरी इन्स्पेक्टरों को सैनिटरी गैंगमैन प्राप्त हैं । ये गैगंमेन केवल जिला परिषद् के अधीन इन्स्पेक्टरों को ही प्राप्त हैं । शेष इन्स्पेक्टर सरकार के अधीनस्थ हैं उनके लिए ऐसे गैनमैन का कोई आयोजन नहीं है ।

*२१—श्री मुकुटबिहारीलाल—

क्या स्वास्थ्य मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि बाराबंकी जिले में कितने ब्लाक सैनिटरी इन्स्पेक्टर हैं और किस सैनिटरी इन्स्पेक्टर के अन्तर्गत कौन-कौन ब्लाक हैं और कितने समय से वह एक ही स्थान पर कार्य कर रहे हैं ?

श्री धर्मसिंह—

सूचना संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'ख' आगे पृष्ठ २२१-२२२ पर)

श्री मुकुटबिहारीलाल—

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो सेनिटरी इंसपेक्टर मवई व डलई ब्लाक के हैं जिनके क्षेत्र में रुदौली नोटिफाइड एरिया भी है उनका हेडक्वार्टर कहां है ?

श्री धर्मसिंह—

वह तो ब्लाक के अन्तर्गत रहते हैं लेकिन जिनके बारे में वह पूछ रहे हैं उनके बारे में सूचना नहीं है ।

श्री मुकुटबिहारीलाल---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इस डलई और मवई ब्लाक से वह नोटिफाइड एरिया वहां का कितनी दूरी पर है ?

श्री धर्मसिंह---

इसके लिये तो नोटिस की आवश्यकता है ।

श्री रामकिशोर त्रिपाठी (जिला बाराबंकी)---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जैसा कि उन्होंने बताया है कि जिन लोगों ने गलत इन्फार्मेशन दी उनके खिलाफ कार्यवाही की गई, तो वे कौन-कौन व्यक्ति हैं और उनके खिलाफ क्या-क्या कार्यवाही की गई ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जो डिस्ट्रिक्ट मेडिकल आफिसर आफ हेल्थ थे उन को एडीशनल मेडिकल आफिसर आफ हेल्थ जो एक नीची जगह है उस पर तनजुल्ली कर दी गई है और कानपुर को ट्रान्सफर कर दिया गया है, जो हेडक्लर्क थे उनका भी ट्रान्सफर कर दिया गया है और जो लालबख्शसिंह सेनिटरी इंसपेक्टर थे उनको भी चार्जशीट दिया गया है ।

श्री भीखालाल---

माननीय मंत्री जी ने बताया कि जो सेनिटरी इंसपेक्टर परिषद् के अधीन काम करते हैं उनको गैंगमैन मिलता है और जो हेल्थ डिपार्टमेंट के अधीन हैं उनको नहीं मिलता, तो जब दोनों का एक सा ही काम है तो गवर्नमेंट के जो हेल्थ विभाग के अधीन हैं उनको क्यों नहीं मिलता ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

इस वक्त नहीं दिया जा सकता पहले से नियम हैं इसलिये नहीं दिया जाता और अभी तो संकटकालीन समय है और किफायतशारी करना है इसलिये नहीं दिया जा सकता ।

श्री मुकुटबिहारीलाल---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि यह मवई नोटिफाइड एरिया में जो ५ चालान हुये वह किस मास में हुये और किन-किन चीजों के हुये हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

यह मिलावट या फूड एडल्टरेशन के हैं, इसकी सूची मेरे पास है माननीय सदस्य चाहें तो निकाल कर बताया जा सकता है ।

श्री हरिनाथ तिवारी एडवोकेट (जिला फैजाबाद)---

मंत्री जी ने अभी स्वयं कहा था कि पहले की सूचनायें गलत थी लेकिन मैं मंत्री जी की जानकारी के लिये बताना चाहता हूं कि उनकी यह सूचना भी गलत है । उस सेनिटरी इंसपेक्टर की, जिसकी कालावधि ३ साल की बताई गई वह रुधौली में २० साल से है लेकिन सूचना में यह बात नहीं दी गई है, तो क्या माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि रुधौली नोटिफाइड एरिया में वह इंस्पेक्टर २० साल से वाकई चला आ रहा है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

इसके लिये सूचना की आवश्यकता है, बाकी वहां पर यह दीक्षित हैं जरूर ।

श्री धर्मसिंह---

इस सम्बन्ध में मैं निवेदन कर दूं कि हमारे २ तरह के सेनिटरी इंस्पेक्टर्स हैं, एक तो हेल्थ विभाग के हैं और दूसरे अन्तरिम जिला परिषदों के हैं और जो अन्तरिम जिला परिषद् के हैं वह वहां पर काफी दिन से हैं ।

श्री हरिनाथ तिवारी एडवोकेट---

जो सेनिटरी इंस्पक्टर वहां २० साल से है उसको वहां से ट्रांसफर करेंगे ?

श्री धर्मसिंह--

जैसा मैंने कहा जो हेल्थ विभाग के हैं उनका २० साल से कोई सम्बन्ध नहीं है लेकिन जो अंतरिम जिला परिषद् से संबंधित हैं, यह कार्य परिषद् का है वह जहां मुनासिब समझे ट्रांसफर करे।

श्री यादवेन्द्रदत्त--

श्री दीक्षित, जिनका बहुत नाम लिया जा रहा है यह जिला परिषद् में हैं या आपके विभाग में हैं ?

†श्री धर्मसिंह--

जो रिपोर्ट है उसके अनुसार यह अंतरिम जिला परिषद् के अन्तर्गत कर्मचारी हैं और इसी लिए उनको गैंग प्राप्त था।

श्री यादवेन्द्रदत्त--

मंत्री जी इसका उत्तर दें कि वह २० साल से वहां हैं ?

†श्री धर्मसिंह--

तहसील रामसनेही घाट तथा नोटीफाइड एरिया, रुदौली में श्री दीक्षित १९३८ से जरूर तैनात हैं परन्तु इस समय वह मवई तथा पूरे डलई ब्लाक में मौजूदा तैनाती केवल ३ वर्ष से है।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)--

मंत्री जी ने जिस गलत सूचना के लिये सदन से माफी मांगी वह सूचना किस अधिकारी द्वारा दिलायी गयी थी और इस प्रकार की सूचना देने वाले अधिकारी के खिलाफ सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गई ?

श्री उपाध्यक्ष--

इसका जवाब हो गया।

(श्री उपाध्यक्ष द्वारा दूसरा प्रश्न लिये जाने पर)

श्री मुकुटबिहारी लाल--

श्रीमन्, कुछ गलतफहमी है उसको मंत्री जी स्पष्ट कर दें।

श्री उपाध्यक्ष--

आप बैठें। अब मैंने दूसरा सवाल ले लिया है।

श्री मुकुटबिहारीलाल--

मैं नोटिस देता हूं कि सरकार ने जो सूचना दी है वह गलत है, मैं विशेषाधिकार का प्रश्न उठाना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--

चार दफा आपको मौका मिला। जब आप नहीं उठे तो मैं क्या करूं।

कानपुर में परिवार नियोजन केन्द्र

*२२--श्रीमती सुशीला रोहतगी (जिला कानपुर)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि कानपुर शहर में कितने Family Planning Centres हैं ? इनमें कितने महापालिका द्वारा चलाये जाते हैं और कितने निजी Clinics हैं ?

श्री धर्मसिंह--

कानपुर शहर में कुल १७ केन्द्र हैं इनमें से कानपुर नगरमहापालिका के अन्तर्गत १४ परिवार नियोजन केन्द्र चल रहे हैं, १ निजी केन्द्र है तथा २ सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं।

---

†७ फरवरी, १९६३ के वक्तव्य के अनुसार संशोधित।

*२३---श्रीमती सुशीला रोहतगी---

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि इन परिवार नियोजन केन्द्रों से कानपुर में १९६०-६१ में कितने स्त्री तथा पुरुषों ने लाभ उठाया ?

श्री धर्मसिंह---

१९६०-६१ में इन केन्द्रों द्वारा ५,०१६ पुरुष तथा स्त्रियों ने लाभ उठाया ।

*२४---श्रीमती सुशीला रोहतगी---

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि इस योजना के अन्तर्गत जो आपरेशन हुये हैं उनमें पिछले पांच वर्षों में कानपुर में स्त्रियों तथा पुरुषों की क्या संख्या रही है ?

श्री धर्मसिंह---

इस योजना के अन्तर्गत कानपुर शहर में पांच वर्षों में निम्नलिखित स्त्रियों और पुरुषों के आपरेशन हुए हैं ।

वर्ष	स्त्री	पुरुष	योग
१९५८ ..	६३	..	६३
१९५९ ..	१५०	३	१५३
१९६० ..	१२७	३	१३०
१९६१ ..	६३९	८३	७२२
१९६२ .. (जुलाई तक)	१०९	७५	१८४
	१,०८८	१६४	१,२५२

श्री मैनेजरसिंह---

मंत्री जी बतायेंगे आज देश में जो राष्ट्रीय संकट है और देश की रक्षा के लिये नौजवानों की आवश्यकता है, जब देश के नेता कहते हैं लड़ाई लम्बी चलेगी तो क्या यह आवश्यक नहीं है कि परिवार नियोजन केन्द्रों को बन्द करके परिवार बढ़ाने का प्रयास किया जाय ?

माल मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)---

अगर माननीय मैनेजरसिंह को यही पसन्द है तो किया जा सकता है ।

श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)---

मंत्री जी बतायेंगे कि किन-किन मंत्रियों ने इससे लाभ उठाया है क्योंकि ऐसा न हो कि हमही पर लागू हो जाय यह योजना ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

*२५---श्री मदनपालसिंह (जिला हमीरपुर)---

[हटा दिया गया ।]

बांदा जिले में हरिजन कूपों के लिये अनुदान

*२६---श्री मतोलासिंह (जिला बांदा)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बांदा जिले में हरिजनों के पानी पीने के वास्ते कितने कुयें सन् १९६१-६२ में कहां-कहां बने और उसके लिये जिला हरिजन समाज कल्याण विभाग को सन् १९६१-६२ में कितने रूपये सरकार ने अनुदान में दिये ?

श्री धर्मसिंह—

बांदा जिले के हरिजनों के लिये सन् १९६१-६२ में पानी पीने के लिये १८ कुएं संलग्न सूची में दिये ग्रामों में बने। जिनके लिये अनुदान पहले ही दिया जा चुका था। सन् १९६१-६२ में ११,००० रुपये की धनराशि भी सरकार द्वारा बांदा जिले के लिये स्वीकृत हुई।

(देखिये नत्थी 'ग' आगे पष्ठ २२३ पर)

हरख ब्लाक में हरिजन अनुदान

*२७—श्री मेड़ीलाल (जिला बाराबंकी) (अनुपस्थित)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बाराबंकी जिला के हरख ब्लाक में विगत ५ वर्षों में हरिजन विभाग से किसे और कितना और किस कार्य के लिये अनुदान दिया गया ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

विगत ५ वर्षों में बाराबंकी जिले के हरख ब्लाक में निम्न प्रकार अनुदान दिये गये:—

अनुदान ग्रहीता का नाम व पता	वर्ष	धन की मात्रा जो स्वीकृत की गई	कार्य जिसके लिये धन दिया गया
		रु०	
१—श्री नान्हू, ग्राम हरख	१९५७-५८	४००	कूप निर्माण
२—श्री शंकर, ग्राम सतरिख		४००	कूप निर्माण
३—श्री राजाराम, ग्राम मोहम्मद पुर भजरे, गाल्हामऊ	१९५९-६०	२२५	गृह उद्योग
४—श्री खुशीराम, ग्राम अलुवन मऊ		१२५	गृह उद्योग
५—श्री पंचमलाल, ग्राम टेरा	१९६०-६१	५००	कूप निर्माण
६—श्री मैक, ग्राम तरिगांव	१९६१-६२	५००	कूप निर्माण

रसआ ग्राम में जच्चा-बच्चा केन्द्र की आवश्यकता

*२८—श्री राममूर्ति 'अंचल' (जिला शाहजहांपुर) (अनुपस्थित)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि ग्राम रसआ तहसील पुवायां, जिला शाहजहांपुर में प्रथम पंचवर्षीय योजना में जच्चा-बच्चा केन्द्र खोलने का आदेश हुआ था ? यदि हां, तो आज तक क्यों नहीं खोला गया ? यदि खोला जायगा, तो कब तक ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी नहीं ऐसा कोई आदेश नहीं हुआ था और इस समय सरकार के विचाराधीन ऐसा कोई प्रस्ताव भी नहीं है।

सहारनपुर परिवार नियोजन केन्द्र में लेडी डाक्टर न होना

*२९—श्री बालोजी अग्रवाल (जिला आगरा) (अनुपस्थित)—

क्या स्वास्थ्य मंत्री १७ अक्तूबर, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या १३ नत्थी 'ग' के सन्दर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सत्य है कि सहारनपुर परिवार नियोजन केन्द्र के लिये लेडी डाक्टर बैजल का फिरोजाबाद केन्द्र से स्थानान्तरण लगभग एक वर्ष पूर्व हो चुका है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जी हां। परन्तु उन्होंने सहारनपुर में चार्ज नहीं लिया था।

*३०---श्री बालोजी अग्रवाल (अनुपस्थित)---

क्या लेडी डाक्टर बैजल स्थानान्तरण हो जाने पर भी अभी तक छुट्टी लेकर फिरोजाबाद में ही रह रही हैं?

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव---

जी नहीं, छुट्टी पर नहीं हैं। अब डाक्टर बैजल फिरोजाबाद में ही काम कर रही हैं।

बांदा जिले में हरिजन कल्याण अनुदान

*३१---श्री मतोलासिंह---

क्या समाज कल्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि सन् १९६१-६२ व १९६२-६३ के वित्तीय वर्ष में बांदा जिले के अलग-अलग विकास खंडों में हरिजन कल्याण सम्बन्धी निम्न-लिखित कार्यों पर कितने-कितने रुपये खर्च किये गये :

(१) आवास या पुनर्वास, (२) पेय-जल की व्यवस्था, (३) आर्थिक विकास के लिये सहायता, (४) अस्पृश्यता निवारण, (५) प्राविधिक व्यवसायिक और कुटीर उद्योग सम्बन्धी शिक्षा ?

श्री धर्मसिंह---

सूचना संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'घ' आगे पृष्ठ २२४ पर)

बीसलपुर से भट्ठे हटाने की मांग

*३२---श्री दुर्गाप्रसाद (जिला पीलीभीत)---

क्या विकास मंत्री को पता है कि जिला पीलीभीत के अन्तर्गत नगरपालिका बीसलपुर में थाने के पश्चिम कई भट्ठे आबादी से मिले हुये चल रहे हैं जिनके धुयें से निवासियों को बहुत परेशानी रहती है और नजदीक के बागों में आम की फसल धुआं लगने से नष्ट हो जाती है ?

श्रम मंत्री के सभा-सचिव (श्री बंशीधर पांडेय)---

यह भट्ठे नगरपालिका, बीसलपुर के हद में नहीं हैं वह जगह जहां यह भट्ठे लगे हैं अन्तरिम जिला परिषद, पीलीभीत के कार्य क्षेत्र (Jurisdiction) में हैं।

इसी आधार पर भट्ठे बन्द कराने के सम्बंध में जिला परिषद् ने कार्यवाही की थी जिस में न्यायालय ने निर्णय दिया कि यह भट्ठे बन्द नहीं किये जा सकते मगर आबादी तथा सड़क की तरफ खुदाई नहीं बढ़ेगी।

*३३---श्री दुर्गाप्रसाद---

यदि हां, तो क्या सरकार उपरोक्त भट्ठों को हटाने की शीघ्र व्यवस्था करेगी ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री बंशीधर पांडेय---

प्रश्न संख्या ३२ के उत्तर में दी गई सूचना के आधार पर इसका प्रश्न नहीं उठता।

श्री मैनेजरसिंह---

उन्होंने कहा कि जिला परिषद् ने मुकदमा चलाया भट्ठे बन्द करने के लिये। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या जिला परिषद् ने कोई लाइसेन्स दिया था या नहीं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

जिला परिषद् ने कोई मुकदमा नहीं चलाया। यह क्षेत्र नगरपालिका में है या जिला परिषद् में, इस बारे में मामला न्यायालय में गया । चूंकि यह क्षेत्र जिला परिषद् में है और नगरपालिका की तरफ़ से कार्यवाही हुई इसी बिना पर वह खारिज हुआ ।

श्री उपाध्यक्ष---

उनको लाइसेन्स मिला था या नहीं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

इसकी सूचना तो नहीं है कि जिला परिषद् के अन्तर्गत उनको लाइसेन्स मिला या नहीं।

श्री मैनेजर सिंह---

भट्ठों के लिये कुछ बाई-लाज बने हुये हैं। क्या उन बाई-लाज का अतिक्रमण इन भट्ठों के चलाने के कारण हुआ या नहीं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

यह तो न्यायालय से फैसला हो चुका है। उसने स्पष्ट आज्ञा दी है कि ये भट्ठे अब सड़क और आबादी की तरफ नहीं बढ़ेंगे। जिला परिषद् के बाई-लाज जो आगे आने वाले भट्ठे होंगे उनके ऊपर लागू होंगे।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय---

क्या सरकार के पास भी इस का बात का आवेदन वहां के लोगों ने दिया था कि ये भट्ठे जो आबादी के नजदीक हैं कायदे के अनुसार आबादी से दूरी पर होने चाहिये इसलिये कायदे की अवहेलना की गयी है और अवहेलना करके ये भट्ठे चलाये जा रहे हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

ऐसी कोई शिकायत सरकार के पास नहीं है। अगर उसके पास कोई ऐसी शिकायत आयेगी तो उस पर विचार किया जायगा।

पन्त सागर की डूब में आये स्कूल

*३४---श्री रामप्यारे (जिला मिर्जापुर)---

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि पंत सागर की डूब में अन्तरिम जिला परिषद्, मिर्जापुर के कितने जूनियर हाई स्कूल, प्राइमरी स्कूल, औषधालय डूबे हैं ? इनमें से अब तक कितने औषधालय, जूनियर हाई स्कूल तथा प्राइमरी स्कूल बनवाकर परिषद् को दिये गये हैं ? कितने अभी बाक़ी हैं और वे कब तक बनवाकर दिये जायेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय---

पुनर्वासन अधिकारी रिहेन्द बांध योजना पिपरी, मिर्जापुर से प्राप्त सूचना के अनुसार परिषद् का कोई भी औषधालय जलमग्न नहीं हुआ। केवल १७ प्राइमरी पाठशाला तथा १ जूनियर हाई स्कूल जलमग्न हुये हैं। उपर्युक्त स्कूल भवनों के प्रतिरूप में अंतरिम जिला परिषद् की इच्छानुसार १३ प्राइमरी स्कूल भवन निर्माण करके परिषद् को दे दिये गये और स्कूल चलने शुरू हो गये हैं। गोकि परिषद् का कोई भी औषधायय भवन डूब क्षेत्र में था फिर भी एक विशाल औषधालय भवन पुनर्वास क्षेत्र जरहा में निर्मित करने का निर्णय हो चुका है और शीघ्र ही कार्य शुरू होने वाला है। जूनियर हाई स्कूल भवन भी तैयार है और शीघ्र ही परिषद् को स्थानांतरित कर दिया जायगा ।

*३५---श्री रामप्यारे---

क्या यह बात सही है कि सरकार द्वारा अभी तक पुनर्वास क्षेत्रों में स्कूल भवन न बनने के कारण कोटा, खड़िया पलिका डाढ़, कोहरौल, जमशिला, मैरवा, शिरसोती, बीजपुर, मेहरौठ, डोरहर, खैराही इत्यादि की प्राइमरी पाठशालाओं की कक्षायें पेड़ों के नीचे तथा मैदान में चल रही हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

ग्राम कोटा, खडिया, कोहरौल जमशीला, मरवा, शिरसोती, पुनर्वास क्षेत्रों के बाहर हैं। यह पुराने गांव आंशिक डूबे हैं। परिषद् द्वारा ही स्कूल चलाने का कार्यक्रम है। शासन से इसका कोई संबंध नहीं है। यहां पाठशालायें वहां के निवासियों के व्यक्तिगत भवनों में अथवा गांव वालों की सहायता से निर्मित झोपड़ियों में चल रहे हैं। ग्राम बीजपुर डोड़ कर तथा मेझरौट जो पुनर्वास क्षेत्रों में स्थिति है वहां के निवासियों के भवनों में चल रही है। इन क्षेत्रों में स्कूल भवन कहां बनाये जायं इस विषय में परिषद् को लिखा गया है। उनकी स्वीकृति आने पर इस दिशा में कार्य शुरू होगा। ग्राम खैराही में स्कूल भवन बनाया है और पाठशाला वहीं पर लगती है। ग्राम पालिका डाढ़ में कोई पाठशाला नहीं है।

*३६---श्री रामप्यारे---

क्या सरकार उपर्युक्त स्थिति को देखते हुये पुनर्वास क्षेत्रों में चल रहे बिना भवन के पाठशालाओं के लिये छाया की कोई अस्थायी व्यवस्था करेगी अथवा किराये पर मकान ले कर बच्चों के स्वास्थ्य तथा पढ़ाई की रक्षा करेगी?

श्री बंशीधर पांडेय---

उपर्युक्त उत्तर से स्पष्ट है कि सरकार द्वारा अस्थाई व्यवस्था करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो क्षेत्र डूब के बाहर हैं वहां परिषद् द्वारा स्कूल भवन निर्माण करने की व्यवस्था करनी चाहिये।

श्री रामप्यारे---

क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि यह जो आंशिक रूप में गांव डूबे हुये बताये गये हैं वास्तव में सारी बस्ती डूब गयी है और स्कूल समाप्त हो गये हैं और मैं आज देख कर आया हूं कि ३/४ स्कूल अभी भी पेड़ों के नीचे चल रहे हैं तो क्या मंत्री जी कोई स्थायी व्यवस्था करेंगे क्योंकि गर्मी का समय आ रहा है और बच्चों की तन्दुरुस्ती पर खराब असर न पड़े?

श्री बंशीधर पांडेय---

मैंने निवेदन कर दिया है कि आंशिक रूप से जो गांव डूबने की चर्चा की गई है तो वे गांव डूब क्षेत्र के बाहर के हैं। लेकिन जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा, जिला परिषद् को लिखा गया है कि यह उनका कर्त्तव्य है कि वहां पर स्कूल कायम करें।

जौनपुर जिले में वृद्धावस्था पेन्शन

*३७---श्री केशरीप्रसाद पांडेय---

क्या श्रम मंत्राणी कृपया बतायेंगी कि जौनपुर में कितने लोगों को वृद्धावस्था पेंशन मिलती है?

श्रम उप मंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)---

जिला जौनपुर में ३१-१२-६२ को ११२ व्यक्तियों को वृद्धावस्था पेंशन मिल रही थी।

श्री केशरी प्रसाद पांडेय---

क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि वृद्धावस्था पेंशन प्राप्त करने के लिये कौन से नियम हैं और उनके आधार पर जौनपुर की विभिन्न तहसीलों में किन-किन लोगों को वृद्धावस्था पेंशन दी गई है?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा---

मान्यवर, जितने भी नियम हैं वे गजट में प्रकाशित हो चुके हैं। दूसरे यह कि तहसीलवार किस-किस को पेंशन मिल रही है, इस तरह की सूचना उपलब्ध करना न जनहित में है और न आवश्यकता है।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

अभी मंत्री जी ने कहा कि यह सूचना देना जनहित में नहीं है। श्रीमन्, वृद्धावस्था पेंशन देना ही जनहित में है.....

श्री उपाध्यक्ष—

मंत्री जी का मतलब यह है कि विभिन्न तहसीलों में बताने में और जिले में बताने में क्या फर्क है ? इससे कोई नतीजा निकलेगा ?

श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

जरूरी नतीजा निकलेगा चूंकि सम्भव है एक ही तहसील में ज्यादा दे दी गई हों। इसलिये यह जानकारी दिलवा दीजिये।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

श्रीमन्, मैं बड़ा अनुग्रहीत होऊंगा अगर वे किसी भी व्यक्ति का नाम मुझे दे दें जिसका प्रार्थना-पत्र अकारण अस्वीकृत किया गया हो। मैं उनके साथ कागजात देखने को तैयार हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि किसी का प्रार्थना-पत्र अकारण अस्वीकृत नहीं हो सकता ह सिवाय नियमों के।

श्री मैनेजरसिंह—

तहसीलवार सूचना देना जनहित में नहीं है तो क्या चुनाव क्षेत्र के आधार पर सूचना देने की कृपा करेंगे ताकि सारी पोल खुल जाय ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

मैं उधर की भावनाओं का आदर करते हुये सिर्फ इतनी सफाई करना चाहता हूं कि तहसीलवार हर व्यक्ति का नाम इकट्ठा करने में जो समय लगेगा उसमें लाभ होने वाला नहीं है। चूंकि लाभ नहीं होगा इसलिये जनहित नहीं होगा।

श्री कल्पनाथसिंह—

उपाध्यक्ष जी, एक सवाल की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। प्रश्न संख्या ४५–४६ आज के एजेंडे पर देखें। इसमें स्थगन की तिथि लिखी हुई है १३–१२–१९६२। आज उत्तर मिला है कि अभी भी सूचना एकत्र की जा रही है। इसके पहले भी एक बार यह सवाल स्थगित हो चुका है। आप कृपा कर के मंत्री जी से पूछ लें, वह मौजूद हैं।

श्री उपाध्यक्ष—

आप की बात सही है। बहुत टाइम हो गया है। लेकिन अब तो इस वक्त में आया नहीं। यह आयेगा।

श्री कल्पनाथसिंह—

क्या दिक्कत हो रही है जरा मंत्री जी बता दें जिस पर कहा जाता है कि अभी भी सूचना एकत्र की जा रही है।

बाराबंकी अन्तरिम जिला परिषद् के मन्त्री का भत्ता

*३८—श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि मन्त्री, अन्तरिम जिला परिषद् निर्माण-कार्य के इंजीनियर या ओवरसियर की अनुपस्थिति में डबल ड्यूटी करके डबल वेतन, टी० ए०, डी० ए० ले सकता है ?

नोट:—तारांकित प्रश्न ३७ के पश्चात् प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया।

श्रम मन्त्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)---

अन्तरिम जिला परिषद् के मंत्री ओवरसियर की अनुपस्थिति में तो नहीं परन्तु इंजीनियर की अनुपस्थिति में शासन की स्वीकृति से ही डबल ड्यूटी कर के अतिरिक्त वेतन तथा टी० ए० डी० ए० ले सकते हैं।

*३९---श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

क्या सरकार को ज्ञात है कि बाराबंकी अन्तरिम जिला परिषद् के मंत्री उक्त दोनों डबल ड्यूटी कर डबल वेतन, टी० ए०, डी० ए० ले रहे हैं? यदि हां, तो ऐसा क्यों?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

जी हां। बाराबंकी जिला परिषद् के मंत्री को शासकीय नियमों का गलत अर्थ लगाने के कारण बिना शासन की स्वीकृति प्राप्त किये २०% अतिरिक्त वेतन केवल ४ माह तक दिया गया।

*४०---श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

क्या सरकार को ज्ञात है कि मन्त्री टेक्निकल आदमी नहीं हैं फिर भी इन्होंने यह कार्य गलत ढंग से किया है? क्या सरकार कृपया बतायेगी कि इस प्रकार से मंत्री ने विगत दो वर्षों में कितने धन का कार्य कराया और मंत्री पद के अलावा कितना पैसा अधिक लिया?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

जी हां, परिषद् के मंत्री टेक्नीकल आदमी नहीं हैं, परन्तु उन्होंने भवन तथा निर्माण-कार्य का निरीक्षण केवल ४ माह तक किया है जिसे वे नियमानुसार कर सकते थे। इस कार्य को करने हेतु उन्हें २६७ रु० १२ न० पै० का अतिरिक्त वेतन दिया गया।

बहराइच जिले में डाकखाना सिरिसिया तक मार्ग की दुरावस्था

*४१---श्री मुन्नूसिंह (जिला बहराइच)---

क्या सरकार को मालूम है कि डाकखाना सिरसिया, जिला बहराइच तक डाक का पहुंचाना हर साल बरसात में कई-कई दफ़ा बन्द हो जाता है जिसकी वजह से पुलिस चौकी, सुहेलवा फारेस्ट रेंज आफिस, खंड विकास आफिस, हेड क्वार्टर्स फ्लड डिवीजन, वहां की जनता तथा सम्पूर्ण वार्डर एरिया अलग हो जाता है? ऐसी दशा में क्या सरकार सहानुभूतिपूर्वक कोई ऐसा प्लान बनाने पर विचार करेगी जिसकी वजह से वहां की सड़क ऐसी दशा में हो जाय कि डाक हमेशा चल सके?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

जी हां, जहां तक मार्ग का सम्बन्ध है बहराइच से भिन्गा तक का मार्ग प्रान्तीय सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग के प्रबन्ध में है। इस मार्ग पर दो बड़ी नदियां व कुछ नाले पड़ते हैं जिसमें एक पर उक्त विभाग ने पुल बना दिया है तथा एक स्थान पर पुल नहीं है। बरसात को छोड़ कर शेष दिनों में अस्थाई पुल द्वारा मार्ग सुलभ रहता है। नालों तथा कटानों पर मक्ला से भिन्गा तक पुलियां बनी हुई हैं।

भिन्गा से सिरसिया तक सड़क की कुल लम्बाई १६ मील है जिसमें ८ मील सड़क जंगल विभाग के प्रबन्ध में है यह सड़क भी बरसात में काम नहीं दे सकती जब तक कि इस पर औसत ३ फुट मिट्टी की पटाई न की जाय और पक्का न किया जाय। इसके अतिरिक्त ८ मील सड़क परिषद् के प्रबन्ध में है उस पर भी पटाई की अति आवश्यकता है और जा बजा पुल पुलियों की भी आवश्यता है जिस पर कम से कम ८,००,००० रुपया लगेगा परिषद् के पास इतना धन नहीं है कि इस सड़क पर कुछ किया जा सके।

टी० बी० सैनीटोरियम, वृन्दावन का अनुदान

*४२--श्री कन्हैयालाल (जिला मथुरा)--

क्या स्वास्थ्य मन्त्री बतलाने की कृपा करेंगे कि टी० बी० सैनीटोरियम वृन्दाबन को पिछले ३ वर्षों में कितना आवर्तक व अनावर्तक अनुदान दिया गया ?

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव--

टी० बी० सेनेटोरियम, वृन्दावन को गत तीन वर्षों में निम्नलिखित आवर्तक तथा अनावर्तक अनुदान शासन द्वारा स्वीकृत किया गया :--

वर्ष	आवर्तक	अनावर्तक
	रु०	रु०
१९५९-६०	५०,०००	१५,०००
१९६०-६१	६५,२००	१७,५००
१९६१-६२	६५,२००	९७,०००

*४३--श्री कन्हैयालाल--

क्या उपर्युक्त सैनीटोयिरम में कुछ निःशुल्क चारपाइयां सरकार द्वारा भेजी गई मरीजों के लिये सुरक्षित हैं ? यदि हां, तो उपरोक्त प्रकार के मरीजों की भर्ती किस प्रकार की जाती है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव--

जी नहीं। प्रश्न नहीं उठता।

जच्चा-बच्चा केन्द्र

*४४--श्री कल्याणचन्द मोहिले--

क्या स्वास्थ्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश में बच्चा पैदा कराने के अस्पतालों की संख्या जिलेवार कितनी है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव--

प्रदेश के ४८ जिलों में उन अस्पतालों की संख्या जहां प्रसव के लिये सुविधायें उपलब्ध हैं, संलग्न तालिका में दी गई है। शेष ६ जिलों से सम्बन्धित सूचना एकत्रित की जा रही है।

(देखिये नत्थी 'ङ' आगे पृष्ठ २२५-२२६ पर)

डाक्टरों की पदोन्नति

*४५--श्री कल्पनार्थासिंह--

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि १९५१ ई० सें अब तक मेडिकल तथा हेल्थ विभाग के डाक्टरों की पदोन्नति के लिये कितने स्थान रिक्त हुये तथा कितनों की पदोन्नति विभाग द्वारा की गई तथा कितनी पदोन्नति पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा हुई।

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

अभी तक सूचना एकत्र की जा रही है।

*४६--श्री कल्पनार्थासिंह--

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि जो पदोन्नति विभाग द्वारा की गई उस में कितनी कमीशन द्वारा कन्फर्म करा ली गई है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

अभी तक सूचना एकत्र की जा रही है।

मिलक अस्पताल के कम्पाउन्डर, श्री बृजस्वरूप जौहरी के तबादले की मांग

*४७--श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि १९५७ सें सरकारी अस्पताल मिलक, जिला रामपुर में बराबर कम्पाउन्डर के पद पर कार्य करने वाले श्री बृजस्वरूप जौहरी का स्थानान्तरण न किये जाने के कारण क्या हैं जब कि उक्त कम्पाउन्डर के विरुद्ध कई शिकायती-पत्र जनता ने सिविल सर्जन रामपुर को भेजे हैं जिनमें इनके विरुद्ध गम्भीर आरोप लगाये गये हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

शासन की नीति के अनुसार साधारणतया कम्पाउन्डरों का स्थानान्तरण उस समय तक नहीं किया जाता जब तक कि उनके विरुद्ध लगाये गये गम्भीर आरोप सिद्ध न हो जायें जिन के कारण उनका स्थानान्तरण प्रशासकीय दृष्टि से आवश्यक समझा जाय। श्री बृजस्वरूप जौहरी के विरुद्ध लगाये गये आरोप इतने गंभीर न थे कि उनका स्थानान्तरण प्रशासकीय दृष्टि से किया जाता।

*४८--श्री हरीशकुमार गंगवार---

क्या सरकार उन कारणों पर प्रकाश डालने की कृपा करेगी जिनके कारण श्री बृजस्वरुप जौहरी का २४ जुलाई, १९६२ को रामपुर को किया गया तबादला ३१ जुलाई, १९६२ को रद्द कर दिया गया ? क्या सरकार जनहित को दृष्टि में रख कर उनका दबादला शीघ्र ही करने के निदेश देगी ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

श्री बृजस्वरूप जौहरी, कम्पाउन्डर और श्री जगदीशचन्द्र शर्मा, ड्रेसर में आपस में कुछ मनमुटाव पैदा हो जाने के कारण कुछ तनाव पैदा हो गया था। इस बात को ध्यान में रखते हुये सिविल सर्जन, रामपुर ने दोनों कर्मचारियों का स्थानान्तरण कर दिया था, किन्तु बाद में उसे रद्द कर दिया गया। इसको रद्द करने का कारण यह था कि दोनों पक्षों ने यह बचन दिया कि वे आपस में कभी झगड़ा न करेंगे और दोनों पक्षों के हितैषियों ने सिविल सर्जन से प्रार्थना की कि उनका स्थानान्तरण तब तक न किया जाब तक कि उस अस्पताल में किसी चिकित्साधिकारी की नियुक्ति न हो जाय। सिविल सर्जन ने यह भी सोच कर कि नये कर्मचारियों की अपेक्षा यह दोनों जनता को अधिक लाभ पहुंचा सकते हैं, उनके स्थानान्तरण को रद्द कर दिया।

सरकार चिकित्साधिकारी की नियुक्ति होते ही और उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये यदि उचित समझेगी तो श्री बृजस्वरूप जौहरी के स्थानान्तरण पर विचार करेगी।

राठ में महिला चिकित्सालय खोलने की योजना

*४९--श्री डूंगरसिंह (जिला हमीरपुर)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि राठ जिला हमीरपुर के औषधालय को Provincialise किया जा रहा है ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जी हां, राठ, जिला हमीरपुर के औषधालय के प्रान्तीयकरण का प्रश्न शासन के विचाराधीन है, परन्तु उक्त औषधालय का प्रान्तीयकरण कब तक हो जायगा यह अभी नहीं कहा जा सकता।

*५०--श्री डूंगर सिंह---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि राठ, जिला हमीरपुर में कोई महिला औषधालय खोलने की योजना है ? यदि हां, तो वह कब तक खुल जायगा और उसके खोलने के लिये अब तक क्या कार्यवाही हो चुकी है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी हां, राठ में महिला चिकित्सालय खोलने की योजना है। उक्त चिकित्सालय के लिये व्यय की स्वीकृति दी जा चुकी है और उसके भवन आदि के निर्माण हेतु भूमि भी प्राप्त कर ली गई थी, परन्तु वर्तमान संकटकालीन स्थिति के कारण भवन निर्माण की योजना स्थगित कर दी गई है और अभी यह नहीं कहा जा सकता कि भवन का निर्माण कब हो सकेगा और चिकित्सालय कब खुल सकेगा।

बस्ती चिकित्सालय का अनुदान

*५१—श्री रामलखनसिंह (जिला बस्ती)—

क्या स्वास्थ्य मंत्री बस्ती जिले के चिकित्सालय के बजट में जो धन आज से पहले दिया जाता था उसमें वहां के मरीजों की तादाद को देखते हुये २५ फीसदी धनराशि बढ़ाने का कष्ट करेंगे ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

अस्पताल के बजट में स्थायी वृद्धि करने का विचार नहीं है। परन्तु आवश्यकता के अनुसार बजट अनुदान के ५० प्रतिशत से अधिक के लगभग अतिरिक्त अनुदान बस्ती के मर्दाना और जनाना अस्पतालों को इस वित्तीय वर्ष में दिया जा चुका है।

*५२—श्री रामलखनसिंह—

क्या यह भी सही है कि जो धनराशि बस्ती चिकित्सालय के बजट में दी जाती थी सरकार उसमें से भी २० फीसदी कटौती करने जा रही है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी नहीं, यह सही नहीं है।

*५३—श्री कमलासिंह यादव (जिला गाजीपुर)—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किया गया।]

*५४—५५—श्री यादवेन्द्रदत्त—

[हटा दिये गये।]

*५६—श्री नेकराम शर्मा—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किया गया।]

*५७—५८—श्री ऊदल—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किये गये।]

*५९—६०—श्री ज्वालाप्रसाद (जिला कानपुर)—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किये गये।]

*६१—श्री लखपतराम शर्मा—

[१३ फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किया गया।]

नवीन चिकित्सालय खोलने के नियम

*६२—श्री रामसुन्दर पांडेय—

क्या स्वास्थ्य मंत्री प्रथम सत्र, १९६२ के १७ वें गुरुवार (६—१२—६२) के तारांकित प्रश्न संख्या १—३ के उत्तर के संदर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि नये राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय तथा राजकीय एलोपैथिक अस्पतालों को खोलने तथा पुराने राजकीय एलोपैथिक अस्पतालों का प्रान्तीयकरण करने के कौन-कौन आधार सरकार द्वारा निर्धारित किये जाते हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

राजकीय आयुर्वेदिक औषधालयों को खोलने के लिये निम्नलिखित आधार हैं :—

१—उस स्थान एवं उसके इर्द-गिर्द ५ मील की परिधि में चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव,

२—उस स्थान की एवं उसके इर्द गिर्द ५ मील की परिधि के ग्रामों की जन-संख्या,

३—मुफ्त भूमि, भवन एवं नकद धन की उपलब्धि ।

और जहां तक एलोपैथिक अस्पताल के खोलने का प्रश्न है वह अब स्टेज १ ब्लाक के हेड क्वार्टर पर स्थापित होने वाले प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र के अंग के रूप में खोले जाते हैं । जो स्थान ऐसे हैं जहां यद्यपि चिकित्सालय खोलने की आवश्यकता है लेकिन वह स्टेज, १ ब्लाक हेड क्वार्टर नहीं हैं, वहां स्थान की उपयोगिता, कर्मचारियों के लिये आवास सुविधा एवं धन की उपलब्धि को ध्यान में रखकर चिकित्सालय खोलने के प्रश्न पर विचार किया जाता है ।

गैर-सरकारी एलोपैथिक अस्पतालों के प्रान्तीयकरण के निम्नलिखित आधार हैं:—

१—जब कोई संस्था जिसके द्वारा वह अस्पताल संचालित हो रहा हो, शासन को यह लिखे कि वह आर्थिक एवं अन्य कारणवश उस अस्पताल को चलाने में असमर्थ है तथा इस सम्बन्ध में बिना शर्त प्रस्ताव पारित करे ।

२—वह अस्पताल जिसके प्रान्तीयकरण का प्रस्ताव है, उसका वहां रहना जन-हित की दृष्टि में आवश्यक हो ।

३—स्थानीय जनता शासन से किसी गैर सरकारी अस्पताल के प्रान्तीयकरण के लिये प्रार्थना करे ।

४—जब किसी संस्था के विरुद्ध जनता की शिकायत हो और वह संस्था वहां की अनुशासन-हीनता को रोकने में असमर्थ हो ।

सदर राजकीय अस्पताल, आजमगढ़

*६३—श्री रामसुन्दर पांडेय—

क्या स्वास्थ्य मंत्री प्रथम सत्र, १९६२ के १७ वें गुरुवार (६-१२-६२) के अतारांकित प्रश्न संख्या १ के उत्तर के संदर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि किन-किन प्रशासनिक कठिनाइयों के कारण तखमीना स्वीकृत नहीं किया जा सकता है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

अब तखमीने पर प्रशासकीय स्वीकृति १-१-६३ को दी जा चुकी है । इसमें देर लगने का मुख्य कारण यह था कि इस कार्य के लिये जो भूमि ली जाने वाली थी उसमें से कुछ कम मिल सकी जिसके फलस्वरूप नक्शे और तखमीने में संशोधन करना पड़ा ।

घोसी विकास क्षेत्र के स्टोर-कीपर के विरुद्ध शिकायत

*६४—श्री रामसुन्दर पांडेय—

क्या विकास मंत्री दिनांक १३ दिसम्बर, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १२६ के उत्तर के संदर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि जमानत से अधिक रुपया वसूल करने की कौन-कौन कार्यवाही अब तक की गयी है और कितना रुपया वसूल हो चुका है और कितना बाकी है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

अभियुक्त अभी फरार है । जमानत से अधिक धनराशि की वसूली के लिये अभी कोई कार्यवाही करना सम्भव नहीं हो सका है ।

*६५—श्री हिम्मतसिंह—

[७ फरवरी, १९६३ के लिये प्रश्न ४५ के अन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

*६६-६७—श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किये गये ।]

सहकारी बैंक फरेंदा

*६८—श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या गोरखपुर जिले के फरेंदा सहकारी बैंक में कुछ रुपयों का गबन हुआ है ? यदि हां, तो कुल कितने रुपये का ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

जी नहीं ।

*६९—श्री काशीनाथ मिश्र—

[२० फरवरी, १९६३ के लिये स्थगित किया गया ।]

चेचक

*७०—श्री शारदानन्द तथा श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जनवरी, १९६३ में राज्य में चेचक सें कुल कितनी मृत्युएं हुईं ?

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव—

उत्तर प्रदेश में १ जनवरी, १९६३ से १९ जनवरी, १९६३ तक चेचक से ६०४ मृत्यु होने की सूचना प्राप्त हुई है ।

*७१—श्री शारदानन्द तथा श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इसकी रोक-थाम के लिये सरकार द्वारा क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

चेचक की बीमारी की रोकथाम के लिये बड़ी संख्या में चेचक के प्राथमिक तथा पुनर्भेद टीके लगाये जा रहे हैं ।

समस्त अन्तरिम जिला परिषद् व म्युनिसिपल संस्थाओं को सरकार की ओर से ताकीद कर दी गई है कि वह टीका लगाने वाले और ज्यादा नियुक्त करे कि जिसमें जिला स्वास्थ्य अधिकारी आवश्यकतानुसार उचित कार्यवाही कर सकें ।

चेचक से ग्रसित रोगियों को पृथक् करके उनका उपचार करने का प्रबंध छुआछूत के अस्पतालों में जहां भी उपलब्ध है किया जा रहा है तथा रोग ग्रसित मकानों और वस्तुओं का निसक्रामी-करण किया जा रहा है ।

अतारांकित प्रश्न

मरठ जिले में ग्राम सभाओं के लिये ईंटें

१—श्री तेजसिंह (जिला मेरठ)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि मेरठ जिले में लोनी रजापुर, मुरादनगर वाया छपरौली विकास ब्लाकों को सन् १९६०-६१ तथा १९६१-६२ में सार्वजनिक निर्माण कार्यों में कोयला मिला है उसके बदले में कितनी-कितनी ईंट किस-किस ग्राम सभा को दी गई है ? क्या यह सही है कि भट्ठे वालों ने जितना कोयला लिया उसके बदले में कम ईंट दी और कंट्रोल से कीमत भी अधिक लगायी ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

वांछित सूचना संलग्न तालिका में दी हुई है ।

(देखिये नत्थी 'च' आगे पृष्ठ २२७–२२८ पर)

नाविक श्रमिक सहकारी समिति, महिपुरवा

२—श्री हलीमुद्दीन (जिला मुरादाबाद), श्री खेमचन्द (जिला आगरा) तथा श्री श्यामलाल (जिला बस्ती)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला जल नाविक श्रमिक सहकारी समिति, महिपुरवा, जिला बहराइच जो पिछले दो साल से वहां काम कर रही है, को अभी तक कोई अनुदान दिया है ? यदि हां, तो कितना और कब, और नहीं, तो क्यों ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

जी नहीं । समिति ने अनुदान के लिये अभी तक कोई मांग नहीं की है जिस पर विचार किया जाता ।

३—श्री हलीमुद्दीन, श्री खेमचन्द तथा श्री श्यामलाल—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उपरोक्त समिति को आज तक मछलियों के पालने तथा उनका शिकार करने के लिये कोई जलाशय नहीं दिये गये ? क्या सरकार इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही करेगी ?

श्री चतुर्भुज शर्मा—

अभी तक कोई जलाशय समिति को नहीं दिया गया है लेकिन समिति ने गांव समाज से सरा सुन्दरी ताल लेने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव किया था जिसे स्थानीय विभागीय अधिकारी से अपनी सिफारिश के साथ जिलाधीश, बहराइच को भेज दिया था और जिलाधीश ने सम्बन्धित कागजात परगनाधीश नानपारा को उचित कार्यवाही हेतु भेज दिये थे । अभी इस सम्बन्ध में परगनाधीश, नानपारा या जिलाधीश, बहराइच से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है ।

बाराबंकी जिले को हरिजन छात्रवास के लिये अनुदान

४—श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

क्या यह सही है कि हरिजन छात्रावास के लिये विगत दो वर्षों से जो धन सरकार से जिला बाराबंकी को मिला है उसके संबंध में प्रार्थना-पत्र देने के लिये कोई पब्लिसिटी नहीं की गई ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

गत वर्ष (१९६१–६२) में हरिजन छात्रावास के लिये जिला बाराबंकी को कोई धन स्वीकृत नहीं हुआ। इस वित्तीय वर्ष में एक छात्रावास के लिये १०,००० रु० का अनुदान स्वीकृत हुआ जिसे हरिजन सहायक समिति ने अपनी दिनांक २–६–६२ की बैठक में दरिया बाद विकास क्षेत्र को देना निश्चय किया । अतः पूरे जिले में पब्लिसिटी का प्रश्न नहीं उठा ।

५—श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

क्या यह सही है कि यह धन कोटवाधाम, तहसील रामसनेहीघाट, जिला बाराबंकी को दे दिया गया है ? यदि हां, तो ऐसा क्यों ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी हां, अध्यक्ष, अन्तरिम जिला परिषद की स्वीकृति देने के समय तक किसी और विद्यालय का प्रार्थनापत्र प्राप्त नहीं हुआ था ।

६—श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि यह धन किसके द्वारा कितना किसे दिया गया ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

इस धन में से ३,००० रु० की पहली किश्त श्री शेष नारायण शुक्ल, प्रबन्धक, कोटवा-धाम, जूनियर हाई स्कूल को अध्यक्ष, अन्तरिम जिला परिषद् द्वारा स्वीकृत की गई है।

मुरादाबाद जिले में हरिजन कल्याण पर व्यय

७—श्री शराफत हुसैन रिजवी (जिला मुरादाबाद)—

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि सन् १९५७ से १९६१ तक हरिजन सुधार के कार्यों पर जिला मुरादाबाद में कुल कितना रुपया खर्च किया गया और किस-किस कार्य के लिये ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

सूचना †संलग्न है ?

८—श्री शराफत हुसैन रिजवी—

क्या समाज कल्याण मंत्री कृपया यह बतायेंगी कि अमरोहा ब्लाक या जोया ब्लाक, मुरादाबाद जिले के हरिजनों के सुधार के लिए गत पांच वर्षों में इन ब्लाकों के द्वारा कितना रुपया खर्च किया गया और सुधार कार्य किन-किन गांवों में किये गये ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

अमरोहा ब्लाक में ब्लाक द्वारा हरिजनों के सुधार कार्य के लिये अलग से कोई सुविधा नहीं दी गई है। जोया ब्लाक में किये गये सुधार कार्यों की सूची† संलग्न है।

श्री शराफत हुसैन रिजवी—

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि गत पांच वर्षों में मुरादाबाद जिले में कहां-कहां हरिजन बस्तियां बसाई गईं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जिला मुरादाबाद में गत ५ वर्षों में अलग कोई हरिजन बस्ती नहीं बनाई गई। जिले में गृह निर्माण हेतु दिये गये धन से १२ स्थानों पर हरिजन बस्तियों का निर्माण किया गया, जिसकी सूची† संलग्न है।

गाजीपुर जिले में जच्चा-बच्चा केन्द्र

१०—श्री शिलमिटराम (जिला गाजीपुर)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला गाजीपुर में बिरनो मरदह तथा जखनियां ब्लाकों के अन्तर्गत किन-किन स्थानों पर जच्चा-बच्चा केंद्र स्थापित किये गये हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

गाजीपुर में बिरनो, मरदह तथा जखनिया ब्लाकों में जंगीपुर, मरदह तथा जलालाबाद स्थानों पर क्रमशः जच्चा-बच्चा केंद्र खोले गये हैं।

११—श्री शिलमिटराम—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला गाजीपुर में प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं के काल में किन-किन स्थानों पर जच्चा-बच्चा केंद्र खोले गये हैं तथा तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किन-किन स्थानों पर ऐसे केंद्र खोलने की योजना बनाई गई है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'छ' आगे पृष्ठ २२९ पर)

† छापी नहीं गई।

सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'छ' आगे पृष्ठ २२९ पर)

हमीरपुर जिले में परिवार नियोजन योजना

१२—श्री मदनपालसिंह—

क्या स्वास्थ्य मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि महोबा तथा चरखारी तहसील जिला हमीरपुर में परिवार नियोजन योजना लागू की गई है या नहीं ? यदि हां, तो १९६२ के सितम्बर मास तक परिवार नियोजन योजना से कितने स्त्री, पुरुष लाभ पा सके हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

महोबा तहसील में अभी तक परिवार नियोजन योजना नहीं लागू हुई है, तहसील चरखारी में यह योजना लागू की गई है और मास सितम्बर, १९६२ तक ११२ व्यक्ति इस योजना के अन्तर्गत लाभ उठा चुके हैं ।

१३—श्री मदनपालसिंह—

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह भी बताने की कृपा करेंगे कि जिला हमीरपुर में परिवार नियोजन विभाग में कितनी महिला कर्मचारी हैं और उनकी सेवा कार्य की रूप-रेखा क्या है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जिला हमीरपुर में परिवार नियोजन योजना में कोई महिला कर्मचारी नहीं है।

डी० ए० वी० कालेज, वाराणसी में परिगणित छात्रों से फीस वसूली

१४—श्री हरिगैनराम (जिला वाराणसी)—

क्या समाज कल्याण मंत्री को ज्ञात है कि वाराणसी जिले में दयानन्द महाविद्यालय (डी०ए०वी० डिग्री कालेज) में सभी परिगणित छात्रों से जुलाई, अगस्त, सितम्बर सन् १९६२ में शिक्षा शुल्क जी० ओ० नं० एच० डी० ३५१२-ए/९—६२—३०, दिनांक १ जून, १९६२ के होते हुये भी वसूल किया गया है ? यदि हां, तो सरकार ने इस शिक्षा संस्था के विरुद्ध कौन सी कार्यवाही की ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी हां। जांच करने पर पता चला है कि उक्त आदेशों को प्रधानाचार्य के न जानने के कारण फीस वसूल की गई थी। ऐसी परिस्थिति में संस्था के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई।

बांदा जिले में हरिजन छात्रों को छात्रवृत्ति

१५—श्री मतोलासिंह—

क्या समाज कल्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि सन् १९५९ ई० से १९६२ ई० तक बांदा जिले में प्राइमरी पाठशाला व जूनियर हाई स्कूलों में पढ़ने वाले हरिजन छात्रों के लिये प्रति वर्ष कितना धन स्वीकृत किया गया और कितने छात्रों को छात्र-वृत्ति दी गई ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

सूचना निम्न प्रकार है।

वर्ष	स्वीकृत धन	छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या
	रु०	
१९५९–६०	६,९०६	२०६
१९६०–६१	६,९०६	२०७
१९६१–६२	६,९०६	२०७

१६—श्री मतोलासिंह—

क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि उपरोक्त वर्षों में प्रति वर्ष छात्र-वृत्ति का कितना धन ऐसा था जो छात्रों को किसी भी कारण न देने से बच गया ? तो इसके क्या कारण थे और उस धन का उपयोग कहां किया गया ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

१९५९-६० में कक्षा ८ में छात्रवृत्ति रिक्त होने के कारण ९६ रुपये तथा १९६०-६१ में कुछ छात्रों के देर से प्रविष्ट होने के कारण ७ रु० ५७ न०पै० बचे। यह बचा हुआ धन कालातीत (Lapse) हो गया । अतः इसके कहीं और उपयोग का प्रश्न नहीं उठा।

सुल्तानपुर खैरा हरिजन कालोनी के लिये अनुदान

१७—श्री रतीपाल (जिला रायबरेली)—

क्या सरकार को ज्ञात है कि रायबरेली जिला के सतांव विकास क्षेत्र में किसी हरिजन कालोनी के लिये रुपया Grant हुआ है ? यदि हां, तो सरकार ने कितना रुपया अनुदान के रूप में दिया था और रुपया दिये हुये कितना समय हुआ ? क्या उपर्युक्त कालोनी बन कर पूरी तैयार हो गई है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

जी हां, ७,५०० रुपये का अनुदान सतांव विकास क्षेत्र में सुल्तानपुर खेरा हरिजन कालोनी के लिये स्वीकृत हुआ है। ३,७५० रुपया अग्रिम धन के रूप में दिनांक २३ मार्च, १९६१ को दिया गया था।

प्रिवेन्शन आफ फूड अडल्ट्रेशन ऐक्ट के अन्तर्गत सजाएं

१८—श्री श्यामलाल—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि अप्रैल, १९६२ से सितम्बर, १९६२ तक कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा, लखनऊ में दूध, घी और कड़ुवा तेल में मिलावट करने के अपराध में कितने आदमियों को सजा हुई है और कुल कितना धन जुर्माने के रूप में वसूल हो चुका है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

इस अवधि में पूछे गये जिलों में दूध, घी और कड़ुवा तेल में मिलावट करने के अपराध में प्रिवेंशन आफ फूड अडलट्रेशन ऐक्ट के अन्तर्गत ४३६ आदमियों को सजा (conviction) हुई और कुल ८३,६३१ रु० जुर्माने के रूप में वसूल हो चुके हैं।

हरिजन छात्रावास, जौनपुर

१९—श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

क्या सरकार बताने की कृपा करेंगी कि जौनपुर नगर में हरिजन छात्रावास निजी है या किराये पर है ? यदि किराये पर है, तो उसमें कितने छात्र रहते हैं और इसका मासिक किराया कितना है ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव—

किराये पर है। इसमें २८ छात्र रहते हैं और इसका मासिक किराया १०० रु० है।

२०—श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

उक्त छात्रावास को कितना अनुदान १९५७-६१ तक दिया गया और किन-किन कार्य के लिये ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

१९५७-५८ के वित्तीय वर्ष से लेकर १९६०-६१ के वित्तीय वर्ष तक प्रतिवर्ष ५८८ रु० यानी कुल २,३५२ रु० का अनुदान मकान किराया, रसोइये का वेतन तथा आकस्मिक खर्चे के लिये दिया गया ।

२१---श्री केशरीप्रसाद पांडेय---

क्या उक्त छात्रावास की कोई प्रबन्ध समिति है ? यदि हां, तो उसके पदाधिकारी और सदस्य कौन हैं ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जिला हरिजन सहायक समिति द्वारा इसका संचालन होता है । पदाधिकारियों और सदस्यों की सूची संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'ज' आगे पृष्ठ २३० पर)

कट्टैयाभारी कृषि फार्म

२२---श्री सुखदेवप्रसाद (जिला गोंडा)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गोंडा जिले में कितने सहकारी कृषि फार्म कहां-कहां चल रहे हैं ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

गोंडा जिले में १५ सहकारी कृषि समितियां हैं, उनके नाम एवं ग्राम की सूची संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'झ' आगे पृष्ठ २३१ पर)

२३---श्री सुखदेवप्रसाद---

क्या कट्टैयाभारी जिला गोंडा का भी फार्म उन्हीं में से है ? यदि हां, तो अब तक उस फार्म को क्या क्या और कितनी-कितनी आवश्यक सुविधायें दी गई और क्या वह २०८ एकड़ का फार्म होने से अपर्याप्त न होने से सदैव घाटा रहा ? तो सरकार इसके लिये क्या-क्या सुविधायें कब तक देने जा रही है ?

श्री चतुर्भुज शर्मा---

जी हां । कट्टैयाभारी समिति उपरोक्त १५ समितियों में से एक है । अब तक इस समिति को कोई भी विभागीय अनुदान व ऋण नहीं दिया गया । समिति के पिछले ३ वर्षों के लाभ तथा हानि के आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि समिति को हानि नहीं हुई है । इस समिति को विभागीय अनुदान तथा सहायता देने के संबंध में न तो कोई सिफारिश प्राप्त हुई है और न ऐसा कोई प्रश्न ही विचाराधीन है ।

मगरिया नाले पर पुल की आवश्यकता

२४---श्री मदनपालसिंह---

क्या विकास मंत्री बताने का कष्ट करेंगे कि जिला हमीरपुर तहसील, महोबा, विकास क्षेत्र कबरई के "मगरिया" नाले पर पुल का निर्माण करने का कोई विचार है ? यदि हां, तो कब तक और नहीं, तो क्यों ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

मगरिया नाले पर पुल बनवाने में लगभग ५० हजार रु० का खर्च है । अन्तरिम जिला परिषद् के पास इतना धन नहीं है कि वह इतने बड़े प्रोजेक्ट को ले सके ।

उतरौरा विकास क्षेत्र से दृश्य-दर्शन आयोजन

२५—श्री सूरजलाल गुप्त (जिला गोंडा)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि माह सितम्बर, १९६२ के अन्त में उतरौला विकास क्षेत्र, जिला गोंडा की ओर से कितने पुरुष व स्त्रियां दृश्य-दर्शन के लिये लखनऊ आदि स्थानों पर ले जाये गये ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

माह सितम्बर, ६२ के अन्त में विकास क्षेत्र उतरौला, जिला गोंडा की ओर से कुल २४ पुरुष एवं १२ महिलाओं को दृश्य-दर्शन हेतु लखनऊ भेजा गया ।

२६—श्री सूरजलाल गुप्त—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि किस अधिकारी के साथ यह लोग गये थे और क्या जिन स्थानों के दृश्य-दर्शन के लिए निश्चय था, छुट्टी होने के कारण वे दिखाये न जा सके और सभी लोग वापस आ गये ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

पुरुष वर्ग श्री रमेश प्रसाद नायक, सहायक विकास अधिकारी (रूरल इंजीनियरिंग) एवं महिला वर्ग श्रीमती प्रेम कुमारी मिश्रा, सहायक विकास अधिकारी (महिला) के नेतृत्व में भेजे गये थे। प्रसार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बक्शी-का तालाब, साक्षरता निकेतन, चक गंजरिया एवं रहमान खेड़ा के दृश्य-दर्शन की योजना बनाई गई थी। छुट्टी होने के कारण लखनऊ में, बस न उपलब्ध होने से सभी स्थानों का दृश्य-दर्शन न कराया जा सका। लखनऊ में केवल बक्शी का तालाब एवं साक्षरता निकेतन का ही दृश्य-दर्शन सम्पन्न हो सका ।

२७—श्री सूरजलाल गुप्त—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उपरोक्त दृश्य-दर्शन यात्रा में सरकार का कितना व्यय हुआ ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

इस दृश्य-दर्शन में सरकार का मुद्रांक ३६८.२८ नए पैसे (तीन सौ अड़सठ रुपया अट्ठाइस नया पैसा) व्यय हुआ ।

नियोजन विभाग का अनुदान

२८—श्री शिवेन्द्रप्रताप (जिला सीतापुर)—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उत्तर प्रदेश के नियोजन विभाग में वित्तीय वर्ष १९६१-६२ में कितना रुपया lapes या transfer हुआ जिसे वह खर्च नहीं कर पाये ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

वित्तीय वर्ष १९६१-६२ में नियोजन विभाग में १५,९९,६०० रु० का अनुदान खर्च नहीं हो सका जिसे surrender कर दिया गया था तथा ४,२८,२९० रु० lapse हुआ ।

इटावा जिले में निर्माण-कार्य

२९—श्री बद्रीप्रसाद पाण्डीवाल (जिला इटावा)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि इटावे जिले के अन्तर्गत महेवा से अहेरीपुर-चिमकुनी-अछल्दा तक सड़क बनाने की योजना डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग कमेटी ने बनायी थी ? यदि हां, तो इस पर श्रमदान अथवा और साधनों द्वारा कितना काम हो चुका है ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

जी हां। इस सड़क के निर्माण पर अब तक रु० ४८,०१०.०७ न० पै० व्यय हुए। इसमें से रु० ९४३३.४७ न० पै० जिला परिषद् के कोष से तथा रु० ३८,५७६.६० न० पै० जिला नियोजन समिति से अनुदान के रूप में प्राप्त हुए इसके अतिरिक्त १५,००० रु० का श्रमदान भी हुआ।

३०---श्री बद्रीप्रसाद पालीवाल---

क्या यह सही है कि इस सड़क पर चिमकुनी ग्राम में सेंगर नदी पर एक बड़ा पुल बनाने के लिये स्थानीय जनता तथा अहेरीपुर निवासी एक बड़ी राशि चन्दा में देने को तैयार हैं ? यदि हां, तो क्या सरकार स्थानीय अधिकारियों को सुझाव देने की कृपा करेगी कि सहायता देकर इस पुल निर्माण की योजना को आगे बढ़ायें ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

अहेरीपुर के आस पास की जनता उक्त पुल के लिये उत्सुक अवश्य है परन्तु पुल का व्यय इतना अधिक है कि स्थानीय जनता इतना धन जुटाने में असमर्थ है चूंकि इस पुल का मूल्य लगभग तीन लाख रुपया होगा। महेबा व अछल्दा विकास खंड से अधिक से अधिक १५ या २० हजार रुपया एकत्रित होने की आशा है। श्रमदान द्वारा कुछ ही कार्य किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में इस कार्य को हाथ में लेना इस समय सम्भव नहीं है।

औरैया विकास खण्ड में क्वार्टरों पर व्यय

३१---श्री सुखलाल (जिला इटावा)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला इटावा, तहसील औरैया, विकास खंड औरैया में कितने क्वार्टर बनाये गये और उसमें कितना धन व्यय हुआ ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

इस विकास खंड में सत्रह (१७) क्वार्टर बनाये गये हैं, जिन पर रु० ५५,५५८.९२ न० पै० व्यय हुए हैं।

३२---श्री सुखलाल---

क्या सरकार को ज्ञात है कि जितने क्वार्टर बनाये गये सभी क्वार्टरों की छत से वर्षा में पानी टपकता है और कोई कर्मचारी बरसात के दिनों में नहीं रह पाते तथा छतों के गिरने का भय है ? क्या सरकार इन क्वार्टरों के ठीक न बनने की जांच करायेगी ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

इन सत्रह क्वार्टरों में से केवल चार क्वार्टरों की छतों से पानी टपकता है। छतों के गिरने की कोई आशंका नहीं है। सम्बन्धित सहायक अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग से आवश्यक कार्यवाही करने के लिये कह दिया गया है।

३३-३५---श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

[निरस्त किये गये।]

रामपुर मथुरा ब्लाक का भवन

३६---श्री शिवेन्द्रप्रताप---

क्या विकास मन्त्री कृपया बतायेंगे कि रामपुर मथुरा ब्लाक, जिला सीतापुर के भवन में पीली ईंट के लगाने के बारे में प्रश्नकर्त्ता के पत्र पर माननीय मुख्य मंत्री ने जो अपने पत्र संख्या १२१ सी/७८ सी० एच० पी०, जून २, १९६२ में यह आश्वासन दिया था कि मामले की शीघ्र जांच की जायगी, उसकी जांच अब तक क्यों नहीं करायी गयी ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

जांच हो गई। पीली ईंटों का अथवा इस प्रकार की निम्न कोटि की किसी सामग्री का प्रयोग उक्त ब्लाक के भवन निर्माण में नहीं किया गया है।

रायबरेली जिले में कल्याण समितियां

३७--श्री इतीपास--

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि रायबरेली जिले के किन-किन विकास क्षेत्रों के अन्तर्गत कल्याण समितियां बनी हैं ? जिन विकास क्षेत्रों में अभी तक नहीं बनीं, उसके क्या कारण हैं ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

सूचना एकत्र की जा रही है।

शाहजहांपुर जिले में बी० डी० ओ० एवं ए० डी० ओ०

३८--श्री राममूर्ति 'अंचल'--

क्या विकास मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि शाहजहांपुर जिले के विकास क्षेत्रों में कितने ऐसे बी० डी० ओ० और ए० डी० ओ० हैं जो तीन साल से एक स्थान पर काम कर रहे हैं ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

जिला शाहजहांपुर के विकास क्षेत्रों में ४ क्षेत्र विकास अधिकारी तथा ४ सहायक विकास अधिकारी ऐसे हैं जो ३ साल से अधिक समय से एक स्थान पर कार्य कर रहे हैं।

३९--श्री राममूर्ति 'अंचल'--

क्या सरकार उन बी० डी० ओ० और ए० डी० ओ० का, जिन्हें तीन साल से ऊपर हो चुका है, स्थानान्तरण करने की कृपा करेगी ? यदि हां, तो कब ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

क्षेत्र विकास अधिकारी को साधारणतः एक विकास क्षेत्र में पांच वर्ष तक नियुक्त रक्खा जा सकता है। अतः तीन साल के बाद उनके स्थानान्तरण का प्रश्न नहीं उठता है। सहायक विकास अधिकारी राजपत्रित अधिकारी नहीं हैं इसलिये तीन वर्ष के उपरान्त स्थानान्तरण का नियम उन पर लागू नहीं होता है। अतः तीन वर्ष के बाद उनके स्थानान्तरण का प्रश्न भी नहीं उठता।

नेवादागोपालपुर के प्राइमरी स्कूल का भवन

४०--श्री रामसुन्दर पांडेय--

क्या विकास मन्त्री दिनांक १८ अक्तूबर, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १७० के उत्तर के सन्दर्भ में बताने की कृपा करेंगे कि गांव-समाज का भी सैकड़ों रुपया भूतपूर्व प्रधान के पास है और नये प्रधान को अब तक नहीं दिये जाने का कारण क्या है ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

जी हां। गांव समाज नेवादागोपालपुर के भूतपूर्व प्रधान के पास गांव समाज का कुछ रुपया अवशेष है। अवशेष धन नये प्रधान को न दिये जाने का कारण भूतपूर्व प्रधान की अनियमितता तथा त्रुटि है। इस धनराशि को वसूल करने के लिये भूतपूर्व प्रधान के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

मदारपुर नलकूप के लिये ऋण

४१---श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

क्या यह सही है कि जिला बाराबंकी में तहसील रामसनेही घाट में मदारपुर ग्राम में जो नलकूप लगा है उसे बनाने के लिए ब्लाक दरियाबाद ब्लाक रामनगर से तथा केन यूनियन तीनों जगहों से लोन लिया गया है ? यदि हां, तो यह किसे और कितना-कितना दिया गया ?

श्रीमती सुचेता कृपलानी---

जी नहीं, केवल ब्लाक रामनगर से ३,४०० रुपये का ऋण श्री भगवानदीन पुत्र संगम लाल, ग्राम मदारपुर को नलकूप निर्माण के लिये दिया गया है ।

रामपुर मथुरा ब्लाक के लिये भट्ठा

४२---श्री शिवेन्द्रप्रताप---

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि जिला सीतापुर में रामपुर मथुरा ब्लाक के लिए किस ईट के भट्ठे को पास किया गया है ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

रामपुर मथुरा ब्लाक के लिये श्री हाजी अब्दुल्ला का ईंट का भट्ठा पास किया गया है ।

४३---श्री शिवेन्द्रप्रताप---

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि रामपुर-मथुरा ब्लाक के हेडक्वार्टर से उस ईंट के भट्ठे की दूरी कितनी मील है ?

श्रीमती सुचेता कृपालानी---

रामपुर मथुरा ब्लाक के हेडक्वार्टर से उपरोक्त ईट के भट्ठे की दूरी १९ मील है ।

मड़ियाहूं तहसील में चिकित्सा कार्य

४४---श्री रमेशचन्द्र शर्मा (जिला जौनपुर)---

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला जौनपुर की मड़ियाहूं तहसील में द्वितीय पंचवर्षीय योजना में चिकित्सा सम्बन्धी क्या-क्या कार्य होने थे और उनमें से उस योजना काल तक कौन पूरे हुये, कौन-कौन अधूरे हुये और कौन-कौन-बिलकुल नहीं हुए ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत जिला जौनपुर की मड़ियाहूं तहसील के रामपुर तथा मड़ियाहूं विकास खंडों में द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र स्थापित किये जाने थे । ये प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र सभी योजना काल में स्थापित कर दिय गये हैं और कार्य कर रहे हैं ।

इसके अतिरिक्त मड़ियाहूं में एक महिला ऐलोपैथिक अस्पताल की स्थापना का प्रश्न उसी काल से शासन के विचाराधीन है । प्रदेश के अन्य स्थानों की चिकित्सा सम्बन्धी अधिक आवश्यकता को ध्यान से रखते हुये तथा महिला डाक्टरों व कम्पाउन्डरों की कमी के कारण अभी तक शासकीय स्वीकृति इस कार्य के लिये नहीं दी जा सकी है ।

दलेलनगर चिकित्सालय के डाक्टर का क्वार्टर

४५---श्री हरीशकुमार गंगवार---

क्या सरकार को ज्ञात है कि बरेली जिले की नबाबगंज तहसील के अन्तर्गत राजकीय चिकित्सालय दलेलनगर में १९५९ में चिकित्सालय के आरम्भ होने से लेकर ३१ मार्च, १९६२ तक कोई डाक्टर नहीं रहा ? यदि हां, तो इस बीच में चिकित्सालय का कार्य किसके द्वारा सम्पन्न किया गया ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जी हां। इस बीच राजकीय चिकित्सालय बलेलनगर का कार्य कम्पाउन्डर द्वारा चलाया गया।

४६---श्री हरीशकुमार गंगवार---

क्या सरकार को ज्ञात है कि उपरोक्त अवधि में उस समय के बरेली के जिला स्वास्थ्य अधिकारी ने उपरोक्त दलेलनगर चिकित्सालय के डाक्टर के निवास स्थान के किराये के रूप में काफी समय तक १५ रु० महीना सरकार से वसूल किया ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव---

जी हां। डाक्टर की नियुक्ति होने की सम्भावना के कारण ही उसके निवास स्थान का किराया केवल २५-२-१९५९ से ३१-३-१९६० तक ही लिया गया और उसका भुगतान मकान मालिक को किया गया। चूंकि उस क्षेत्र में गृह समस्या जटिल है अतः ऐसा करना उचित समझा गया।

प्रश्नोत्तर में विलम्ब पर आपत्ति

श्री कल्पनाथसिंह (जिला गोरखपुर)---

उपाध्यक्ष जी, एक सवाल की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। प्रश्न संख्या ४५-४६ आज के एजेंडे पर देखें। इसमें स्थगन की तिथि लिखी हुई है १३-१२-६२। आज उत्तर मिला है कि अभी भी सूचना एकत्र की जा रही है। इसके पहले भी एक बार यह सवाल स्थगित हो चुका है। आप कृपा करके मंत्री जी से पूछ लें, वह मौजूद हैं।

श्री उपाध्यक्ष---

आप की बात सही है। बहुत टाइम हो गया है। लेकिन अब तो इस वक्त में आया नहीं। यह आयेगा।

श्री कल्पनाथसिंह---

क्या दिक्कत हो रही है जरा मंत्री जी बता दें जिस पर कहा जाता है कि अभी भी सूचना एकत्र की जा रही है।

उत्तर प्रदेश बिक्री-कर नियम, १९४८ में प्रख्यापित संशोधन†

श्रम उप मंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)---

उपाध्यक्ष जी, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश बिक्री-कर नियम, १९४८ में, वित्त विभाग की विज्ञप्ति संख्या एस-टी-६३२०/१०---९६०(६)-५५, दिनांक १८ दिसम्बर, १९६२ के अधीन प्रख्यापित संशोधनों को, उत्तर प्रदेश बिक्री-कर ऐक्ट, १९४८ की धारा २४ की उपधारा (५) के अनुसार सदन की मेज पर रखता हूं।

कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं

श्री उपाध्यक्ष---

मेरे पास कार्य-स्थगन प्रस्ताव की दो सूचनाएं आयी हैं। उनमें पहला प्रस्ताव श्री चन्द्रबली सिंह जी ने दिया है जो बस्ती जिले के इटवा थाने के भटकवा कटियाडीह ग्राम में किसी डकैती के सम्बन्ध में है। मैंने इसको इस लिए अस्वीकार किया है क्योंकि यह स्थानीय मामला है और दूसरी बात यह है कि काफी टाइम हो चुका है।

---

†छापे नहीं गये।

श्री चन्द्रबलीसिंह (जिला देवरिया)---

अभी-अभी सूचना कल मिली है। पुलिस वालों ने डाका डाला है। दो आदमियों को जान से मारे हैं। इटवा थाने के दरोगा और पुलिस ने डाकुओं के साथ जाकर मारा और आप इसको स्थानीय मामला बताते हैं ?

श्री उपाध्यक्ष---

दो कार्य-स्थगन प्रस्ताव हैं। दोनों को मैंने अस्वीकार किया है। उसके कारण सब लिखे हुए रखे हैं। जो माननीय सदस्य देखना चाहें वह देख सकते हैं।

श्री चन्द्रबलीसिंह---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक बार हमको मौका दीजिये, नहीं तो इसको पढ़ कर बता दीजिये। यह मामूली मामला नहीं है। पुलिस के दरोगा द्वारा डाका डाला जाय और जनता को लूटा जाय, यह बरदाश्त के बाहर की बात है।

श्री उपाध्यक्ष---

अगर बरदाश्त न हो तो दूसरा उपाय कीजिये। यहां पर उपाय नहीं है।

इतनी सूचनायें आती हैं कि अगर सबको पढ़ कर सुनाया जाय और बहस की जाय तो बहुत काफी समय लगेगा, इसलिये सदन का समय बचाने के लिये यह लाजमी है कि, अगर ज्यादा सूचनायें आती हैं तो मैं उनको इसी तरह से तय करूं।

श्री चन्द्रबलीसिंह---

विधान सभा जनता की भावनाओं का आइना है। उस पर धूल पड़ रही है।

नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान आकर्षणार्थ सूचनाएं

श्री उपाध्यक्ष---

मेरे पास नियम ५२ की सात सूचनायें आयी हैं। उन सातों को मैंने अस्वीकार कर दिया है। उनके कारण हर एक सूचना पर अलग-अलग लिखे हुये हैं। जो माननीय सदस्य चाहें देख सकते हैं।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)---

एक निवेदन करना है, अगर आपकी आज्ञा हो तो कहूं। (व्यवधान) श्रीमन्, निवेदन यह है कि आप तो जानते हैं कि आज प्रदेश के १७ जिलों में चेचक कितने जोरों से फैली हुई है। डेढ़ हजार आदमी उसमें मर गये और आपके इस शहर में भी और दारुलशफा में भी लोग इससे बीमार हैं।

श्री उपाध्यक्ष---

कल उस पर अल्पसूचित तारांकित प्रश्न आ रहा है। तो कल उसमें सब बातें आ जायेंगी।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय---

तो श्रीमन्, इसको अल्पसूचित प्रश्न के रूप में स्वीकार कर रहे हैं ?

श्री उपाध्यक्ष---

जी नहीं। पहले से स्वीकार है।

श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव (*क्रम गत)

†श्री बैजनाथसिंह वैद्य (जिला सुल्तानपुर)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कल महामान्य राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद देते हुये निवेदन कर रहा था कि माननीय राज्यपाल जी ने अपनी इस छोटी सी पुस्तिका में सरकार

---

*५ फरवरी, १९६३ की कार्यवाही से।

†वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

के एक वर्ष के कार्यों को संक्षेप में रख दिया है । कुछ भाइयों को शिकायत थी कि सरकार की सारी बातें इसमें नहीं आयीं । श्रीमन्, मुख्य बात इसमें यह थी कि इस सरकार के सामने और हमारे आपके सामने एक दोहरी जिम्मेदारी आ गई है । पहली जिम्मेदारी तो यह थी जिस पर कि हम लोग चल रहे थे, अपने प्रदेश को बनाने की कोशिश में लगे हुये थे, अपने प्रदेश की गरीबी को दूर करने की कोशिश में लगे हुये थे और प्रदेश की आर्थिक स्थिति को ऊंचा उठाने में लगे हुये थे । लेकिन एकाएक चीनियों ने धोखेबाजी से देश पर हमला किया जिससे देश की सुरक्षा का भी प्रश्न उत्पन्न हो गया और वह प्रश्न अब प्रथम स्थान ग्रहण कर चुका है । बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस स्थिति में भी ऐसा लगता है कि हमारे भाई वही पुरानी राजनीति बेसुरी, १२ बजे रात्रि की भैरवी अलापते हैं जिसका कि कोई अवसर नहीं है । वह इस बात को नहीं महसूस करते हैं कि इस वक्त हमें बहुत संजीदगी के साथ बहुत जिम्मेदारी के साथ और बहुत सतर्कता के साथ चलना है और अपने कार्यों को देखना है क्योंकि अगर जरा सा भी हम चूक जाते हैं तो बहुत बड़ा नुकसान हमको पहुंच सकता है । हमारी आजादी जिसको प्राप्त करने के लिए हजारों नवजवानों ने अपनी जानें दीं, लाखों परिवारों ने अपने को बरबाद कर दिया, उसकी रक्षा के लिए अगर हम जागरूक नहीं रहते और तैयार नहीं रहते, हम यह नहीं समझते कि उसकी बहुत बड़ी कीमत हमको चुकानी पड़ेगी तो हम इस देश के साथ और प्रदेश के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात करते हैं । यह बात ठीक नहीं है कि वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी वह अब भी है । आज यहां जितनी आवाजें निकलती हैं उनसे मालूम होता है कि यहां आकर बैठे हैं तो कोई मतलब नहीं रह गया है कि प्रदेश की सुरक्षा के सवाल से । जैसी बातें पहले होती थीं बिलकुल वैसी ही अब भी होती हैं । कोई फर्क नहीं हुआ है कोई कार्यक्रम में बदलाव नहीं हुआ है । मैं समझता हूं थोड़ा सा फर्क होना चाहिए । थोड़ा सा स्थिति को आपको महसूस करना चाहिए । एक महाशय ने तो कह दिया कि संकटकालीन स्थिति को तो खत्म ही कर देना चाहिए । उनकी समझ से सारी बाधायें, सारी तकलीफें, सारी परेशानियां जो हमारे देश और, प्रदेश पर थीं, वह खत्म हो गईं । ऐसा लगता है कि जैसे सोते रहते हैं । जाग पड़ते हैं और जो कुछ मुंह में आया कह देते हैं । न सोचते हैं, न समझते हैं न कुछ ध्यान देते हैं । मैं बड़े अदब के साथ उन साथियों से यह गुजारिश करना चाहता हूं कि देश की रक्षा होगी, प्रदेश की रक्षा होगी, हमारी आपकी रक्षा होगी, तो हमारी आपकी लड़ाई भी शोभा देगी, वैधानिक तरीके से जो हम आप यहां लड़ते हैं, वह भी तभी शोभा देगा । लेकिन इस तरीके से भ्रमात्मक और उल्टी-पुल्टी बातें करना जिससे जनता पर उल्टा असर पड़े, यह हमारे और आपके हित में नहीं है ।

कल हमारे एक जनसंघ के भाई ने कहा था कि वह तो बिच्छू के डंक की तरह से किसको छूते हैं उसको डंक मार देते हैं । मैं तो उसको समझ नहीं पाया कि यह उन्होंने किसके लिये कहा, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जितने डंक उधर के भाई चला रहे हैं वह उनको दरअसल इस समय नहीं चलाना चाहिये । इस समय अपने डंकों को काबू में रखना चाहिये । उनको फिर हमारे साथ इस्तेमाल कीजियेगा । इस समय हमारे देश पर आपत्ति आई हुई है । उसकी रक्षा करने की हमारे ऊपर जिम्मेदारी है । यह कोई साधारण बात नहीं है । आप इसको इस तरह से सोचें कि इस समय हमको और आपको देश की जिम्मेदारी को निभाना है । इसको कोई साधारण बात समझना बहुत गलत बात होगी क्योंकि आप जानते हैं कि यह अंग्रेजों का जमाना नहीं है जिसमें हम और आप सत्याग्रह करते थे तो इंग्लैंड में यहां के विषय में हाउस आफ कामन्स में प्रश्न उठाये जाते थे कि कांग्रेस वालों को या हिन्दुस्तान वालों को किस तरह से परेशान किया जा रहा है । यह चीन है । चीन की जो हालत है वह सब जानते हैं । उसकी विस्तारवाद की मनोवृत्ति है । वह अगर अपना कदम हमारे देश के अन्दर बढ़ाता है और हमको उसके कदम अपने देश के अन्दर बढ़ते हुये दिखाई पड़ते हैं तो यह हमको और आपको कमजोर कर देगा और हमको और आपको लंगूर बनाकर कमजोर कर देगा । उसके सामने प्रजातंत्र या डेमोक्रेसी का कोई सिद्धान्त नहीं है जिससे कोई आप प्रजातांत्रिक बात कर सकें । आपके हाथ में गोली होनी चाहिये । आपके हाथ में बुलेट होनी चाहिये जिससे आप उसको ठिकाने का जवाब दे सकें । इसमें कोई देश या प्रदेश का सवाल नहीं है । यह ऐसी स्थिति है जिसमें हम सब को

[श्री बैजनाथसिंह वैद्य]

डटकर देश की रक्षा करनी है । इसलिये मैं अदब से यह गुजारिश करना चाहता हूं कि माननीय राज्यपाल महोदय ने जो भाषण दिया था उस समय यहां पर बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो गई जो असेम्बली के इतिहास में पहली बार हुई है । वह बोलते रहे और हमारे साथी खड़े होकर उनका विरोध करते रहे । उनको मजबूर होकर बैठ जाना पड़ा । अतः उन्होंने जो यहां पर भाषण दिया उसके लिये धन्यवाद के प्रस्ताव पर मैं बोल रहा था । मुझे आशा है कि आप लोग अपनी मनोवृत्ति को बदलने की कोशिश करेंगे ।

श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल के नेता की ओर से बोल रहा हूं । आशा है मुझे आप कुछ अधिक समय देने की कृपा करेंगे । श्रीमान्, जो गवर्नर महोदय के भाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव प्रस्तुत है उसमें मेरा निम्नलिखित संशोधन है जो मैं अपनी पार्टी की ओर से प्रस्तुत करता हूं—"महामान्य राज्यपाल के धन्यवाद के प्रस्ताव के अन्त में निम्नलिखित शब्द और जोड़ दिये जांय---परन्तु खेद है कि राज्यपाल महोदय ने---

श्री उपाध्यक्ष---

वह उपस्थित हुआ मान लिया गया था ।

श्री भानुप्रतापसिंह---

श्रीमान्, इसके पहले कि मैं अपने प्रस्ताव के सम्बन्ध में कुछ कहूं मैं आपकी अनुमति से इस तृतीय पंचवर्षीय योजना के मसविदे के एक पैराग्राफ से कुछ पढ़कर सुनाना चाहता हूं। इसमें पृष्ठ ११ पर प्रशासनिक क्षमता के विषय में लिखा है " लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा हाल में किये गये एक अध्ययन में प्रोफेसर मसालदान ने कहा है---"उत्तर प्रदेश में प्रशासनिक संगठन और प्रणालियों में सरकारी विकास प्रयत्नों के साथ साथ उन्नति नहीं हुई है । आर्थिक विकास के लिये जो उत्साह दिखाई पड़ता है, उसका शतांश भी प्रशासनिक सुधार की दिशा में नहीं है । " अन्त में यह लिखा है कि "प्रशासनिक सुधार की ओर यदि फौरन ध्यान न दिया गया तो परिणाम में निराशा और अपव्यय ही हाथ लगेगा ।" श्रीमान्, इस पैराग्राफ से यह स्पष्ट है कि सरकार प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार की आवश्यकताओं को समझती है, परन्तु पिछले दो वर्षों में जब से यह तीसरी पंचवर्षीय योजना चल रही है, उन्होंने कोई ठोस कदम उठाया हो तो कम से कम मैं उसे नहीं समझ पाया और अगर उन्होंने उठाया भी तो उसका परिणाम कुछ भी दिखाई नहीं देता । प्रशासनिक दुर्व्यवस्था के क्या नतीजे निकलते हैं इसके लिये मैं कुछ उदाहरण देना चाहता हूं । इसके कारण किस तरह से सारी योजनाएं विफल हुई हैं और किस प्रकार से उनके प्रति जनता का उत्साह गिरता जा रहा है । उदाहरण में मैं केवल अपने ही क्षेत्र को लेता हूं । जो वहां के किसानों पर बीती है उन बातों को मैं आपकी अनुमति से इस सदन के सामने रखना चाहता हूं । मैंने अपने क्षेत्र को इसलिये नहीं छांटा है, कि केवल वहाँ की गड़बड़ियों को यहां कह देने मात्र से वहां के लोगों को कुछ राहत मिल जायगी और न मैं यही समझता हूं कि मेरे ही क्षेत्र में कुछ विशेष परिस्थितियां हैं और क्षेत्रों में भी गड़बड़ियां होंगी, किन्तु मैंने अपने ही क्षेत्र को इसलिये छांटा है, कि वहां की बातों को मैं आधिकारिक ढंग से कह सकता हूं क्योंकि मैंने वहां जांच पड़ताल की है ।

मैं एक बीज गोदाम की बात कहना चाहता हूं । हमारी तहसील के हेडक्वार्टर पर एक बहुत पुराना बीज गोदाम है । वह जितना ही पुराना है उतना ही वहाँ बकाया भी पुराना है । पता नहीं कैसे इस साल एकाएक सोते से हमारी सरकार जाग उठी और उसने आदेश दिये कि सारा बकाया एक साथ वसूल कर लिया जाय । आदेश का नतीजा यह हुआ कि, वहांपर हाहाकार मच गया है । किसान मेरे पास आये और कहने लगे कि तेरह-तेरह और चौदह-चौदह वर्ष का पुराना बकाया वसूल किया जा रहा है । मुझे पहले तो विश्वास नहीं हुआ कि इतने पुराने बकाये हो भी सकते हैं और उनको वसूल करने के विषय में आदेश भी हो सकते हैं । किन्तु

फिर भी मैंने खोज की। मैं स्वयं सीड स्टोर पर गया और मैंने पता लगाने की कोशिश की तो जो, स्थिति देखने को मिली वह उससे भी अधिक भयानक थी जो किसानों ने बतायी थी। वहां १९४१ और १९४२ तक के २२ वर्ष पुराने बकाये मौजद हैं और उस एक बीज गोदाम पर पिछले ३ वर्षों का बकाया छोड़ कर पहले १९ वर्ष का बकाया ३ लाख रुपये से ऊपर है। मैंने उस पर सूद भी जोड़ने की कोशिश की तो सवाई के अलावा दो लाख रुपये से ऊपर उसका सूद भी है। मैं नहीं कहता कि किसानों को जो रकमें दी जायं, वसूल न की जायं, लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि किन परिस्थितियों में सरकार ने अपना बीस-बाईस वर्ष का बकाया छोड़ रखा। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि क्या इतने लम्बे अर्से का बकाया किसानों से एक साथ वसूल करना न्यायोचित है बहुत से लोग, जिन्होंने कर्जा लिया था, मर चुके हैं। किसी को याद भी नहीं है, किसी के पास रसीद भी नहीं है। जो अमीन कह देता है, उसे किसानों को मानना पड़ता है। मैंने थोड़ा और जानने की कोशिश की, तो एक और रहस्योद्घाटन हुआ। कुछ वर्ष पहले एक बार और बकायों को वसूलने का प्रयत्न किया गया था और उस समय किसानों से जो वसूलियां की गयी थीं उनका तहसील के कागजों में स्याहा नहीं हुआ और वे रकमें दोबारा वसूल हो रही हैं। मैं चाहूंगा कि इसकी भी जांच हो कि जो रकमें वसूल की गयीं उनका स्याहा क्यों नहीं हुआ।

दूसरी बात मैं उसी बीज गोदाम मे बारे में बताना यह चाहता हूं कि एक बार १९५८ में धान का बीज बांटा गया था; वह बीज गलत साबित हुआ। उसके नाते किसानों को भारी क्षति हुई। मैंने उसके विषय में सरकार का ध्यान दिलाया कि उसकी माफ होना चाहिये तो ५ वर्षों के बाद, सन् ५८ में बांटे गये धान के विषय में सन् ६३ में उत्तर मिला। उस उत्तर को मैं आपकी अनुमति से पढ़कर सुनाना चाहता हूं—"उक्त विषयक आपके पत्र सं० एल०ए०/ए ०सी०/ ४२८, दिनांक २३ जून, १९६२ के संदर्भ में मुझे आपको सूचित करने का निदेश हुआ है कि सन् १९५८ में बस्ती जिले में सरकारी तथा सहकारी बीज भंडारों से अगहनी धान के स्थान पर कुवारी धान का बीज बंट जाने से कृषकों को ३५,१९६ रुपये ७० नये पैसे का नुकसान हुआ था जिसमें ५९१४ रुपये ९० नये पैसे का धान का बीज कृषि बीज भंडारों से बांटा गया था। कृषि बीज भंडारों को ५९१४ रुपये ९० नये पैसे के बांटें गये कुंवारी धान का मूल्य मुआफ करने की स्वीकृति कृषि निदेशक को दे दी गयी है।

२—शेष २९,२८१ रुपये ८० नये पैसे के मूल्य का कुंवारी धान का बीज बस्ती जिले के सहकारी बीज भंडारों से बांटा गया था। सहकारी विभाग से कहा गया है कि वे भी कुंवारी धान के बीज का मूल्य मुआफ करने के प्रश्न पर विचार करें।"

श्रीमन, इस सरकार को ५,०००-६,००० रुपये की रकम छोड़ने का फैसला करने में ५ वर्ष लग गये, तो शेष रकम के लिये फैसला करने में इसे शायद ३० वर्ष ही लगेंगे, ऐसी आशा करनी चाहिये। यदि पुरानी गति रही, तो इतना समय अवश्य ही लग जायगा। उसके अतिरिक्त इस समय रकम को जोड़ने में भी काफी गड़बड़ियां हुई हैं। जितनी किसानों को छूट मिलनी चाहिये थी, उसकी आधी उनको नहीं मिली है। यह तो बीज भंडार की बात है। इसी प्रकार से किसानों से रासायनिक खाद का कर्जा, तकावी का कर्जा, पंचायत टैक्स और दूसरे तरह तरह के टैक्स वसूल किये जा रहे है और उन पर इसके अलावा यह सरचार्ज भी लगने वाला है। आज उस क्षेत्र के किसानों की दशा मरने वाले उस जानवर की सी हो गयी है, जिस पर मरने के पहले से ही गिद्ध और कौवे मंडराने लगते हों। वह सुबह से शाम तक परेशान रहता है कि किस प्रकार वह इन कर्जे और टैक्सों को अदा करे। श्रीमान्, जैसा मैंने पहले कहा, मैं इस बात का कायल नहीं हूं कि कर्जे वसूल न किये जांय। लेकिन वह जिस तरह से वसूल किये जा रहे हैं, कि पहले उनको २०,२२ साल तक छोड़ दिया गया और उसके बाद उन सब को एक साथ वसूल करने की कोशिश की जा रही है, उसका मैं विरोध करता हूं। तहसील स्टाफ आदि की गलतियां भी हैं, उन्होंने स्याहा नहीं किया, इसे देखते हुये अनुमान लगाया जा सकता है कि वहां के किसानों को कितनी तकलीफ हो रही होगी। एक तरफ उनसे २०—२२ वर्ष के

[श्री भानुप्रतापसिंह]

बकाया वसूल करने की कोशिश चल रही है और दूसरी तरफ उनके साधन कम किये गये हैं। हमारे खाद्य मंत्री जी ने रोक लगा दी है कि उस क्षेत्र से धान या चावल बाहर नहीं निकल सकता। वहां की खेती ८०, ९० प्रतिशत धान की है। इस सदन में मेरे प्रार्थना करने के और मंत्री जी के आश्वासन देने के बावजूद कि धान १० रुपये प्रति मन खरीद लिया जायगा, आज तक एक छंटाक धान या चावल सरकारी माध्यम से उस क्षेत्र में नहीं खरीदा गया। एक तरफ चावल और धान बाहर जाने पर रोक लगा दी गई है और दूसरी तरफ सरकार उसे खरीदती नहीं, नतीजा यह निकला है कि वहां का धान ७ और ८ रुपया प्रति मन बिक रहा है। किसान के सामने अपनी उपज को उचित दाम पर बेचने का कोई रास्ता नहीं है, फिर भी उनसे बेरहमी के साथ वसूली की जा रही है। आप सोचें कि इन परिस्थितियों में उनके दिल पर क्या बीतती होगी। यदि इससे किसान और जनता में असन्तोष बढ़ता है, तो स्वाभाविक है कि आपके विकास कार्यों के प्रति उनकी श्रद्धा समाप्त हो जाय।

श्रीमन्, यह मैंने अपने क्षेत्र की कुछ बातें बतलायीं। इसके अतिरिक्त अभी पुलिस के संबंध में एक प्रश्न उठा था कि पुलिस ने स्वंय ही गांव वालों पर डाका डलवाया। मैं यह नहीं कहता कि पुलिस वालों ने डाका डलवाया क्योंकि मेरे पास इसका कोई प्रमाण नहीं है। लेकिन मैं उस गांव में गया हूं और पास पड़ोस में भी बातें की हैं। मुझे अफसोस इस बात का है कि वहां की ९९ फीसदी आबादी इस मत की है कि पुलिस ने ही डाका डलवाया है। संभव है कि पुलिस ने डाका न डलवाया हो, लेकिन जो इसकी परम्परा है, जो रेकर्ड है, उससे लोग सशंक है और जनमत उसके विरुद्ध है। वह पुलिस के पक्ष में नहीं है। यह चिन्ता का विषय है। ऐसी स्थिति में किस प्रकार वहां सुरक्षा रह सकती है और शांतिपूर्वक जीवन निर्वाह कैसे संभव है?

श्रीमन्, ये परिणाम आपके कुशासन और कुव्यवस्था के हैं जो कि ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ रहें हैं। फिर भी हमारे उधर के बैठने वाले भाई कहते हैं कि हम तो प्रगतिशील हैं। कल २–३ माननीय सदस्य अपने मुंह खूब मियां मिट्ठू बने। उन्होंने कहा कि हम लोग प्रगतिशील हैं और आप सब लोग प्रतिक्रियावादी हैं। मैं उनकी प्रगतिशीलता के बहुत से उदाहरण दे सकता हूं। लेकिन समय कम होने के कारण संक्षेप में कुछ २–४ ही बातें बतलाना चाहता हूं।

आप देखें कि १५ वर्ष पूर्व शासन की बागडोर अपने हाथों संभाल लेने पर भी हमारा देश भारतवर्ष अभी कितना कमजोर है। वह चाहे शासकवर्ग की मूर्खता से हो या लापरवाही से या चाहे धोखे से; परन्तु यह सत्य है कि आज भारत इतना कमजोर बना दिया गया है कि न तो हम युद्ध और न शांति, किसी में भी पहल करने के योग्य नहीं रह गये हैं। आज हमारी सरकार में इतना साहस भी नहीं है कि चीन ने जो इलाका खाली कर दिया है, उसमें हम अपनी फौजों को भेज दें। आप देखें कि कोलम्बो प्रस्तावों को मान कर हमारी सरकार ने चीन की साझेदारी ही एक प्रकार से स्वीकार कर ली है। कुछ क्षेत्रों का प्रशासन दोनों सरकारें मिल कर चलायें, यह कोलम्बो प्रस्ताव की एक शर्त है। मैं आपके द्वारा नम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहता हूं कि किसी शासन का पहला कर्त्तव्य जो होता है, वह देश की सुरक्षा का ही है। यही सर्वोपरि है और इसी को ही प्राथमिकता मिलनी चाहिये। इसमें यह प्रगतिशील लोग असफल रहे हैं और कहते हैं कि हम कमजोर इसलिये रहे कि हम विकास कार्यों में लगे रहे। मैं यह बात भी उनकी मान लेता हूं यदि उन्होंने देश का ही विकास कर लिया होता। मैंने कई बार पहले भी कहा है, और आज फिर दोहराता और शायद किसी ने उसका विरोध एवं खंडन भी नहीं किया है कि देश आर्थिक प्रगति में भी पीछे रह गया है। आर्थिक प्रगति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रति व्यक्ति कितनी आय किसी देश में बढ़ी है। परन्तु आज हमारा देश इस दृष्टि से भी संसार के सबसे पिछड़े हुए देशों में से है। भारत का स्थान सबसे नीचे तो नहीं, परन्तु नीचे से दूसरे या तीसरे नम्बर पर अवश्य है। हमारी आर्थिक प्रगति भी नहीं हुई और हमारे देश की सैनिक शक्ति भी इस सरकार ने नहीं बढ़ायी, तो फिर आखिर

इसने किया क्या है ? इतना रुपया जो उसने जनता से और दूसरे देशों से लिया वह सब क्या हुआ ?

एक बात और कही जाती है कि हमने देश में समाजवाद कायम करने के लिये हर प्रकार से प्रयत्न किये । परन्तु मैं आपसे समाजवाद की परिभाषा जानना चाहता हूं कि वह क्या है । सामाजिक न्याय की दिशा में जो पहला कदम हो सकता है वह गरीब और अमीर के अन्तर को कम करने का हो सकता है । परन्तु यह एक मानी हुई बात है और इसको कांग्रेस के नेताओं ने भी माना है कि इस देश में गरीबों की गरीबी बढ़ी है और अमीरों की अमीरी बढ़ी है । ऐसी दशा में आपका यह दावा भी कि सामाजकि न्याय और समाजवाद की स्थापना आप करते रहे, वह भी किसी तथ्य पर आधारित नहीं है । आप देश की सैनिक शक्ति बढ़ा नहीं सके, आर्थिक प्रगति भी नहीं कर पाये और सामाजिक न्याय और समाजवाद की रचना करने में भी आप असफल रहे तो आपने क्या किया ? मैं यह कहता हूं कि आपने केवल विदेशी कर्जे बढ़ाये हैं और गरीबों के ऊपर टैक्सों में वृद्धि की है और आप के शासन में बेरोजगारी में बहुत वृद्धि हुई है । क्या इसी को आप प्रगतिशीलता का द्योतक कहेंगे ? यदि यही आपकी प्रगतिशीलता है तो यह आपको मुबारक हो, हमको नहीं चाहिये ऐसी प्रगतिशीलता । यदि यह प्रगतिशीलता है तो हम प्रतिक्रियावादी ही बने रहेंगे । इसी में हम को संतोष है । लेकिन मैं आपको एक बात बतला देना आवश्यक समझता हूं कि जिनको आपने प्रतिक्रियावादी कहना शुरू किया है, उनका दायरा बढ़ता चला जा रहा है । पहले आपने स्वतन्त्र पार्टी को प्रतिक्रियावादी कहा, फिर जनसंघ को और अब प्रजा समाजवादी और समाजवादी पार्टियों को भी प्रतिक्रियावादी कहना शुरू किया है । इसको आप नहीं सोचते हैं कि आपकी जो विदेशी नीति है उसमें क्या खामियां हैं, उसके विरुद्ध सारी प्रजातांत्रिक पार्टियां क्यों हैं । जो स्वतन्त्र पार्टी का सिद्धांत है, उसको सभी ने स्वीकार किया है । केवल इतना ही नहीं, जिस प्रकार से औरों ने हमारे सिद्धांत को स्वीकार किया है, उसी प्रकार आपके अन्दर भी यह कहा जा सकता है कि वे तत्व मौजूद हैं जो हमारी बातों को स्वीकार करते हैं । लेकिन उनमें आज इतना साहस नहीं है कि वे इस बात को खुलकर कहें । उन्हीं तत्वों ने कृष्णमेनन को निकाला है । मैं फिर कहूंगा कि आप सचेत हों क्योंकि आप जिनको प्रतिक्रियावादी कहते हैं, आज उनका दायरा बढ़ रहा है और यदि आप अब भी सचेत नहीं हुए और अपनी इस उल्टी प्रगतिशीलता में ही आप भूले रहे, तो आपको इन कुर्सियों पर अब दूसरा अवसर बैठने के लिये नहीं मिलने वाला है ।

(लाल बत्ती होने पर)

श्रीमन्, लालबत्ती जल गयी, मुझको अवसर नहीं है, लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि हमारे उधर के बैठने वालों ने एक बार "हिन्दी चीनी भाई भाई !" का नारा लगाया था और उसका परिणाम उन्होंने देख लिया । अब उनका एक नया रुख है कि "कांग्रेस सी० पी० आई० भाई-भाई" । लोक सभा में जो डिबेट हुआ है, उसमें सिवाय कम्युनिस्ट पार्टी के कांग्रेस का कोई समर्थक नहीं मिला । जिस प्रकार पिछला कटु अनुभव है, उसको देख कर फिर से विचार किया जाय कि यह "कांग्रेस–सी० पी० आई० भाई भाई" का जो रवैया है वह भी देश के लिये घातक सिद्ध होगा । पालिसी मैटर्स में आप सहमत न हों तो उन्हें जाने दीजिये, आप अपने शासन को सुधारिये और जैसा इस तृतीय पंचवर्षीय योजना में लिखा हुआ है, यदि आपने प्रशासन की व्यवस्था को नहीं सम्भाला तो सारी योजनायें आपकी मिट्टी में मिल जायंगी और कोई परिणाम नहीं निकलेगा ।

श्री मूलचन्द शास्त्री (जिला मेरठ)---

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आज महामहिम राज्यपाल महोदय के भाषण के प्रति अपनी आस्था और विश्वास प्रकट करने के लिये खड़ा हुआ हूं । इस अभिभाषण में उन सब बातों का वर्णन किया गया है जिनकी आज हमारे प्रान्त को आवश्यकता है । इसमें संदेह नहीं कि हमारा देश इस समय विचित्र स्थिति से गुजर रहा है । अभी अभी हमारे ऊपर चीन का एक बहुत बड़ा आक्रमण हुआ । उसके सम्बन्ध में हमारे विरोधी सदस्यों ने

[श्री मूलचन्द शास्त्री]

गवर्नमेन्ट की अजीब तरह की नुक्ताचीनी की है कि हम चीन का मुकाबिला अच्छी तरह से न कर सके। मैं केवल इतना ही कहूंगा कि आज यह किसी भी हिन्दुस्तानी को शोभा नहीं देता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दुस्तान की सरकार के पास कोई ऐसी शक्ति थी, लोगों में एक ऐसा उत्साह था जिसके कारण इतिहास में यह सब से पहली एक घटना हुई है कि जो अपने आप को विजयी समझ रहा था उसे बिना किसी शर्त की घोषणा के उस इलाके से वापस जाना पड़ा जिस पर उसने कब्जा करने का प्रयत्न किया था। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार के नाटकीय ढंग से वापस जा कर चीन का उन इलाकों को देने के लिए तैयार होना, जिन पर आक्रमण करके उसने कब्जा किया था, कोई विशेष महत्व रखता है।

मैंने उन संशोधनों को, जो विरोधी सदस्यों की तरफ से रखे गये हैं, बड़े ध्यान से पढ़ा। एक संशोधन में यह कहा गया है कि सरकार ने राष्ट्र विरोधी तत्वों की गतिविधियों पर पूरी तरह से देखभाल नहीं की। ठीक उसके आगे एक और संशोधन है कि उत्तर प्रदेश सरकार आपात्-कालीन स्थिति का अनुचित लाभ उठाकर भारतीय सुरक्षा कानून का दुरुपयोग कर विरोधी दलों पर और समाचारपत्रों पर कुठाराघात कर रही है। एक तरफ कहा जाता है कि विरोधी तत्वों पर पूरी निगाह नहीं रखी गयी और उसी से आगे संशोधन में कहा जाता है कि विरोधी दलों को कुचलने के लिए उनपर कुठाराघात किया जाता है। मैं दोनों को पढ़ कर इस नतीजे पर पहुंचा कि सरकार को अब यह चाहिये कि विरोधी दलों से यह कह दे कि भाई, आप निश्चय करके बता दो कि विरोधी तत्व कौन से हैं और कौन सरकार के पक्ष के तत्व हैं।

एक बात और मैंने उन संशोधनों में देखी। अंग्रेजी भाषा के विरोध में और हिन्दी के पक्ष में काफी बातें कही गयीं हैं और जिस वक्त अभिभाषण हो रहा था उस समय भी इसकी चर्चा हुई। हमने पहले ही यह निश्चय किया है कि हम बिहार और राजस्थान आदि सरकारों से हिन्दी में पत्र-व्यवहार करेंगे और अब आगे चल कर गुजरात, हिमाचल प्रदेश तथा देहली से भी हिन्दी में पत्रव्यवहार करने का निश्चय किया है। तो मैं पूछता हूं कि क्या हिन्दी की प्रगति की ओर हम नहीं बढ़े हैं। मैं समझता हूं कि अगर महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को ही ध्यान से पढ़ लिया होता तो उससे ही इस बात का आभास मिल जाता कि यह सरकार हिन्दी की प्रगति के लिये तत्पर है और प्रयत्न कर रही है।

आदिवासी, हरिजन तथा पिछड़ी जाति वालों के लिये भी संशोधनों में कहा गया। काफी लोग मुझे तो यह कहते हुये मिले कि यह अच्छा होता यदि हम भी हरिजन होते। मैंने पूछा--क्यों? उन्होंने कहा कि हरिजनों के लिये एक तो सीट सुरक्षित रहती हैं; काफी लोगों को यह भी कहते सुना कि स्त्रियों को बहुत प्रोत्साहन दिया जा रहा है। एक तरफ तो इस तरह की बातें कही जाती हैं, दूसरी तरफ संशोधनों में यह सुझाव दिया जा रहा है कि इनका प्रतिशत और बढ़ा दिया जाय। मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने अब तक हरि-जनों के लिये, पिछड़ी जाति के लिये तथा महिलाओं के लिये जो कुछ भी किया है वह किसी से छिपा नहीं है। इस अभिभाषण में भी यह कहा गया है कि इन लोगों के उत्थान के लिये हम और भी कितना ही रुपया खर्च करना चाहते हैं। इन वर्गों को सुधारने के लिये सरकार और क्या कुछ करना चाहती है उसका भी इस अभिभाषण में वर्णन है। लेकिन अगर आप का यह मंशा है कि किसी तरह से संशोधन रख कर बोलने के लिये समय प्राप्त कर लें, तो, उपाध्यक्ष महोदय, आप बहुत आसानी से यह कर सकते हैं कि जो हमारे माननीय सदस्य बोलना चाहते थे उनको आप बोलने के लिये समय दे दें, भले ही वे ऐसे संशोधन लाये होते या न लाये होते।

दूसरी बात मैं एक और यह कहना चाहता हूं कि हमारे विरोधी दल के माननीय सदस्यों को हमारी योजनाओं के प्रति तो नुक्ताचीनी करनी चाहिये क्योंकि उसमें बहुत सी बातें ऐसी हो सकती हैं जिनको वे हृदय से यह महसूस करते हों कि फिजूलखर्ची हो रही है, लेकिन मैं यह करबद्ध प्रार्थना करना चाहता हूं कि उनको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिये जिनसे कि

चीनियों को किसी तरह का बढ़ावा मिले। यह कहने से कि हम लोग हारे हैं, उनके सामने घुटने टेक दिये हैं, जो क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां जाने की हमारी हिम्मत नहीं है, आदि आदि, बातें ऐसी हैं जो न तो इस देश के हित में हैं, न इस प्रदेश के हित में हैं और न इस सदन के हित में हैं। इन शब्दों के साथ जो महामहिम का अभिभाषण हुआ है उसका मैं स्वागत करता हूं और आशा करता हूं कि उसमें दी गई बातों से हमारा प्रदेश ऊंचा उठेगा और वह अग्रसर होगा।

कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)--

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर और कुछ निवेदन करने से पहले मैं माननीय राज्यपाल जी के सभ्य, सहिष्णु तथा दूरदर्शिता के व्यवहार के लिये उनको हृदय से धन्यवाद देता हूं जो उन्होंने उस समय दिखाया जब अभिभाषण को पढ़ने नहीं दिया गया। उन्होंने उनको माननीय धुलेकर जी से पढ़वाकर जिस शान्तिपूर्वक उस बिगड़ी हुई परिस्थिति को संभाला, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--

श्रीमन्, यह सही नहीं है कि उनको पढ़ने नहीं दिया गया, लेकिन सही यह है कि उन्होंने हमारे निवेदन को मान लिया।

कुंवर श्रीपालसिंह--

श्रीमन्, आप मेरे समय का ध्यान रखें। जहां मैं उनके इस उदारतापूर्ण व्यवहार के लिये उनको धन्यवाद देना चाहता हूं वहां मैं अपने उन साथियों के उल्टे व्यवहार की भर्त्सना करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--

(श्री उग्रसेन के खड़े होकर कुछ कहने का प्रयत्न करने पर) आप इस प्रकार खड़े होकर डिस्टर्ब न करें। अपनी जब आप को राय जाहिर करने का अधिकार है, उनको भी उसका राइट है।

कुंवर श्रीपालसिंह--

श्रीमन्, आप मेरा दो मिनट का समय बढ़ा दें। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि मैं भर्त्सना क्यों करना चाहता हूं। (श्री उग्रसेन द्वारा व्यवधान करने पर) श्रीमन् जी, वे भावी नेता विरोधी दल हैं, वे अपनी ऊंचाई दिखा रहे हैं, और क्या कहूं? वह चीज इस भावना से की गयी थी कि वे हिन्दी को ऊंचा लाना चाहते थे, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि उनकी इस प्रकार की हरकत से हिन्दी १० हाथ नीचे चली गयी है। जिस प्रकार से हिन्दी को सपोर्ट किया गया वह हिन्दी के ऊपर कलंक है, हिन्दी भाषी प्रान्तों की जनता के ऊपर कलंक है। क्या इससे अहिन्दी भाषी प्रान्तों की जनता पर प्रतिक्रिया नहीं होगी? इस प्रतिक्रिया का परिणाम उनके सब से बड़े नेता को भुगतना भी पड़ा है। दक्षिण में उनका ईंटों से स्वागत किया गया था। इसलिये मैं उनसे करबद्ध प्रार्थना करूंगा कि वे हिन्दी के लिये ऐसी हरकतें न करें। वह ऐसी हरकत है कि किसी राजा ने एक बन्दर पाला और उसको मक्खी उड़ाने के लिये रखा गया। राजा सो गया। तीन मर्तबा तो उसने मक्खी को उड़ा दिया लेकिन चौथी मर्तबा जब मक्खी राजा की नाक पर बैठी थी उसने एक पत्थर उठा कर मार दिया और राजा की नाक चिपटी हो गयी, जान निकल गयी, हालांकि मक्खी उड़ गयी। इसलिये वे हिन्दी के परम हितैषी लोग जो समाजवाद को मानने वाले हैं जिसमें कि राष्ट्रीयता की भी कोई गुन्जाइश नहीं है, वे हिन्दी के बड़े भारी हितैषी बनते हैं, वे कृपया ऐसी चीजें न करें नहीं तो वे हिन्दी को लेकर स्वयं डूब जायेंगे। आज हम जो इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा हो, हमारे उस प्रयत्न को ठेस न पहुंचाइये। इतना निवेदन मैं अवश्य करूंगा कि कृपा कर के हिन्दी को अपने स्थान पर पहुंचने दें और उसके पहुंचने के बीच में पत्थर न लगावें।

श्री उग्रसेन---

आप ही जैसे लोग राष्ट्रभाषा व हिन्दी आदि का रास्ता बिगाड़ रहे हैं। राजा साहब पुराना सपना देख रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष---

उग्रसेन जी, आप तो लीडर हो कर ऐसी बातें कहते हैं।

श्री दीपनारायणसिंह (जिला फतेहपुर)---

उपाध्यक्ष जी, दोनों को अखाड़े में छोड़ दीजिये।

कुंवर श्रीपालसिंह---

असहिष्णु शब्द का जो मैंने प्रयोग किया था उसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है और मेरी बात बिल्कुल सत्य सिद्ध हो रही है। इसके अतिरिक्त राज्यपाल महोदय के भाषण के ऊपर भी मुझे थोड़ा सा कहना है। और विषयों पर तो बहुत कुछ कहा जा चुका है, मैं केवल अन्तिम पैराग्राफ पर ही कुछ कहना चाहता हूं जो राज्यपाल महोदय के भाषण में है। इसमें उन्होंने कहा है,---'एक तो अपने स्वप्नों के राष्ट्र के निर्माण का तथा दूसरे आक्रामक को हटाने की तैयारी का। इसके लिये साहस, बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और सर्वोपरि इच्छा-शक्ति तथा चित्त की एकता की आवश्यकता है। इसमें तीन शब्द आये हैं 'आक्रामक को हटाने', आक्रामक शब्द का माने यह है कि जरूर किसी ने आक्रमण किया है। तो उसका निर्णय होना चाहिए कि किसने आक्रमण किया।

गृह उपमन्त्री (श्री नवलकिशोर)---

चीन ने किया है।

कुंवर श्रीपालसिंह---

आप कहते हैं कि चीन ने आक्रमण किया है, मैं मानता हूं, गुप्ता जी ने भी कहा कि चीन ने आक्रमण किया है, चन्द कांग्रेसी नेताओं ने भी कहा कि चीन ने आक्रमण किया है लेकिन कांग्रेस के जो हमारे सबसे बड़े नेता हैं और जिनके हाथों में आज हमारे देश के शासन की बागडोर है, वह नहीं कहते हैं कि चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण किया है। इसका प्रमाण मेरे पास है और उस प्रमाण के आधार पर मैं कहता हूं कि अपने शान्तिनिकेतन के भाषण में उन्होंने कहा है कि चीनियों.....(व्यवधान)

श्री उग्रसेन---

(कांग्रेस पार्टी के सदस्यों से) अब आप लोग क्यों नहीं ताली पीटते? फिर जरा जोर से ताली पीटिये।

(व्यवधान)

कुंवर श्रीपालसिंह---

उन्होंने शान्तिनिकेतन में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि चीनियों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है।

श्री नवलकिशोर---

ठीक तो है, हमारी दुश्मनी चीनी जनता से नहीं है, बल्कि चीनी शासन से है।

कुंवर श्रीपालसिंह---

नवलकिशोर जी, आप भी अगर यह कहते हैं तो आप बहुत भ्रम में पड़े हुए हैं।

(व्यवधान)

जरा सुन तो लीजिये मिश्र जी, मैं यह जानना चाहता हूं कि चीन के चाऊ के जिन पीले आदमियों की लाल संगीनों ने हमारे जवानों के हृदय के रक्त को चूसा, क्या वे चीन की पीली औरतों के गर्भ से नहीं निकले हैं? क्या उनको यहां से कांग्रेसियों ने भेज दिया था? अगर चीनी हमारे दुश्मन नहीं हैं, तो कौन हमारा दुश्मन है? जब तक हमारा लक्ष्य स्पष्ट

नहीं होगा, एक लक्ष्यबद्ध सुरक्षा की तैयारी नहीं होगी, मैं आप से निवेदन कर दूं कि हम कभी भी सुरक्षा के काबिल नहीं हो सकेंगे। केवल प्राइम मिनिस्टर ने ही नहीं, बल्कि हमारे गृह मंत्री शास्त्री जी ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "आज चीन से लड़ाई करने की बात करना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है।" मैं जानना चाहता हूं कि फिर किससे लड़ाई करने की बात करने में बुद्धिमत्ता है। क्या श्री उग्रसेन से लड़ाई लड़ने की बात करने में बुद्धिमत्ता है? (हंसी) अगर चीन से लड़ाई लड़ने में बुद्धिमानी है नहीं तो फिर किससे लड़ाई लड़ने में बुद्धिमानी है? ये चीजें मैं इसलिये निवेदन कर रहा हूं कि कुछ भ्रम सा है। आप स्पष्ट शब्दों में दुश्मन को इंगित नहीं करना चाहते। हम यहां सुरक्षा की बातें कर रहे हैं लेकिन क्या आप को पता तक है कि यहां की कितनी घड़ियों में ट्रांसमिटर लगे हुए हैं? मालूम हुआ आप को कि अभी कल रात को दिल्ली से रेडियो में समाचार प्रसारित हुआ कि सरकारी सेन्सर के बावजूद भारत में भारत विरोधी चीनी साहित्य का वितरण बराबर हो रहा है। वह किस के द्वारा होता रहा है? क्या श्रीपाल सिंह के द्वारा, श्री नवल किशोर के द्वारा, गुप्ता जी के द्वारा या श्री उग्रसेन जी के द्वारा होता रहा है? यह किसके द्वारा होता रहा है? आपने कभी इस पर सोचा? आपने हर्गिज नहीं सोचा। आपने उन्हीं को अपना दूत बना कर भेजा, आज भी वह आप के सामने बैठे हैं। आज कोई भी यहां की पार्टी हो सब अपने को राष्ट्रीय पार्टी कहती हैं जैसे भारतीय कांग्रेस, भारतीय जनसंघ, भारतीय सोशलिस्ट पार्टी या भारतीय प्रजा सोशलिस्ट पार्टी लेकिन उनकी कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया है, वह इंडिया कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। उनकी तो एक अन्तर्राष्ट्रीय पार्टी है और उसकी यह शाखा है कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया। (लाल बत्ती होने पर) मुझे समय और दिया जाय.....

श्री उपाध्यक्ष—

मैं ५ मिनट आप को दे चुका हूं।

कुंवर श्रीपालसिंह—

आप अब से मुझे ५ मिनट और दे दें, बस। तो यह कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया है, यह कोई राष्ट्रीय पार्टी नहीं है, यह तो एक शाखा है, उनके रक्त में चीन और रूस भरा है। उनके यहां आधे रूसी विचारधारा के हैं और आधे चीनी विचारधारा के लोग हैं, लेकिन क्या कोई उनमें भारतीय विचारधारा का भी है? एक भी नहीं, कोई भी नहीं।

सिंचाई मंत्री (श्री राममूर्ति)—

श्री झारखंडेराय जी हैं।

कुंवर श्रीपाल सिंह—

ठीक है, श्री झारखंडे राय जी सन् १९४७ से पहले ऐसे ही थे और वह फांसी के तख्ते को चूम कर आने वाले लोगों में से हैं और उस समय के श्री झारखंडे राय के आगे हमारा मस्तक नत होता है, लेकिन इस वक्त जिस कीचड़ में वह फंस गये हैं वह उन जैसे राष्ट्रभक्त और देशभक्त के लिये उचित नहीं है कि वह एक देशद्रोही पार्टी में शरीक रहें, यह बड़े दुःख की बात है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि जब तक हम एक लक्ष्य बांध कर नहीं चलेंगे और हम यह नहीं तय कर लेंगे कि हमारा दुश्मन कौन है तब तक सुरक्षा की बात करना बिलकुल बेकार है। हमारे नेता पंडित जवाहर लाल जी ने यहीं के लखनऊ के अपने भाषण में स्पष्ट कहा था कि यह सब खन्दकें यहां क्यों खोदी गई हैं, क्या हम खरगोश की तरह डर कर उनमें घुस जायंगे? कोलम्बो जाने से पहले हमारे प्रधान मन्त्री ने अपने जनरलों को हुक्म दे दिया कि चीनियों को अपने क्षेत्र से निकाल दो। इस पर उसका एक हमला हुआ और फिर क्या गत हुई अपनी शक्ति का गलत अन्दाजा लगाने से? यह कहना ठीक है कि खरगोश की तरह बिल में घुसना खराब है, लेकिन यह कहना कि चीनी हमला नहीं करेंगे कौन सी अकलमन्दी है? चीन कभी भी हवाई हमला कर सकता है। मैं माननीय गुप्ता जी की उस दिन की बात पर दाद दूंगा कि उन्होंने साफ कह दिया कि दिल्ली से आर्डर आया था इसलिये हमने यह खाई खुदवा दीं और फिर उसका जवाब प्रधान मन्त्री जी नहीं दे सके। बिलकुल गलत बात है,

[कुंवर श्रीपालसिंह]

जब तक दिल में समाजवाद का नक्शा नहीं उतरेगा, जो समाजवाद का खोल चढ़ाये हैं, और कहने को समाजवादी बनते हैं लेकिन चीन के भाई हैं उनको मैं क्या कहूं ? चीन का समाजवाद . . .

(व्यवधान)

मेरे कहने का मतलब यह है कि समाजवाद आप का भी लक्ष्य है और चीन और रूस का भी लक्ष्य है, लिहाजा समान लक्ष्य होने के नाते कोमल भावना हो ही जाती है। रूस ने कहा भी भारत हमारा मित्र है और चीन हमारा भाई है। जिस वक्त नहर स्वेज का मामला आया और वहां हमला हुआ तो हमने किसी चीज को नहीं सोचा और हमने इंगलैंड को सीधे कन्डेम किया और नासिर का साथ दिया। मगर क्या जब चीन ने हमला किया नासिर साहब के मुंह से एक लफ्ज भी निकला ? अब निकल रहा है। अब तो और बहुत से निकल रहे हैं। जिस समय हमला हुआ उस समय सब यही सोच रहे थे, गया भारत। यहां तैयारी हो रही थी हुकूमत सम्हालने के लिये, घड़ी में ट्रांसमीटर लगाये हुए लोग पाखाने में से पीकिंग को खबर पहुंचाते हैं। मद्रास में कल सवेरे जो बातें हुईं वह शाम को पीकिंग रेडियो से अनाउन्स हुई। यहां बैठे हुए लोग खबर देते हैं और कहने को कहते हैं गुप्ता जी की और नेहरू जी की जय, उनके हाथ मजबूत करें। मैं कहता हूं नेहरू जी का दिल मजबूत कीजिये। ऐसा मजबूत करेंगे कि दिल भर देंगे। भारत का वह रक्त है जिसके अन्दर इतनी गरमी है कि इनके आका बढ़ते हुए भी पीछे भाग गये। हम उनसे हाथ जोड़ने नहीं गये थे बल्कि हमारे जवानों की एक ठोकर ने चीनियों के दांत खट्टे कर दिये और मजबूरन उनको पीछे भागना पड़ा और उन्हीं के साथ कम्युनिस्ट पार्टी को भी जाना पड़ेगा, आप यहां इस देशद्रोहिता के साथ रुक नहीं सकते। इसलिये मैं कहता हूं कि राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में जिन चीजों को कहा अगर वास्तव में सरकार उन पर काम करना चाहती है तो हमारे इन दोस्तों को अपनी बढ़िया हवेली में एमरजेंसी तक के लिये पहुंचा दें ताकि जो हम बात यहां करते हैं वह चाऊ तक न पहुंच पाये। अगर ऐसा किया जाय तब तो मैं समझूं कि कुछ सुरक्षा की बात है अन्यथा सुरक्षा के नाम पर गांव में असुरक्षा फैल रही है और इनका काम बन रहा है। इस तरह बन रहा है कि सुरक्षा के नाम पर आप के अधिकारी जबरदस्ती पैसा वसूल कर रहे हैं, डंडेबाजी कर रहे हैं और कम्युनिस्टों को मौका मिल रहा है, यह जा कर वहां कहते हैं, देख लेओ, कांग्रेस क्या कर रही है। अरे चीनी आयेंगे तो वह तुमको चीनी का शरबत पिलायेंगे। इसलिये काम इन्हीं का बन रहा है। इसलिये इस सुरक्षा को जरा दिल से, बहादुरी के साथ पकड़ कर चलिये; फिर देखें यह और इनके चीनी क्या करते हैं।

श्री नवलकिशोर—

मान्यवर, महामना राज्यपाल के अभिभाषण के लिये जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश है मैं उसका समर्थन करता हूं। इस सम्बन्ध में जो भाषण हुए, विशेष कर नेता विरोधी दल और जो आगे चल कर नेता विरोधी दल बनने की आशा करते हैं उनके, इन दोनों के भाषणों को गौर से सुना और उनके पिछले भाषणों को भी पढ़ा तथा जो संशोधन पिछले साल और इस साल पेश किये गये थे उन को भी पढ़ा। वे सब करीब करीब एक से ही हैं। मुझे दुख है कि नेशनल इमरजेंसी ने हमारे नेताओं के दिमाग में तबदीली पैदा नहीं की, जहां वह पहले थे वहीं आज भी हैं।

संशोधनों में कहा गया है कि गवर्नर महोदय ने यह नहीं कहा, वह नहीं कहा। तो जो बातें हैं ही नहीं, जिनका अस्तित्व ही नहीं है उनका कैसे राज्यपाल महोदय चर्चा करते ? और अगर उनका समावेश कर भी दें तो भाषण का कोई अर्थ ही नहीं निकलेगा, मैं समझता हूं इससे एबसर्ड बात कोई बनेगी ही नहीं अगर सब का समावेश कर दिया जाय और इनमें जितने कंट्राडिक्शन्स हैं वे इस बात का सबूत हैं कि इस प्रदेश की, अपोजीशन माटले (motley) आफ ग्रुप्स है और माटले आफ कन्फ्यूज्ड आइडियाज है।

एक सदस्य—

इसका हिन्दी अनुवाद कर दीजिये।

श्री नवलकिशोर—

एक कहावत है कि कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा और भानुमती ने कुनबा जोड़ा। जहां तक दुबेजी का सम्बन्ध है, उनकी सारी स्पीच इन दो बातों पर थी कि देश के अन्दर जो राष्ट्र विरोधी तत्व हैं उनका दमन नहीं हुआ। राष्ट्र विरोधी तत्व कौन से हैं, उसमें दुबे जी ने बताया कि सन् १९४२ में कम्युनिस्ट पार्टी ने देश में क्या पार्ट प्ले किया। इससे उनका इशारा यह था कि हिन्दुस्तान में कम्युनिस्ट राष्ट्र विरोधी तत्व हैं। मुझको पता है कि सन् १९४२ में कम्युनिस्ट पार्टी ने क्या किया। मैं उनका वकील भी नहीं हूं और मुझे उनकी बहुत सी बातें पसन्द भी नहीं हैं। मगर आज जो जनसंघ के अन्दर बैठे हुये हैं और स्वतंत्र पार्टी में बैठ हुये हैं, सन् १९४२ में अधिकांश लोगों ने क्या पार्ट प्ले किया यह मुझे मालूम ह। जहां तक मेरा ताल्लुक है, सन् १९४२ में किस का क्या रेकार्ड था उसका पोस्ट मार्टेम करने के लिये मैं नहीं बैठा हूं।

दूसरे, माननीय उग्रसेन जी ने अंग्रेजी में दो कोटेशन्स पढ़े, एक तो 'प्रावदा' का और दूसरा ख्रुश्चेव का। उन्हों ने ठीक ही पढ़े होंगे, लेकिन जो लेटेस्ट स्टेटमेंट आया है उसको देखने की कृपा करें जिसमें ख्रुश्चेव साहब ने कहा है कि जो चीनी ऐग्रेशन हुआ है इंडिया पर यह अनप्रोवोक्ड है और उन्होंने कई पेज का एक नोट भेजा है जिसमें कहा है कि हम हिन्दुस्तान के साथ जितने हमारे कमर्शल और मिलिटरी कमिटमेंट्स हैं उनको पूरा करने जा रहे हैं।

श्री उग्रसेन—

वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के पत्र में ऐसा लेख निकला है। उसी को आप बतला रहे हैं?

श्री नवलकिशोर—

मेरे कहने का मंशा यह है कि पूर्ण कम्युनिस्ट पार्टी को मैं अपनी जगह पर राष्ट्र विरोधी मानने के लिये तैयार नहीं हूं। यह हो सकता है कि कम्युनिस्ट पार्टी में, जनसंघ में, स्वतंत्र पार्टी में, किसी भी पार्टी में कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जिनको राष्ट्र विरोधी कहा जा सकता है लेकिन किसी एक पार्टी को यह कह देना कि राष्ट्र विरोधी है, यह बात मुनासिब नहीं है और माननीय उग्रसेन जी को चाइनीज कम्युनिज्म और सोवियट कम्युनिज्म में अन्तर करना पड़ेगा क्योंकि आज दुनिया अन्तर कर रही है। अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो लोग यह समझेंगे कि माननीय उग्रसेन जी अध्ययन नहीं करते हैं और दुनियां में जो हालात चल रहे हैं उनका उन्हें कोई ज्ञान नहीं है।

एक बात और कहना चाहता हूं। मेरे मित्र भानुप्रताप जी ने यह फरमाया कि उनको प्रतिक्रियावादी कहा जाता है और उनकी तादाद बढ़ती जा रही है। तादाद बढ़ कर जिस तरह की एकता विरोधी पक्ष में है उसका नमूना तो हम देखते हैं। अभी श्रीपाल सिंह जी की स्पीच के दरमियान जो इंटरप्शन्स हुये उनको हमने देखा। एक बात सही है कि इस एमरजेन्सी के नाम पर जो राइटिस्ट रिऐक्शन रहा है उसने अपने आपको कंसालिडेट करने की कोशिश की या और जो उनकी कांस्पिरेसी देश में थी और अब तक है उसको हम सब जानते हैं, हमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। मगर तकलीफ तब होती है जब मेरे दोस्त उग्रसेन जैसे आदमियों की जिनकी यह कल्पना हो कि हिन्दुस्तान में समाजवाद की स्थापना हो और वह राइटिस्ट रिऐक्शन के हाथ में एक खिलौना बन जायं। मान्यवर, मैं उन्हें बता देना चाहता हूं कि जब यूरोप में हिटलर की ताकत बढ़ी थी उस सम्बन्ध में हिस्ट्री ने यह निर्णय दिया कि वहां की सोशलिस्ट पार्टी की कमियों और गलत पालिसीज की वजह से फासिज्म और नाजीज्म का उदय हुआ था।

श्री उग्रसेन---

उनका सोशलिज्म नेशनल सोशलिज्म था। हमारा सोशलिज्म हिटलर का सोशलिज्म नहीं है ।

श्री नवलकिशोर---

मान्यवर, मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूं माननीय उग्रसेन जी से कि वे हिन्दुस्तान में इतिहास की पुनरावृत्ति अपने कार्यों से न होने दें। मेरी इतनी उनसे दरख्वास्त है।

मान्यवर, हिन्दी की बात आयी। मैं केवल एक दो बात कहना चाहता हूं। हमारे यहां यूनाइडेड सोशलिस्ट पार्टी बनी है। इसका भविष्य भगवान ही जानता है। इसमें प्रजा सोशलिस्ट और सोशलिस्ट पार्टी हैं। यू०पी० की प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी श्री चन्द्रशेखर जी ने एक स्टेटमेंट अखबारों में दिया है। यदि आप आज्ञा दें तो बता दूं। उन्होंने कहा है कि भाषा के फैनेटिक्स, हिन्दी भाषा की सेवा नहीं कर रहे हैं और उसकी आड़ में संसदीय जनतंत्र के हित करने वाले इंस्टीट्यूशन्स को ही उखाड़ने की चेष्टा करते हैं। यह सब काम उनके हाथ मजबूत करने वाले नहीं हैं। आपके जिम्मेदार आदमी का स्टेटमेंट मैं बता रहा हूं ।

श्री उग्रसेन---

देखिये, हम उनके बयान की उतनी भर्त्सना करते हैं जितनी कोई राष्ट्र प्रेमी कर सकता है।

श्री नवलकिशोर---

मान्यवर, मैं यह साबित करना चाहता हूं कि यह पार्टी कितने सेंडी सौइल पर खड़ी हुई है। यह प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी के स्टेटमेंट की ही भर्त्सना कर रही है।

श्री चन्द्रबलीसिंह (जिला देवरिया)---

वह यूनाइटेड सोशलिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी नहीं हैं ।

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय चन्द्रबली सिंह जी, यह आपको शोभा नहीं देता है। यह बात बहुत गलत है कि जब कोई साहब भाषण दे रहे हैं तो आप लोग ४-४ आदमी खड़े हो जायं।

श्री उग्रसेन---

श्रीमन्, यह बात भी बहुत गलत है कि किसी पार्टी के बारे में माननीय राज्यपाल के सम्भाषण में कुछ कहा जाय। यह गलत बात है। हमारे दल में क्या हो रहा है, उससे उनका कोई मलतब नहीं है ।

श्री उपाध्यक्ष---

आप उनको कंट्राडिक्ट कर सकते हैं जब आपको मौका मिले ।

श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)---

श्रीमन्, मंत्री जी का पी०एस०पी० के सेक्रेटरी का नाम लेना और चन्द्रबली सिंह जी का कुछ कहना इर्रेलेवेंट है। उनका प्रेम हिन्दी से है और रहेगा। मुझे दुख हो रहा है कि मंत्री जी ...

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय बलवान सिंह जी, आप विराजिये। जब आपको मौका मिले तो कहियेगा।

श्री बलवानसिंह---

श्रीमन्, मंत्री जी का किसी पार्टी के सेक्रेटरी का नाम लेकर कुछ कहना ठीक नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष---

वह तो एक स्टेटमेंट है। उसको मैंने भी पढ़ा है, उन्होंने भी पढ़ा है। उसी को वे कह रहे हैं ।

श्री नवलकिशोर--

मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है। केवल सवाल इसकी प्रगति का है। मैं माननीय उग्रसेन जी से किसी माने में जहां तक हिन्दी के प्रति श्रद्धा और स्नेह की बात है, अपने को कम नहीं समझता हूं। लेकिन हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये कि जिस लक्ष्य पर हम पहुंचना चाहते हैं, उसमें कुछ बाधा पैदा हो जाय। मान्यवर, भद्दी बात थी जो मदरास में हुई और जिस तरह से वहां देश के नेता श्री लोहिया का स्वागत हुआ पर वह इस बात का सबूत है कि किस तरह की प्रतिक्रिया होती जाती है।

दूसरी बात दुबे जी ने यह कही कि जो चन्दा इकट्ठा किया गया है उसमें बड़ी सख्ती हुई है, हो सकता है कि कहीं कुछ हुई हों, मैं नहीं जानता। सात करोड़ की स्टेट में कहीं एक बात हो गई हो। लेकिन सरकार की तरफ से स्पष्ट आदेश है कि चंदा वालंटरी होगा और जहां से शिकायत आती है, जांच की जाती है। विरोधी दल के नेताओं की बहुत शिकायत है। मैं यह नहीं कहता कि उन्होंने सहयोग नहीं दिया होगा। लेकिन जहां मैंने दौरा किया, चन्द जगहों को छोड़कर, जो सहयोग और सहायता की आशा इनसे थी वह विरोधी दलों से प्राप्त नहीं हुई बल्कि उसके बदले में हर तरह का क्रिटिसिज्म मिला। इससे देश को कोई शक्ति मिलने वाली नहीं है, मैं यही कहना चाहता हूं। एक बात उन्होंने यह कही कि हमारे जो बार्डर हैं वहां की इंटरनल सीक्योरिटी को बड़ा खतरा है। मेरे मित्र जगदीशप्रसाद जी ने कहा था कि एक तरफ वह यह भी मांग करते हैं कि इमर्जेन्सी को समाप्त किया जाय और दूसरी तरफ वह खतरा बताते हैं। मैं उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि बार्डर एरियाज की इंटरनल सीक्योरिटी को कोई खतरा नहीं है। वहां की जनता, वहां के जवान जागरूक हैं और सरकार पूरी तरह से जागरूक है।

मान्यवर, एक बात और कही गयी। दुबे जी ने यह कहा कि फ्रीडम आफ प्रेस पर भी कुठाराघात किया गया है। मैं जानता नहीं कि उनको कोई स्वप्न दिखायी दिया। मैं आज इस मौके पर हिन्दुस्तान के प्रेस को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने नेशनल इमर्जेन्सी के अन्दर जो उनका कर्त्तव्य था देश को जागृत करने में, चेतना पैदा करने में, पूरा सहयोग दिया है। यह शिकायत तो हो सकती है कि बहुत से अखबार, जिसको एलो जर्नलिज्म कहते हैं, जितना उन पर नियंत्रण होना चाहिये था उतना नहीं हुआ। लेकिन प्रेस की फ्रीडम को हमने कहीं काटा हो यह बिल्कुल गलत है।

एक बात और कही गयी कि मंत्रिमंडल में कमी की जाय। यह मांग तो जब से मंत्रिमंडल बना है तब से चली आ रही है, यह एक पालिटिकल स्टण्ट है। इमर्जेन्सी की इसमें कोई खास वजह हो, ऐसी बात नहीं है।

एक बात और कही गयी कि इकोनामी की जाय और प्लान के ऊपर खर्चों में कमी की जाय। मैं इस बात का हामी हूं कि इकोनमी होनी चाहिये और सरकार ने बराबर इस बात की चेष्टा की है। यह बात दूसरी है कि सरकार ने ८० लाख की इकोनामी की हो और आप कहते हों कि ९० लाख की हो सकती है। इकोनामी कमेटी बैठी हुई है। उसमें विरोधी पक्ष के भी आदमी हैं कोई टेंजिबिल बात आये तो समझ में आती है। अब तक ८०-८५ लाख की इकोनामी हो चुकी है। प्लान के ऐसे आइटम्स जिनसे वार एफर्ट्स में सीधी सहायता नहीं मिलेगी, उनको काटने की चेष्टा की गयी है।

श्री उग्रसेन--

मंत्री जी बता दें कि मंत्रिमंडल में मितव्ययिता क्यों नहीं की जा रही है।

श्री नवलकिशोर--

दुबे जी ने यह कहा कि जिनको एक हजार से ज्यादा तनख्वाह मिलती है, वह अपनी अधिक आय नेशनल डिफेंस फंड के अन्दर दें। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है अगर साथ ही साथ इतना और जोड़ दें कि सारे प्रदेश में जितने लोगों की आमदनी एक हजार से ज्यादा हो वह अपनी आमदनी जो एक हजार से ज्यादा हो सब नैशनल डिफेंस फंड में दे दें। मैं उनसे सेंट पर सेंट इत्तफाक करता हूं, इस संशोधन के साथ।

[श्री नवलकिशोर]

एक बात और कही गयी प्लांड डेवलपमेंट के सम्बन्ध में। वैसे श्रीपालसिंह जी भी मुझसे अकेले में सहमति प्रकट करते हैं मगर न जाने क्यों जन संघ और स्वतंत्र पार्टी को नियोजन का हौआ बैठ गया है। वह यह समझते हैं कि प्लांड इकोनामी से उनके सारे मंसूबों का ढेर हो जायगा। उनका कहना है कि इकोनोमिक डेवलपमेंट लड़ाई के नाम पर नहीं होना चाहिये। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आजकल की लड़ाई केवल सैनिकों की लड़ाई नहीं है। किन्तु आपकी एकोनामिक बेस भी मजबूत होनी चाहिये। उसको मजबूत करने के लिये एकोनामिक डेवलपमेंट होना आवश्यक है, प्लानिंग का होना आवश्यक है, आपको पसन्द आये या न आये हिन्दुस्तान में प्लानिंग भी चलेगी शान के साथ और वार एफर्ट्स भी साथ-साथ चलते रहेंगे। आप चाहते हैं कि देश में आर्थिक कमजोरी पैदा हो और आप जो सामन्तशाही को वापस लाने का स्वप्न देखें तो अब वह वापस होने वाली नहीं है।

एक बात यह कही गई कि पी०अ.र०डी० और होम गार्ड जो हैं वह क्या कर रहे हैं। मैं दुबे जी की इत्तला के लिये बता दूं कि देहात में और शहरों में प्रांतीय रक्षा दल और होम गार्ड्स का जो निर्माण किया जा रहा है लाखों की तादाद में, वह हमारी डिफेंस की सेकेंड लाइन बनने जा रहे हैं। इनके तीन काम होंगे, शहरों और गांवों की रक्षा करना, उत्पादन को बढ़ाना और तीसरा यह है कि लोगों में गलतफहमी न पैदा हो, इसके लिये उनको जनरल एजूकेशन देना। इसलिये जहां उनको फौजी तालीम दी जायगी वहां हमारी कम्युनिटी डेवलपमेंट मिनिस्ट्री जो है उसकी योजनाओं और स्कीम्स का ज्ञान उनको कराया जायगा और उनसे उनको अवगत कराया जायगा ताकि देहात में जाकर उनको वह पूरा करें।

मान्यवर, एक बात यह कही गई कि चुनावों में बड़ी देर की जा रही है। यह हमारा विषय नहीं है क्योंकि जो एलेक्शन कमीशन है उसने यह फैसला किया है कि इमर्जेन्सी में चुनाव नहीं होंगे। अगर वह फैसला करता कि चुनाव होंगे तो उत्तर प्रदेश की सरकार उसमें कोई बाधा डालने वाली नहीं थी। इसलिये जो विषय हमसे सम्बन्ध नहीं रखता उसके लिये भी हमें दोषी बतलाया गया।

मेरे दोस्त ऊदल जी ने एक बात जरूर कही कि जो बड़े आदमी हैं वह चन्दा काफी मात्रा में नहीं दे रहे हैं। यह बात सही है। हाउस में भी कई मर्तबा इस बात को माननीय मुख्य मंत्री जी ने और और लोगों ने भी कहा है। सरकार, प्रदेश की भी और केन्द्र की भी, इस बात को सोच रही है कि इस सिलसिले में क्या-क्या बातें सम्भव हो सकती हैं।

मान्यवर, गोरखपुर फार्यारिंग के बारे में कुछ बात कही गई। मैं उन बातों का जवाब दे चुका था, और अधिक नहीं कहना है। (व्यवधान) मेरे भाई उस बात से मुतमईन हो गये, इसलिये अब और ज्यादा कहने की जरूरत नहीं रही। केवल इतना ही कहना चाहता हूं—(व्यवधान) (श्री उग्रसेन के कुछ कहने पर) मान्यवर, एक बात की मुझे बड़ी खुशी है कि उग्रसेन जी जैसे आदमी को भी यहां बैठते-बैठते कुछ इंसपिरेशन होने लगा पोयटिक होने का कुछ शायराना खयाल उनको गोरखपुर फार्यारिंग से पैदा हुआ!

दुबे जी ने फरमाया कि आप सोने से उन मरे हुये जवानों की विधवाओं को तौलते तो ज्यादा इंसपिरेशन मिलता, बजाय मंत्रियों को तौलने के। मुझे यह नहीं मालूम कि उत्तर प्रदेश के किसी नेता या मंत्री का वजन सोने से किया गया हो। यह बात सही है कि देवरिया ने दो मन सोना दिया था, लेकिन मैं पूछता हूं कि क्या पाबन्दी थी माननीय दुबे जी के लिये .....

श्री उग्रसेन—

मैं माननीय मंत्री जी को बता दूं कि देवरिया के दो मन सोने में ५० सेर सोना खरीद कर दिया गया था। अगर मंत्री जी चलें तो १६ सेर सोना अभी पकड़वा सकता हूं।

श्री नवलकिशोर--

मान्यवर, मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या पाबन्दी थी दुबे जी के ऊपर। उन्होंने सोना इकट्ठा करके जवानों की विधवाओं को तौलकर सुरक्षा में देने की स्वयं कोशिश कोई की ? तो खुद तो कुछ न कीजिये और हमको उपदेश दीजिये कि यह नहीं किया, वह नहीं किया। जनता का अधिकार है कि वह सोना दे, किसको दे, किस तरह दे, यद्यपि मैं यह बता दूं कि किसी को सोने से अपना वजन कराने की कोई इच्छा नहीं है। इसको न हमारे मुख्य मंत्री जी ने पसन्द किया है और न प्रधान मंत्री जी ने पसन्द किया है।

मान्यवर, बहुत छोटी-सी बात एक और कही गई। रिहन्द बांध का जो उद्घाटन हुआ कहा गया कि उसमें इंगलैण्ड के हाई कमिश्नर और अमेरिकन एम्बैसेडर गये और क्या-क्या बातें कही गई। मैं एक बात कहना चाहता हूं और बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि इंगलैण्ड के हाई कमिश्नर और अमेरिका के एम्बैसेडर ने उत्तर प्रदेश की सरकार का एक गिलास पानी भी नहीं पिया। अपने डकोटा में वह आये। उनकी मोटर वहां पहुंच गई थी। वह बिड़ला जी के गेस्ट थे। मान्यवर, नेशनल एम्बैसडर जो दूसरे देशों के हैं उनकी एक मान मर्यादा होती है। उनके लिये छोटी बात कहकर इस तरह से छींटाकशी करना मुनासिब नहीं है। जहां तक हम लोगों का सम्बन्ध है, हम तो उनके शिकार हैं ही। जायज, नाजायज हमारे ऊपर वह ढेले फेंकते रहते हैं और उन ढेलों को खाने के हम आदी हो गये हैं।

श्री बलवानसिंह--

कुछ मंत्री इस्तीफा देना चाहते हैं। उनको इस्तीफा देने दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष--

आप विराजिये। आप क्यों इसकी फिक्र करते हैं ?

श्री नवलकिशोर--

जहां तक इस्तीफे का सम्बन्ध है, मैं समझता हूं कि बलवानसिंह जी को असेम्बली से इस्तीफा देने की पूरी आजादी है। वह इस्तीफा दें तो २०० रुपये की बचत हो जायगी।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मेरे भाई उग्रसेन जी ने यह कहा कि प्रोहिबिशन के ऊपर जो आपकी पालिसी है उससे महात्मा गांधी जी की आत्मा को बड़ी ठेस पहुंचती होगी। भगवान जानता होगा कि उनके कारनामों से उनकी आत्मा को ठेस पहुंचती होगी या हमारी पालिसी से। हमने प्रोहिबिशन को खत्म नहीं किया है केवल उसका तरीका माडिफाई किया है। वह तरीका सारे देश के लिये किया गया है और सारे प्रदेश के लोगों को लाभ होगा। यदि आप उसका टोटल निकालेंगे तो उससे फायदा ही नजर आयेगा। और कुछ सूबों में भी उसी तरह से हो रहा है।

मेरे दोस्त भानुप्रताप सिंह जी को बड़ी शिकायत थी हिन्दुस्तान की विदेश नीति की। उनको इससे बड़ी सान्त्वना मिली कि इसकी वजह से उनकी तादाद बढ़ती जा रही है और बढ़ी है। इस सम्बन्ध में केवल एक बात बतलाना चाहता हूं कि आज भी हिन्दुस्तान तटस्थ ही रहेगा बावजूद आपकी तमाम कोशिशों के। आज हर समझदार आदमी हिन्दुस्तान की फारेन पालिसी के ठोसपन को महसूस करने लगा है। यह बात साबित हो चुकी है। नेशनल इमरजेन्सी और चाइनीज एग्रेशन के इम्तहान के वक्त में हमारी फारेन पालिसी अपनी जगह पर कामयाब साबित हुई है। आज आप जो तमाशा देख रहे हैं चीन और रूस का वह इसी की एक सफलता है। तमाम देशों से जो हमको सपोर्ट मिला है वह उसका ही नतीजा है।

मान्यवर, बहुत-सी बातें जो मैंने कहीं उनका बहुत ज्यादा सम्बन्ध इस सम्बोधन से नहीं था, लेकिन वे कही गईं इसलिये उनका जवाब दिया गया। नेशनल इमरजेन्सी को वापस लेने की बात बेबुनियाद है और मुनासिब भी नहीं है कि उसको इस समय विदड्रा किया जाय। इस मौके पर जिस एकता का, चाहे अन्दर से हो या न हो, लेकिन बाहरी तौर पर मेहरबानी

[श्री नवलकिशोर]

करके राष्ट्रीय शक्ति को बढ़ाने के लिये जो आपने प्रदर्शन किया उसको कायम रखें। नेशनल इमरजेंसी के अन्दर जो जिम्मेदारी उत्तर प्रदेश के ऊपर बार्डर स्टेट होने के नाते आई है उसको आप महसूस करें। मैं आशा करता हूं कि विरोधी दल के नेता तथा सदस्य उस अपनी जिम्मेदारी को महसूस करेंगे और अपना सहयोग देंगे जिससे हमारा उत्तर प्रदेश आगे बढ़े और साथ ही साथ सैनिक शक्ति भी हम मजबूत कर सकें।

श्री झारखंडेराय (जिला आजमगढ़)—

मान्यवर, जो संशोधन हमारे दल की ओर से पेश किया गया है मैं उसकी ताईद करने के लिये खड़ा हुआ हूं। हमारा संशोधन हमारी विचारधारा का दर्पण है।

बड़ी शांति से मैंने सभी भाइयों के भाषणों को सुना और उन भाषणों में निहित राजनीति, विचारधारा और राजनीतिक एवं वर्ग सम्बन्ध को भी समझने की कोशिश की, पोलिटिकल एलाउन्सेंस और पोलिटिकल लीनिंग्ज। मैंने देखा कि दुबे जी और उग्रसेन जी एक ही भाव, एक ही भाषा और एक ही वाणी को प्रकट कर रहे हैं। वे एक मार्ग पर चल रहे हैं। मैंने महसूस किया कि फासिज्म की काली अंधेरी ताकतें और भारत की समाजवाद की शक्तियां आज एक रास्ते पर जा रही हैं। डाक्टर लोहिया और डाक्टर रघुवीर जब एक साथ मंत्रणा करते हैं, माननीय उग्रसेन जी और माननीय दूबे जी को जब मैं एक ही भाषा और एक ही वाणी बोलते हुये देखता हूं तो एक बड़ी गहरी चोट दिल को लगती है। बड़ा दुख होता है कि जिस शानदार समाजवादी आन्दोलन के संस्थापक पितामह, आचार्य नरेन्द्र देव जी रह चुके हैं वह आज फासिस्ट ताकतों के साथ गठबंधन करता है। आजादी की लड़ाई के सेनानी और सिपाही और राष्ट्रीय आन्दोलन के समय लापता तत्व, उनका गठबंधन, कम्युनिस्ट अंध विरोध उन दोनों को अंधा कर चुका है और लगता है कि एक भयानक गर्त में, जो गर्त संसार के अनेक देशों में पैदा हुआ और जिसमें अनेक कम्युनिस्ट विरोधी तत्व विलीन हो चुके हैं, वही हस्र इन का हो रहा है और उस गर्त में ये विलीन हो रहे हैं। यह बड़ा दुखदायी होगा समाजवादी आन्दोलन के लिये।

मान्यवर, देशभक्त कौन है? देशभक्ति क्या है? सबकी परिभाषायें सुनने को मिलीं। बात देश भक्ति की, कोरी वाणी देशभक्ति की लेकिन काम सब उसके उलटे। मान्यवर, हमारा प्रदेश सीमान्त खंड है, हमारी सीमायें नैपाल और चीन दोनों से ही मिली हुई हैं। हमारे प्रदेश की एक विशेष भूमिका पूरे देश की पृष्ठभूमि में है। आज हमारा सुप्रीम नेशनल टास्क, आज हमारा मुख्य राष्ट्रीय कर्त्तव्य डिफेंस है, सुरक्षा है और हमारे सारे कर्त्तव्य उसी से संचालित होने चाहिये। इस बात की ध्वनि राज्यपाल जी के अभिभाषण में मिलती है और उन्होंने सुरक्षा को काफी महत्व दिया है।

माननीय कुंवर श्रीपाल जी ने जो भाषण दिया उसे सुनकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। उनको अगर चीनी जनता और चीन के वर्तमान शासकों में भेद नहीं दिखाई पड़ता तो यह उनका दृष्टिदोष है। कुछ लोगों को दिन में दिखाई नहीं पड़ता तो क्या किया जाय? मान्यवर, चीनी जनता और चीन के वर्तमान शासकों में भेद है और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो बात शांतिनिकेतन में कही है वह उसी बात का द्योतक है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने सफाई के साथ कहा है कि यह युद्ध चीन द्वारा आक्रमण है और यह वास्तव में हमारे देश की पीपुल्स वार है, यह जनयुद्ध है, यह भारत पर लादा गया है। भारत ने युद्ध नहीं शुरू किया। यह इम्पीरियलिस्ट वार नहीं है, टम्बरेश्वर महाराज इस बात को समझ लें। कल के उनके तर्क निराधार हैं। यह हिन्दुस्तान का जनयुद्ध है, अतः सिविल वार का प्रश्न कहां है? हिन्दुस्थान की कम्युनिस्ट पार्टी उसी जांफिशानी के साथ देश की अन्य जनता के साथ रक्षा के कार्य में जुटी हुई है और अंत तक जुटी रहेगी। हम कम्युनिस्टों को राष्ट्रपिता के हत्यारों से उनके राष्ट्रपिता की हत्यारी विचारधारा से देशभक्ति का सर्टिफिकेट नहीं चाहिये। हम उसको चाहते भी नहीं हैं। जनसंघ तथा जिन

शोषक वर्गों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, यदि हमारी प्रशंसा करें तो हमें अपने भीतर भी बुर्जुआ दोष आजाने का संदेह होगा ।

(इस समय १ बजे सदन स्थगित हुआ और २ बजकर ८ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री केशव गुप्त, के सभापतित्व में सदन की कार्यवाही पुनः आरम्भ हुई ।)

श्री झारखंडेराय---

मान्यवर, मैं जनसंघ और सोशलिस्ट पार्टी के नापाक गठबंधन की चर्चा कर रहा था।

श्री रतीपाल (जिला रायबरेली)---

मैंने उस समय तक स्पष्टीकरण मांगा था। माननीय झारखंडे राय जी जरा स्पष्ट कर दें कि पूज्य महात्मा गांधी के हत्यारों से उनका किसके लिये प्रयोजन है ताकि आगे चल कर बात साफ हो सके ।

श्री झारखंडेराय---

मैं अपने भाई के भ्रम को दूर कर दूंगा । यह गठबंधन हिमालय बचाओ सम्मेलन करता फिर रहा है। यह हिमालय की रक्षा करने की बात कांग्रेस और कम्युनिस्ट, दोनों को अलग कर के सोचना है। देश की सब से बड़ी पार्टी जिसके हाथ में शासन की बागडोर और सुरक्षा का केंद्र सरकार है उनको अलग कर के हिमालय की सुरक्षा की बात सोचता है और उसकी कल्पना कर रहा है। मान्यवर, सोशलिस्ट पार्टी अपने वजूद को बचाने की अंतिम लड़ाई जनसंघ के साथ गठबंधन में देखती है । यह मेरी मार्मिक अपील है, समाजवादी आन्दोलन के विधाताओं को कि आज की इस पृष्ठभूमि में, देश की राजनीति के बदले हुए दौर में, चीनी आक्रमण को रोशनी में कि किसकी विचारधारा किस को खींच रही है और किसकी ओर खींचा जा रहा है, यह आज सोचना होगा । आज जनसंघ की विचाराधारा समाजवादी आन्दोलन को अपने पीछे खींच रही है। यह देश और उस आन्दोलन का दुर्भाग्य है।

चीनी आक्रमण ने हमारे देश में जो परिस्थिति पैदा की है उसके बारे में हमारे कई साथियों ने जिक्र किया है। जाहिर है, मान्य है कि प्रारम्भिक सैनिक हार हमारी हुई, लेकिन राजनीतिक, कूटनीतिक और नैतिक हमारी जीत हुई इस बात को हमें मानना चाहिये । यही वजह है कि चीन के वर्तमान शासक और कम्युनिस्ट पार्टी का वर्तमान नेतृत्व, आज दुनिया के सामने ही नहीं, वरन् अपने कम्युनिस्ट आन्दोलन की राजनीति में भी, अलग खड़ा हुआ है तिरस्कृत हो गया है। भारत की राष्ट्रनीति गुट निरपेक्ष और तटस्थ विदेशी नीति की स्पष्ट विजय है। मान्यवर, आज स्वतंत्रता का युग है। गुलामी का युग अब समाप्त हो चुका है। उपनिवेशवाद अंतिम सांस ले रहा है। आज कोई देश किसी देश को गुलाम नहीं बना सकता। चीन की यदि यह कल्पना रही हो या है तो वह कभी पूरी नहीं हो सकती । हमारे यहां यदि किसी प्रकार की ऐसी भावना है कि हम किसी पड़ोसी देश को गुलाम बनायेंगे वृहत्तर भारत की कल्पना कर के तो वह भी कभी पूरी नहीं होगी। आज नन्हें नन्हें मुल्क, जिनकी कभी कोई गिनती नहीं थी, दुनिया के इतिहास में स्वतंत्र हो गये हैं। गुलामी की जंजीरें टूट रही हैं। अफ्रीका के अंधेरे महाद्वीप में भी आज आजादी की रोशनी पहुंच चुकी है, वह उस रोशनी से रोशन हो चुका है। घाना, गिनीं और क्यूबा ऐसे मुल्क आज स्वतंत्र हो रहे हैं। मैं आपको यह स्पष्ट बता देना चाहता हूं कि आज कोई भी देश किसी देश को गुलाम नहीं बना सकता है। इसको हमें नोट करना है।

एक सदस्य---

तिब्बत में क्या हुआ है, इसको भी तो देखिये।

श्री झारखंडेराय---

चीन ने दोहरी गल्ती और अपराध किया है। उसने हमारी सार्वभौम सत्ता पर हमला किया है। उसके इस कृत्य से अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिज्म की प्रतिष्ठा गिरी है। वह कम्युनिस्ट

[श्री झारखण्डेराय]

आदर्श और सिद्धांत से च्युत हुआ है ऐसी स्थिति में हमारी निष्पक्ष और तटस्थ परराष्ट्र नीति की प्रतिष्ठा और बढ़ी है और वह अधिक सफल हुई है। यही वजह है कि हमारे देश की नीति का समर्थन पूंजीपति देश ही नहीं बल्कि कम्युनिस्ट देश भी कर रहे हैं।

औद्योगिक विकास जरूरी है, सुरक्षा व्यवस्था की दृढता के लिये। यदि आर्थिक व्यवस्था हमारी मजबूत नहीं होगी तो हमारे देश में सफल सुरक्षा उद्योग का निर्माण नहीं हो सकेगा। हमारी सुरक्षा व्यवस्था भी कमजोर होगी। यह बात सदैव याद रखनी चाहिये कि किसी भी दूसरे देश से हथियारों को खरीद कर अथवा उधार ले कर कोई भी देश हमेशा अपनी सुरक्षा नहीं कर सकता। अपनी सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है कि हम अपनी बुनियादें स्वयं मजबूत करें ताकि अपने देश की डिफेंस पालिसी को हम सफलतापूर्वक चला सकें। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आज योजना, नियोजित विकास और समाजवादी निर्माण के बिना देश पनप नहीं सकता है। यह प्रत्येक नये आजाद देश के लिये लागू है। यह हो सकता है कि योजना में थोड़ी बहुत हेर-फेर समयानुसार कर दी जाय, प्राथमिकता का क्रम बदल दिया जाय। नई बदली हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये हम थोड़े समय के लिये ऐसा कर सकते हैं। पर किसी भी कीमत पर हम उनको बन्द नहीं कर सकते नहीं तो हमारी सुरक्षा व्यवस्था भी कमजोर हो जायगी।

मान्यवर, इन्डस्ट्रियल पीस की बात महामना राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में कही है। आप देखें कि वह शांति हमारे प्रदेश में और देश में रही है और पिछले ३–४ महीनों में कोई भी औद्योगिक संकट नहीं आया और न हड़तालें ही हुई हैं। हमारे देश के मजदूरों ने बड़ी मजबूती के साथ उन त्रिसूत्री कार्यक्रमों का पालन किया है जो कि ट्रिपारटाइट कान्फ्रेंस में तय हुये थे। उन नियमों का बड़ी ही दृढ़ता के साथ पालन किया गया है जिसके लिये मजदूर धन्यवाद के पात्र हैं, लेकिन पूंजीपति लोग इस संकटकाल में भी उससे फायदा उठाने से बाज नहीं आ रहे हैं।

जनसंघ, और स्वतंत्र पार्टी समाज के जिन वर्गों और तत्वों की नुमाइंदगी करती हैं, वही तत्व देशद्रोह करते हैं और कर रहे हैं। वे ही तत्व ऐसे हैं जिन्होंने सुरक्षा कोष में दिल खोलकर शक्ति अनुसार धन नहीं दिया, सोना नहीं दिया, और न स्वर्ण बांड ही खरीदे हैं, बल्कि खुले आम उसका विरोध कर रहे हैं। उसके विपरीत कीमतें बढ़ाने, धन बटोरने में, मुनाफाखोरी तथा काला बाजार करने में लगे हैं।

मैं इसी सिलसिले में एक चर्चा करूंगा। अभी दिनांक ७ जनवरी को बंगाल की आई०एन० टी०यू०सी० ने अपनी कांफ्रेंस में बड़ी सफाई से कहा है:—

"Meeting expresses grave concern at the attempt of industrialists to exploit the prevailing situation to the detriment to national interest and recorded the employer's presistent policy of non-co-operation with the trade-unions."

मजदूर, किसान बाबू क्लास तथा निम्नमध्यम वर्ग के लोग जो सहयोग इस सुरक्षा कोष और सुरक्षा प्रयासों में दे रहे हैं वह हमको धनी वर्ग से नहीं मिला है। यह बात आज सभी लोग स्वीकार करते हैं। मजदूर काम कर रहे हैं और पूंजीपति तालाबन्दी, शिफ्टबन्दी और छटनी कर रहे हैं। अकेले कानपुर में २००० लूम्स बन्द हैं। कपड़ा और चीनी हमारे प्रदेश के मुख्य उद्योग हैं, उनका उत्पादन इस संकटकाल में घटा है। यह बात नोट करने की है कि ऐसे राष्ट्रीय संकट में और इस अति आवश्यकता की बेला में इन मुख्य वस्तुओं का उत्पादन घटा दिया गया है। इसके लिये वह धनी वर्ग तथा उद्योगपति ही जिम्मेदार हैं। इन वर्गों के प्रतिनिधि लोग आज इस हाउस में और इस देश में किन पार्टियों के रूप में विराजमान हैं? जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी के रूप में।

कृषि उत्पादन के बगैर देश की औद्योगिक स्थिति मजबूत नहीं हो सकती है। आज इस बात की जरूरत है कि हदबन्दी कानून में अपेक्षित परिवर्तन किया जाय। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्परा थी और ऊंची भावना थी कि लैण्ड टु दि टिलर, उसको सही मानों में चरितार्थ करने की आज अधिक जरूरत है। चकबन्दी कानून बहुत अनोखा बना है, वह जिस धीमीगति से चल रहा है, अगर चकबन्दी कायम करने का ढंग इतना लम्बा हो गया तो उसका असर उत्पादन पर बुरा होगा। वह भी उत्पादन कम करने में एक फैक्टर रहा है। अनिश्चितता के वातावरण में किसान दिल से काम नहीं करता है, इसलिये चकबन्दी की प्रक्रिया तेज होनी चाहिये। साथ ही लघु सिंचाई योजनाओं पर विशेषकर, खाद के आधे दाम पर, सिंचाई के रेट कम करने पर भी सोचना पड़ेगा। गूल भी अधिक पक्की बनानी चाहिये ताकि ट्यूबवेल्स का पूरा उपयोग किया जा सके। किसानों के अन्दर उत्पादन की चेतना पैदा करनी पड़ेगी।

वर्ग-शोषण का एक नया रूप इस सुरक्षा प्रयास के सिलसिले में देखने को मिला है। (लाल बत्ती होने पर) मैं चाहूंगा थोड़ा-सा समय और दे दें ?

श्री अधिष्ठाता—

आप कितना समय और चाहेंगे ?

श्री झारखंडेराय—

जितना है उससे ५ मिनट अधिक। धनिक वर्गों ने अपनी आय का, पूंजी का एक फीसदी भी पैसा सुरक्षा कोष में नहीं दिया है। मध्यम वर्ग ने दिया है, भिखमंगों ने दिया है, गरीबों, विधवाओं ने दिया है, कोढ़ियों ने दिया है, लेकिन पैसे वालों ने नहीं दिया। वित्त मंत्री मोरार जी, उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री त्रिपाठी जी, बनारसीदास जी, गुप्ता जी ने शिकायत की, माल मंत्री ने शिकायत की कि हमको तिजोरियां खोलनी पड़ेंगी। मैं चाहूंगा कि उनको खुलवाने के लिये वे उचित कार्यवाही करें। यू०पी० में ४ करोड़ रुपया सुरक्षा कोष में आया है। वह उतना भी नहीं है जितना हमारे प्रदेश के पूंजीपतियों पर बाकी है। पूंजीपतियों पर प्रदेश सरकार का १२ करोड़ से कम टैक्स बाकी नहीं है। उसको वसूल करने के लिये इमरजेंसी पावर्स का कितना इस्तेमाल किया गया ? अब समय आ गया है कि उसका पूरा इस्तेमाल किया जाय।

स्वर्ण-बांड खरीदने की स्कीम असफल हो गयी। स्वर्ण नियंत्रण स्कीम की सफलता बड़ी संदिग्ध है। सोना चला गया जमीन के अन्दर। ऐसी स्थिति में जबकि रिजर्व बैंक आफ इंडिया की रिपोर्ट है कि ४३ अरब का छिपा सोना हमारे देश में है, केवल २० लाख के स्वर्ण-बांड खरीदे गये और ७५ लाख मूल्य का सोना चन्दे के रूप में मिला है। कुल मिलाकर १ करोड़ भी नहीं होता है। मैं चाहूंगा कि इमरजेंसी पावर्स का पूरी तरह से इस्तेमाल सरकार इस विषय में भी करे।

साधन की समस्या गम्भीर है। इसी हाउस के अन्दर गत सत्र में किसान पर चवन्नी बढ़ाई गयी, हमारी पार्टी ने समर्थन किया। देश की सुरक्षा के, सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सवाल के साथ गरीब किसान अपने को जुड़ा हुआ महसूस करे इस भावना से ही हमारी पार्टी ने समर्थन किया। हमने समर्थन किया इस विश्वास के साथ भी कि धनिक वर्ग भी पैसा देगा, लेकिन उसने नहीं दिया। मान्यवर, कोई इंडायरेक्ट टैक्सेशन नहीं लाना चाहिये, डायरेक्ट टैक्स लगे अमीरों पर। इससे साधन पूरा हो सकता है। गरीब जनता पर शक्ति से अधिक बोझा पड़ गया तो उनका मनोबल टूटेगा।

इकोनामी की बात बहुत कही गयी है। मैं चाहूंगा कि इकोनामी पर मजबूत कदम उठाये जायं और सरकार ने पिछले तीन महीनों के अन्दर इकोनामी से क्या मितव्ययिता की है उसके आंकड़े यहां पेश किये जायं।

मिनिस्ट्री के आकार की बात है। मैं बहुत जोर नहीं देता, लेकिन अगर सरकार समझती है कि शासक पार्टी के अन्दर के संकट के बढ़ने का डर नहीं है तो वह आकार कम कर सकती

[श्री झारखण्डेराय]

है। इससे जनता पर नैतिक असर अच्छा ही पड़ेगा। मिनिस्ट्री के लोग इतनी कार्य-क्षमता दिखलावें कि जिससे बड़े आकार का कुछ औचित्य जान पड़े।

मान्यवर, राष्ट्रीयकरण का प्रश्न साधनों के साथ जुड़ा हुआ है। बिजली कम्पनियों के साथ-साथ चीनी उद्योग का भी राष्ट्रीयकरण नितांत जरूरी है ताकि इस साधन समस्या का समाधान किया जा सके। (लाल बत्ती जलने पर) मुझे थोड़ा समय और दे दिया जाय।

श्रीमन्, इस राष्ट्रीय संकट के समय देश की प्रतिक्रियावादी पार्टियों ने अच्छा दलगत फायदा उठाया है। जनसंघ उसमें सबसे पहली पार्टी है। ऐसे समय में जनसंघ ने नेहरू जी और सरकार को बदलने की कोशिश की। उन्होंने वार टाइम लीडर और शांति काल के नेता का प्रश्न उठाकर नेहरू जी को हटाने का प्रयत्न किया। हिन्दुस्तान की तमाम प्रगतिशील मूलभूत राष्ट्रीय नीतियों पर उन्होंने हमला किया। देश की समाजवादी विचारधारा पर हमला करने का उन्हें मौका मिला और उन्होंने इसका इस्तेमाल किया। कम्युनिस्टों पर, आक्रमण के बहाने देश की सभी प्रगतिशील विचारधाराओं पर हमला किया, इस खतरे से देश को सावधान रहना है।

श्री अधिष्ठाता---

समय समाप्त।

श्री जे०पी० मिश्र (जिला हरदोई)---

मान्यवर अधिष्ठाता महोदय, महामान्य महामहिम के अभिभाषण के संबंध में श्री नौरंगलाल ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया है उसके समर्थन में मैं खड़ा हुआ हूं। श्रीमन्, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण में जितनी भी आवश्यक बातें थीं उन सभी को सूक्ष्म रूप से उसमें कह दिया गया है। जिन चीजों की प्रदेश में आज जरूरत थी, उनका जिक्र भी उसमें किया गया है। उसमें स्पष्ट तरीके से चीन के हमले से उत्पन्न हुई परिस्थिति का जिक्र है। उस परिस्थिति में हमें क्या-क्या करना है उसका भी स्पष्ट संकेत इस संबोधन में है। चीनी हमले के बाद जो जो बातें चाहिये थीं, इस प्रदेश की तैयारी के लिये, उन सारी बातों को उसमें स्पष्ट कर दिया गया है। सुरक्षा के साथ-साथ इस प्रदेश के लिये आज किस चीज की जरूरत है उसको भी संबोधन में स्पष्ट कर दिया गया है। कृषि, सिंचाई, पावर, मेडिकल, हेल्थ, स्वास्थ्य आदि जितनी भी इस प्रदेश की आवश्यकतायें थीं, उनका जिक्र इसमें कर दिया गया है। श्री नौरंग लाल जी ने जिस तरह से इस प्रताव को पेश किया है उससे और भी यह सब बातें स्पष्ट हो गयी हैं। उसमें मैंने किसी भी बात की कमी नहीं पायी।

पहली बात यह कही गयी कि इमरजेंसी नहीं है। मैं कहता हूं, यह प्रदेश कहता है, देश कहता है कि इमरजेंसी है। कोलम्बो प्रस्ताव को पीकिंग ने अस्वीकार कर दिया है, तिब्बत में बहुत बड़ा जखीरा फौजों का जमा है, उत्तर प्रदेश की सरहद पर चीन की फौजें लगी हैं, और आप मुगालता देते हैं कि इमरजेंसी नहीं है। क्या आपका मकसद यह है कि यह देश ब्रिटेन और अमेरिका से सदा भीख मांगता रहे? जनसंघ और सोशलिस्ट पार्टी की तरफ से चिल्लाया गया है कि इमरजेंसी नहीं है। लेकिन मैं कहता हूं कि इमरजेंसी है और ५ वर्ष, १० वर्ष तक रहेगी। जब तक देश अपने पैरों पर खड़ा नहीं होगा और अपनी रक्षा का पूरा प्रबन्ध नहीं कर सकेगा, तब तक इमरजेंसी रहेगी। रक्षात्मक उपायों का प्रबन्ध प्रदेश को पूरे तरह से करना पड़ेगा। जैसे हिन्दुस्तान ने रिवर्सेज झेले हैं, अब इतिहास में कोई हमारी फौजों को पीछे नहीं हटा सकेगा। हम अहिंसा के पुजारी थे। हमारे साथ एक दम धोखा हुआ। हम तैयार नहीं थे। इसलिये इमरजेंसी के जारी रखने की आवश्यकता है।

नेता विरोधी दल को यह कहने का क्रानिक मर्ज है कि मिनिस्ट्री बड़ी है। शुरू से अब तक के भाषणों में और अब इस बजट भाषण तक और जब तक कांग्रेस सरकार रहेगी और जब तक यह गुप्ता जी की सरकार रहेगी तब तक दुबे जी इसे भूल ही नहीं सकते हैं। करीब ८ करोड़ की आबादी का यह सूबा और केवल १६ कैबिनेट मिनिस्टर्स एक-एक असिस्टेंट और

१२ पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी यानी कनैक्टिंग लिंक्स बिटवीन दी सेक्रेटेरियेट ऐंड दी गवर्नमेंट। ५० लाख जनसंख्या के ऊपर १ मिनिस्टर आता है। मेरा कहना है कि २५ लाख पर एक कैबिनेट मिनिस्टर होना चाहिये। एमरजेंसी है, बहुत बड़ा सूबा है। कितना प्रबन्ध, कितना बन्दोबस्त सरकार को करना होता है। कृषि का काम है, प्लानिंग का है, और बहुत बड़े काम हैं। हर मिनिस्टर बेचारा परेशान है दौड़ता-दौड़ता। सारे सूबे को कवर भी नहीं कर पाता है। इसलिये मिनिस्ट्री की तादाद कम है, १६ की जगह ३२ होने चाहिये। (व्यवधान) जरा सुनिये। (लाल बत्ती होने पर)।

कांग्रेस पार्टी की तादाद है २५० और हमको १० मिनट केवल। एक हमारे नेता, ३० मिनट और हमको १० मिनट, उधर दर्जनों नयी नयी पार्टियां, नये नये नेता, उन्हें २० और ३० मिनट, इसलिये हमको भी २० मिनट मिलने चाहिये। (लाल बत्ती बुझा दी गई)।

मुझे एक स्पीच बहुत पसंद आई। वह हमारे ताल्लुकेदार राजा भानुप्रतापसिंह जी की थी। इतनी अच्छी स्पीच विरोधी दल से और खासकर स्वतंत्र पार्टी के उपनेता की ओर से आना अचम्भे की बात नहीं है। उनका मकसद है किसान के नाम पर वोट मांगना। किसान की हमदर्दी, किसान की खैरख्वाही, लेकिन केवल एक क्षेत्र का जिक्र उनकी बहुत बड़ी परेशानी है कि २० साल और १५ साल तक जबरन कब्जा लोगों ने किया खेतियों पर, कर्जा नहीं दिया। उन से उन्हें फोर्स्ड तरीके से मुक्त कराना और तमाम गैरकानूनी कामों को कंसालीडेट कराना उनकी स्पीच का मकसद है।

एक बड़ी दिलचस्प घटना माननीय राज्यपाल के संबोधन के समय घटी। कुंवर श्रीपालसिंह साहेब ने ऐसा सुन्दर विश्लेषण किया है इससे अधिक मुझे कुछ कहना नहीं है। राजा जी और महान् क्रांतिकारी नेता डाक्टर लोहिया टेलीफोन ट्रंक काल से आपस में मश्विरा कर लेते हैं, डाक्टर रघुबीर और मसानी टेलीफोन से बात कर लेते हैं। एक पार्टी है हिन्देस्तान में। उसके ऊपर हमला सीधा है। कम्युनिस्ट पार्टी के लिये बड़ा शोर है और उसकी आड़ में मकसद क्या है उनका? नान-एलाइनमेंट की पालिसी को ठोकर देना, उसको बदनाम करना, उसे संसार के सामने दूषित दृष्टिकोण से देखने के लिये तैयार करना (लाल बत्ती होने पर) अच्छा अधिष्ठाता महोदय, हमारे साथ यह जुल्म आप करते हैं, औरों के साथ रियायत खैर, जैसी आपकी आज्ञा।

मैं स्पष्ट तरीके से यह कहना चाहता हूं कि महामान्य राज्यपाल ने जो नीति आज प्रदेश की जनता के सामने प्रस्तुत की है, उससे अच्छी और उससे बेहतर कोई दूसरी नीति हो नहीं सकती थी। यह बात बिलकुल स्पष्ट है और प्रदेश और १९६३ का साल यह बतलायेगा कि महामान्य राज्यपाल ने रक्षा के कार्य को और योजनाओं को आगे बढ़ाने में जिस तरीके के सुझाव इस प्रदेश के सामने रखे हैं वे सन् १९६४ में डिविडेंड्स पे करने के कार्यक्रम हैं।

(श्री दीपनारायण सिंह का नाम पुकारे जाने पर)

श्री भगवानदास यादबेन्दु (जिला आगरा)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं कल से १० बार खड़ा हुआ हूं। मेरा प्रस्ताव भी है और फिर भी....

श्री अधिष्ठाता—

श्री दीपनारायण सिंह जी को मैंने बुला लिया है। उसके बाद आपका नम्बर आवेगा।

श्री चन्द्रबलीसिंह—

श्रीमन्, हम लोगों की तरफ भी आपका ध्यान आना चाहिये।

श्री अधिष्ठाता—

जिस-जिस पार्टी के जिस क्रम से सदस्यगण बोले हैं उनके नाम मेरे पास हैं। अब एक सोशलिस्ट सदस्य का नम्बर भी आने वाला है।

श्री चन्द्रबलीसिंह--

अभी तक क्यों नहीं आया ?

श्री अधिष्ठाता--

यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन दीप नारायण जी के बाद आपका नम्बर आयेगा।

श्री दीपनारायणसिंह--

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि और लोग तो किसी न किसी पार्टी का नकशा दिखा कर यहां आये हैं, कुछ उनका जोर और कुछ पार्टी का जोर, लेकिन मैं खालिस जनता के जोर पर आया हूं, इसलिये मेरी कुछ यहां इन्ट्रिसिक वैल्यू है। मैं सीधा ही जनता की आवाज पर आने वाला आदमी हूं। अतः हमारी बात यह सदन गौर से सुने। कोई गुलाब का फूल है, तो कोई चमेली का फूल है।

एक सदस्य--

आप काहे के फूल हैं ?

श्री दीपनारायणसिंह--

मैं एक ऐसा फूल हूं जिसकी सुगंध तो चारों तरफ फैलती है, लेकिन जिसको कांटे अच्छे लगते हैं उसको कांटे मिलते हैं और जिसको फूल अच्छा लगता है उसको फूल।

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका ध्यान १३ अगस्त, सन् १९६२ को दिये गये माननीय हुकुमसिंह जी के भाषण की ओर दिलाना चाहता हूं। मैं यह मानता हूं कि उनकी एक बात सत्य निकली। उन्होंने कहा था कि ६ विभिन्न पार्टियां शासन कैसे चलायेंगी ? मैंने उनको उदाहरण देकर बताया था कि चर्चिल और स्टेलिन एक साथ बैठ सकते थे और हिटलर के खिलाफ लड़ सकते थे, तो क्या हम लोग एक नहीं हो सकते ? लेकिन आज मैं मानता हूं कि जनसंघ, कम्युनिस्ट और उधर से उग्र विचार वाले श्री उग्रसेन जी ने यह दिखा दिया कि यहां मिलने का कोई प्लेटफार्म नहीं है और यह सदन भी लड़ने का अखाड़ा ही बना हुआ है।

माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के समय एक घटना हो गयी और उनकी अंग्रेजी की स्पीच पर ऐतराज किया गया। मान लिया जाय कि उत्तर भारत का कोई हिन्दी जानने वाला गवर्नर मद्रास में होता तो क्या होता ? उसकी क्या प्रतिक्रिया आपके मन पर होती ? इस प्रकार की बातें नेशनल इन्टीग्रेशन की बातें नहीं हैं। यह ठीक है कि हमने उनसे हिन्दी में बोलने को कहा, लेकिन जब माननीय राज्यपाल महोदय ने यह कह दिया कि मैं हिन्दी नहीं जानता इसलिये अंग्रेजी में बोलूंगा, उस पर उधर से सुझाव दिया गया कि अगर हिन्दी नहीं जानते हैं तो उड़िया में बोलिये। लेकिन उसके बाद गवर्नर महोदय चाहे जिस भाषा में बोलते हमें खामोश हो जाना चाहिये था। लेकिन उसके बाद भी जो कुछ हुआ उससे हमारी कमजोरी साबित होती है, विरोधी पक्ष की कमजोरी वह बताता है, अति बताता है, जब कि 'अति' हर एक चीज की खराब होती है। अति उग्र भी खराब और अति नम्र भी खराब। हिटलर ने भी एक बार ऐसा ही कहा था कि हम लोग ही राज्य कर सकते हैं, क्योंकि हम ही शुद्ध आर्यन रेस के हैं। हमारे यहां भी आज जब फौज में भर्ती होती है तो किसी कौम के लिये कहा जाता है कि वह मार्शल कौम है वही लड़ सकती है, अन्य नहीं। चीन में ७० करोड़ आदमी हैं वहां ऊंच नीच का भेद नहीं है। हर आदमी किलकारी मार कर लड़ता है। लेकिन हमारे यहां, जहां की आबादी ४३ करोड़ है अगर उसमें हर आदमी किलकारी मार कर नहीं लड़ेगा तो कैसे हमारी जीत हो सकती है ? ईमानदारी की बात कहता हूं। हर जिले में चले जाइये, जहां भर्ती हो रही है। पूछा जाता है कि तुम किस कौम के आदमी हो ? फलां मार्शल कौम है, वही अच्छा लड़ सकती है। १८ प्रतिशत का वहां मजाक उड़ाया जाता है। क्या मैं पूछ सकता हूं कि क्या चमार आदि कौमों में लड़ने की भावना नहीं है ? क्या अपने देश को बचाने की भावना नहीं है ? मांडले पर चमारों और मेहतरों ने ही विजय पायी थी। लेकिन आपने इसी प्रकार से भेदभाव किया तो हिन्दुस्तान

आजाद रहने वाला नहीं है। यहां की हर कौम के बच्चों को आपको तैयार करना होगा चाहे वह भंगी ही क्यों न हो। हमें सब को एक सा हथियारों की ट्रेनिंग देनी होगी।

लेकिन अधिष्टाता महोदय, इस आपद्कालीन स्थिति में मैंने स्वयं सुना व देखा कि सोशलिस्ट प्लेटफार्म से भी प्रतिक्रियावादी ताकतों को बड़ा देशभक्त बताया गया। हिन्दुस्तान में एक अजीब बात हुई, समाजवाद का जनाजा समाजवादी लोग ही उठा रहे हैं। पी० एस० पी० और सोशलिस्ट पार्टी का यहां मर्जर होने लगा। मैं भी कभी के० एम० पी० पी० में था, तो के० एम० पी० पी० और सोशलिस्टों का मर्जर हुआ, पता नहीं उनमें कौन मरा, कौन जिया। आज कोई अमेरिका से राहत चाहता है, कोई रूस और चीन से राहत चाहता है, लेकिन हिन्दुस्तान की राहत कोई नहीं चाहता, उसकी बात भले ही कोई कहे। एक झटका लगा और ऐसा मालूम हुआ कि नान-एलायनमेंट खतम हो गया। अमेरिका मदद में आया और हिन्दुस्तान को अपनी तरफ खींचने की कोशिश करने लगा लेकिन मैं दाद दूंगा अपने प्रधान मंत्री महोदय को जिन्होंने अपनी जगह पर अपने कदम को मजबूत रखा क्योंकि उन्हें अपने हाथ को ही मजबूत करना था। उनके विरुद्ध लोगों ने खूब चिल्लाने और प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने कमजोरी का फायदा उठाने की कोशिश की (लाल बत्ती जलने पर)।

श्रीमन्, मैं आपसे ५ मिनट अधिक समय चाहूंगा क्योंकि मैं प्रस्तावक भी हूं और मुझे अपने संशोधन के ऊपर भी कुछ कहना है। नान-एलायनमेंट में कोई पक्षपात की बात नहीं है, यह तो एक विशुद्ध भारतीय रणनीति है।

एक बात पर आप और गौर करें कि राज्यपाल महोदय के भाषण में यह कहीं नहीं आया कि चन्दा किससे वसूल हुआ और किस तरह से वसूल हुआ ? हम लोग अदालत में रहते हैं और सारी बातों को नजदीक से देखने का मौका मिलता है। अगर किसी मुकदमे में किसी की जमानत करने की बात हुई तो ५०–१०० रुपये दे देने पर उसकी तो जमानत हो गयी, लेकिन अगर सुधुआ बुधुआ जो गरीब हैं और गरीबी की वजह से चन्दा नहीं दे सके तो उनको जेल में भेज दिया गया। १०७ के मुकदमे में ५ और १० रुपये तक चन्दे लिये गये। आप पता लगायेंगे तो मालूम होगा कि चन्दा वसूल करने में कितने नीचे स्तर तक गिरा गया है। गरीबों से चन्दा वसूल किया गया, अदालतों में चन्दा वसूल किया गया और जो रुपया दे सके उनसे जमानत ले ली गयी। आपकी हिम्मत नहीं पड़ी कि सेठों से सोना वसूल करें। सोना रखने के खिलाफ आपने रूल बनाये लेकिन देसाई साहब ने यहां तक कह दिया कि किसी से जबरदस्ती सोना वसूल न किया जायगा। इस तरह से आपने पूंजीपतियों के सामने तो घुटने टेक दिये। आपको हम जैसे निंदक से प्यार करना चाहिये। कहा गया है—"निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय"।

जहां तक मंत्रिमंडल के घटाने की बात है, वह तो अपनी जगह पर है, लेकिन हम नहीं चाहते कि ठाकुर हुकुम सिंह, जो जनता के चुने हुए प्रतिनिधि हैं उनको तो १२०० रु० वेतन मिले और अंग्रेजों के जमाने में उनके इशारे पर काम करने वाले जो आज इनकी टांग के नीचे रहते हैं उनको ३,००० रुपये वेतन मिले। हमेशा की यह नीति रही है कि नौकरशाही, जिसे हजारों रुपये तनख्वाह मिलती है उनको तो पूरी तनख्वाह लेने की छूट हो और जो ६५–७० रुपये पाने वाले हैं उनसे चन्दा वसूल किया जाय। आपका हमला नीचे वालों पर ही होता है। इस आपात्कालीन परिस्थिति में भी किसान मजदूर ही देश की मदद कर रहे हैं। आज देश भक्त बनने की कोशिश में किसान मजदूरों को ही लूटा जा रहा है जो जम्हूरियत के खिलाफ बात है। वे करिअप्पा जो अंग्रेजों के जमाने में जरनल थे और अंग्रेजों के इशारे पर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के लिए जिन्होंने लड़ाई लड़ी थी उनको देश में जहां तहां घुमाया जा रहा है और उस नेहरू के खिलाफ बात कहने की हिम्मत की जा रही है जिसने देश के लिये अपना सब कुछ त्याग दिया। नेहरू ने देश की आजादी के लिये डंडे खाये साम्राज्यवादियों के और इसीलिये वह आज जम्हूरियत का प्रतिनिधि है और नेहरू का खात्मा जम्हूरियत का खात्मा होगा। आज चीन के मुकाबले में, उस के अधिनायकवाद के मुकाबले में, जम्हूरियत के लिये हम लड़ रहे हैं।

[श्री दीपनारायणसिंह]

इसलिये आज यह देश एक है चीन के मुकाबले के लिये। लेकिन जिस दिन भी हमारे देश की जनता और यहां के किसानों में यह भावना हुई कि हमारे ऊपर पूंजीपतियों की डिक्टेटरशिप या राजा महाराजाओं की डिक्टेटरशिप या कम्युनिस्ट डिक्टेटरशिप या कोई और डिक्टेटरशिप हो गयी है तो वह हालत हमारे लिये खतरनाक व असह्य होगी। इसलिये हम जो लड़ रहे हैं वह पूंजीवादी, सामन्तवाद की सामंतशाही और प्रतिक्रियावाद के मुकाबले के लिये लड़ रहे हैं। यहां वे लोग भी हैं कि जो पंडित पुजारियों की तरह खा रहे हैं। जब दुबे जी बोल रहे थे तो दूसरी तरफ से दूसरे ईसाई पंडित दत्ता जी भी उछल-उछल कर बोलने लगे, क्योंकि "मोहे न नारि नारि के रूपा" एक पंडा दूसरे पंडे को बरदाश्त नहीं कर सकता। जिस तरह से कि नासिर ने इजिप्ट में एक प्रगतिशील नेशनलिज्म खड़ा किया और उसने अपने देश को स्वतंत्र कराया वह एक आदर्श था, वहां हिन्दू नेशनेलिज्म और मुस्लिम नेशनेलिज्म की बात नहीं हुई। इसलिये यह भी प्रतिक्रियावादी ताकतों को दबाना आप का काम है वर्ना यहां खतरा उनसे पैदा हो सकता है। हम इसमें आप का साथ देंगे। माननीय राज्यपाल के भाषण में ऐसा कोई संकेत नहीं मिला। आप अपनी नौकरशाही को शुद्ध कीजिये, आप अपने इन बेलगाम घोड़ों को काबू में रखिये और यह जो आप के न्यायालयों में भ्रष्टाचार हैं उसको भी हटाइये।

*श्री कृष्णचन्द (जिला झांसी)--

माननीय अधिष्ठाता महोदय, महामहिम राज्यपाल ने जो सम्बोधन इस सदन में दिया है और उसमें जो राष्ट्रीय लक्ष्यों की व्यवस्था की है मैं उसके लिये उनको बधाई देता हूं। महामहिम राज्यपाल ने उसमें स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि हमारे आज राष्ट्रीय लक्ष्य दो हैं। एक तो अपने स्वप्नों के अनुरूप समाज का निर्माण करना, देश का निर्माण करना, प्रदेश का निर्माण करना, और दूसरा लक्ष्य है भारत की भूमि से चीनी आक्रमण को समाप्त करना। इन्हीं दो लक्ष्यों की पृष्ठभूमि में मैं दो शब्द कहना चाहता हूं।

यह मेरा विश्वास है कि चीन ने भारतवर्ष पर जो आक्रमण किया है उसके मुख्यतः दो कारण हैं। सम्भवतः वह भारत पर कब्जा करना चाहता है और इस देश पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता है। हमारी समझ में यह निस्सन्देह आता है कि चीन विचारों और सिद्धान्तों की टक्कर में और उसूलों की टक्कर में भारत को पराजित करना चाहता है। हम जिन तरीकों से अपने देश में समाज का निर्माण कर रहे हैं, हम जिस पद्धति से और प्रजातंत्र के जिन वैधानिक उपायों से और गांधी जी के बताये हुये मार्ग से जो समाजवादी व्यवस्था यहां लाना चाहते हैं, उसके बरखिलाफ चीन दिखलाना चाहता है कि समाजवाद की स्थापना हिंसा और खूंरेजी के द्वारा हो सकती है। इसलिए हमारा एक यह लक्ष्य होना चाहिये कि जैसे भी हो हमारी भूमि से यह चीनी आक्रमण समाप्त हो और इसके साथ-साथ हम को समाज का निर्माण महात्मा गांधी और नहरू जी के उसूलों के आधार पर करना होगा। यह नहीं हो सकता हम संघर्ष के दौर में अपने महान् लक्ष्य को भूल जायं, हम भारतवर्ष के निर्माण को भूल जायं, समाज के निर्माण को भूल जायं। इसलिये जो मित्र कहते हैं कि इस आपत्ति काल के समय हमारे समाज के निर्माण-कार्य समाप्त हो जाना चाहिये मैं समझता हूं वे भ्रम में हैं। यदि हमने निर्माण-कार्य को समाप्त कर दिया तो चीनी आक्रान्ताओं की विजय होगी, उनकी पद्धति की विजय होगी। इसलिये हमें निर्माण-कार्यों को करना चाहिये। हमारे विरोधी दल के नेता जानते हैं और जान करके भी वह हमसे वह कराना चाहते हैं, या कम से कम कहना चाहते हैं कि जो देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता। यह सर्वविदित है, राजा साहब जिस दल से संबंध रखते हैं, वह नहीं चाहता कि इस देश में योजना चले, नहीं चाहता कि समाजवाद की स्थापना हो, नहीं चाहता कि इस देश से गरीबी, भुखमरी, शोषण का विनाश हो। अगर हमने इस बात को समाप्त कर दिया तब प्रश्न यह आता है कि भारतवर्ष को शस्त्रागार का केन्द्र बना कर हम क्या करें? आखिर भारत की रक्षा किन उद्देश्यों के लिये करें? मैं एक महान् संस्था को बिलांग करता हूं, लेकिन मैं

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कहना चाहता हूं कि यदि हमको भुखमरी, शोषण की रक्षा करनी पड़ी तो मैं पहला आदमी हूं जो अपने जीवन को नहीं दे सकता। मैं इस शोषण की रक्षा करने के लिये देशवासियों का आह्वान नहीं कर सकता। बिड़ला, डालमिया, राजा साहब की जमीन और जायदाद के लिये देश अपना बलिदान कर दे, मैं हरगिज इस बात के लिये तैयार नहीं हूं। इस लिये आज समय है, जब कि स्पष्ट धारणा होनी चाहिये कि भारतवर्ष का समाज किस प्रकार का बनेगा, भारतवर्ष किस तरफ जाना चाहता है और हम किस तरह के समाज को आक्रमणकारियों से रक्षा करना चाहते हैं, चीन तथा पाकिस्तान के आक्रमण से किस प्रकार के समाज की रक्षा करना चाहते हैं। और आज समय आ गया है.....

श्री कल्पनार्थसिंह (जिला गोरखपुर)—

श्रीमन्, व्यवस्था का प्रश्न है। जो भाषण हो रहा है उससे ऐसा लगता है कि हम पार्लियामेंट में बैठे हुए हैं, असेम्बली में नहीं हैं। इस सिलसिले में मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं, प्रासंगिक भाषण होना चाहिये।

श्री अधिष्ठाता—

माननीय कल्पनाथ सिंह जी ने जो प्रश्न उठाया है वह ठीक ही है, वैसे बैठे तो हम असेम्बली में ही हैं। इसलिये मैं कृष्णचन्द जी से कहूंगा कि वह विषयांतर न हों।

श्री कृष्णचन्द—

मुझे प्रसन्नता है मेरे दोस्त ने चीज को समझा। यहां जितने भाषण हुए हैं और हमारे राजा साहब का उन्होंने जिक्र किया, मुझे बहुत खुशी है। उन्होंने यह कहा कि न देश युद्ध के लिये तैयार है, न शान्ति के लिये तैयार है और विरोधी दल के नेता कहते हैं संकटकालीन स्थिति देश के अन्दर नहीं है। श्रीमन्, उसका ताल्लुक इस प्रदेश से नहीं है, राजनीति से नहीं है, शासन व्यवस्था से नहीं है। जब ऐसे भाषण होंगे तो उनके उत्तरों को सुनने के लिये तैयार रहना पड़ेगा। मेरे मित्रों ने हमसे सतर्क और सावधान होने के लिये कहा है। अपने दोस्तों से, अपने आस-पास रहने वालों से हम सावधान हैं। वफादारी की शपथ लेने के बाद हम उन बहुत से दोस्तों से सावधान हैं। हम सावधान हैं उनसे जो हमारे साथ हैं, लेकिन जिनसे हम डरते हैं। उनकी एक पहचान है दूसरी नहीं है। हमारा एक राष्ट्र है, भारतवर्ष हमारा राष्ट्र है, उसको हम अपने स्वप्न का राष्ट्र बनाना चाहते हैं, हमारा एक लक्ष्य है कि हम भारतवर्ष में समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं, देश को स्वस्थ बनाना चाहते हैं, हमारे एक नेता हैं जवाहर लाल जी, जो भी दल या पार्टी एक राष्ट्र, एक लक्ष्य और एक नेता के सिद्धान्त को स्वीकार करती है, वह हमारे साथ हैं और जो इसको स्वीकार नहीं करती है वह हमारे साथ नहीं है, हमारे विरुद्ध है। यह हमारी पहचान है, परीक्षा और हमारा इम्तहान है। इसलिये श्रीमन्, मैं इन शब्दों के साथ एक बात कहना चाहता हूं। यह शुद्ध प्रजातंत्र की बात है। आज जवाहर लाल जी हमारे राष्ट्र के प्रतीक हैं, जिस तरह से विंसटन चर्चिल इंगलैंड के थे। जिस समय महायुद्ध चल रहा था तो उस युद्धरत नेता के विरुद्ध कोई बात नहीं कही गई क्योंकि वह इंगलैंड का प्रतीक था। अगर आप देश को कमजोर करते हैं तो हमारे लक्ष्य में बाधा पड़ती है।

श्रीमन्, इसके बाद मैं महामान्य राज्यपाल के अभिभाषण के संबंध में सरकार से एक निवेदन करना चाहता हूं। मुझे खेद है, मुझे दुःख है कि इसमें पिछड़े क्षेत्र का कोई जिक्र नहीं है जो कि होना चाहिये था। इसमें बुन्देलखंड का कोई जिक्र नहीं है। मैं इसकी व्यवस्था नहीं करना चाहता हूं, लेकिन मुझे दुख है कि जब हम निश्चित रूप से समाजवाद की ओर जा रहे हैं, हम समानता की ओर जा रहे हैं, हम समता की ओर जा रहे हैं, तो महामान्य राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में प्रदेश के दूरस्थ कोने में बसे हुये भूखे नंगे लोगों के लिये भी कुछ चर्चा होनी चाहिये थी, जो कि नहीं है। इसलिये मैं अर्ज करना चाहता हूं, प्रार्थना करना चाहता हूं, निवेदन करना चाहता हूं कि पिछड़े वर्ग के क्षेत्रों की जांच करने के लिये विशेष कर बुन्देलखंड और पूर्वी इलाकों के

[श्री कृष्ण चन्द]

रहने वालों की जांच करने के लिये गवर्नमेंट एक जांच कमीशन नियुक्त करे जो ६ महीने में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दे। इन शब्दों के साथ मैं राज्यपाल महोदय को बधाई देता हूं।

(श्री नरसिंहनारायण पांडेय का नाम पुकारने पर।)

श्री चन्द्रबलीसिंह—

श्रीमन्, मैं आपकी व्यवस्था के विरोध में सदन का परित्याग करता हूं।

(इसके उपरान्त श्री चन्द्रबलीसिंह ने सदन का त्याग किया।)

श्री अधिष्ठाता—

मैंने जो लिस्ट देखी है उसमें सोशलिस्ट पार्टी के अभी तक कोई माननीय सदस्य नहीं बोले हैं।

श्री भगवानदास यादवेन्दु—

श्रीमन्, आपने जो वादा किया है उसको पूरा नहीं करते।

श्री अधिष्ठाता—

जो मैंने वादा किया है उसको पूरा करूंगा।

श्री बलवानसिंह—

मैं एक चीज रखना चाहता हूं कि इस समय सोशलिस्ट पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी नाम की कोई चीज नहीं है, संयुक्त समाजवादी दल है।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)—

श्रीमन्, मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं कि आपने हमें इतने महत्वपूर्ण महामहिम राज्यपाल के संबोधन भाषण पर अपने खयालात के इजहार करने का मौका दिया। श्रीमन्, मुझे खेद है कि महामहिम राज्यपाल के सारे सम्बोधन भाषण को पढ़ने के बाद मुझे कहीं पर एक शब्द नहीं दिखायी दिया कि न्यायपालिका और कार्यपालिका इस प्रदेश में किस प्रकार से कार्य करेंगी, उसका क्या स्वरूप होगा तथा उसका अलगाव कब तक होगा। इसके बारे में कहीं भी जिक्र और तजकिरा नहीं है। जब मैं यह बात कहता हूं तो मेरे सामने एक चित्र आ जाता है कि किस तरह से हम यहां बैठ कर साढ़े सात करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं, किस तरह से यह सरकार चल रही है। एक तरफ तो हम विधान सभा में बैठ कर कायदे-कानून बनाते हैं, दूसरी तरफ यह महसूस करते हैं कि वह कायदे और कानून कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के मातहत देश के विभिन्न क्षेत्रों में सही सही रूपान्तर किये जायंगे, सही सही नीतियों को प्रतिपादित किया जायगा। दूसरी तरफ जब हम देखते हैं कि हमारी न्यायपालिका जो विशुद्ध तरीके से हमारे न्याय का दर्पण होना चाहिए, जब अपनी अदालतों के जरिये से फैसला देती है, तो आज उसको हमारी कार्यपालिका सही रूप से प्रतिपादित और पालित नहीं कर पा रही है। मुझे हैरत है और इसलिए है कि ब्रिटिश पार्लियामेंट के इतिहास को पढ़ने का भी मौका मिला है। मुझे वहां के विधान को भी पढ़ने का मौका मिला है। श्रीमन्, आप जानते ही हैं कि ब्रिटिश कांस्टीट्यूशन लिखित नहीं है। लेकिन वहां पर न्यायपालिका ने अगर कोई फैसला दिया तो कार्यपालिका अपना यह कर्तव्य समझती है कि उसको वह कार्यान्वित करे और वह उनके विधान का अंग हो जाती है।

श्रीमन्, आपको याद होगा कि अमेरिका में हाई कोर्ट के सामने जब यह सवाल आया कि एक काला नीग्रो विद्यार्थी यूनिवर्सिटी में दाखिल हो सकता है अथवा नहीं, तो अमेरिका के उच्च न्यायालय ने उसकी अर्जी पर हुक्म दिया कि हां, इसको हक है कि इसका ऐडमिशन हो सकता है। श्रीमन्, वहां का गवर्नर उस हुक्म को पालन करने के लिये तैयार नहीं था। श्रीमन्, आपको याद होगा कि कैनेडी हुकूमत को मिलिटरी मार्च करवानी पड़ी और गवर्नर को आदेश देना पड़ा कि या तो इस न्यायपालिका के हुक्म का पालन करो अगर नहीं करते हो तो तुम्हें हटाना पड़ेगा या अगर जरूरत होगी तो मिलिटरी भी मार्च करवानी पड़ेगी। लेकिन इस सूबे

में क्या हो रहा है ? इस सूबे में, श्रीमन्, न्याय का गला घोंटा जा रहा है। जब मैं यह कहता हूं कि न्याय का गला घोंटा जा रहा है तो उस समय मेरे सामने उसकी पूरी तस्वीर है। जब हमारी पूरबी और पश्चिमी सरहद पर हमला हुआ था—नेफा और लद्दाख पर, १९ अक्तूबर की सुबह थी और २० अक्तूबर को गोरखपुर के विद्यार्थियों पर गोली चलायी जाती है और मान्यवर, गोली चलाने के बाद जब वह मामला हम लोग इस विधान सभा में पेश करना चाहते हैं जो कि साढ़े सात करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करती है तो माननीय मुख्य मंत्री ने श्रीमन्, हम लोगों को बुलाया और मैं उनकी उस बात का आदर करता हूं कि उन्होंने फौरन वस्तुस्थिति को समझते हुए एक्स्ट्राआर्डिनरी गजट के द्वारा २१ अक्तूबर को एन्क्वायरी कमीशन ऐक्ट, १९५२ के मातहत एन्क्वायरी के लिए एक हाई कोर्ट के रिटायर्ड जज को, मुखर्जी साहब को जांच हेतु नियुक्त किया। श्रीमन्, उसके बाद क्या होता है ? हम नेता लोग बुलाये जाते हैं और कहा जाता है कि गोरखपुर में फायरिंग हुई, हमने एक जुडिशियल कमीशन बैठा दिया। जूडिशियल कमीशन जांच कर रहा है। विधान सभा में डिबेट करना, विवाद उठाना न्यायोचित नहीं होगा, यह जुडिशियल स्कोप के अन्दर आप लोग इन्टरफियरेंस करेंगे। हम समझते हैं कि इस प्रदेश के मुख्य मंत्री, जिनके अन्दर इस प्रदेश की साढ़े सात करोड़ जनता ने आस्था रख कर उस कुर्सी को दिया है वह उस न्याय का आदर करेंगे। लेकिन श्रीमन्, जब २० अक्तूबर को हमला होता है, जब इमर्जेंसी थी, जब तात्कालिक स्थिति थी, उस समय तो देश और प्रदेश की स्थिति को जानने के बाद जांच के लिए जुडीशियल कमीशन बैठाया जाता है और उसके बाद जब आज इमर्जेंसी का इस सदन में यह हाल है कि लोग कह रहे हैं कि इमर्जेंसी खत्म हो गई, तब उस समय हमारे मुख्य मंत्री जी जुडिशियल एन्क्वायरी के काम में इन्टरफियर करते हैं। २३ तारीख को उस जज के कोर्ट में गवाहियां ली जाती हैं उन लोगों की जिन लोगों की अप्लीकेशन सरकार के पास विचार के लिए आती हैं कि तात्कालिक स्थिति को देखते हुए इस जांच को खत्म किया जाय। मैं बहुत अदब के साथ मुखर्जी कमीशन के जजमेंट के उस पोर्शन को पढ़ देना चाहता हूं। मुझे आप माफ करेंगे और मेरे साथी माफ करेंगे क्योंकि जजमेंट अंग्रेजी में है, मैं चार लाइनें पढ़ कर उसका अनुवाद हिन्दी में कर दूंगा। (व्यवधान) अगर आपकी इजाजत नहीं है तो घबड़ाइए मत, मैं उसकी हिन्दी कर दूंगा। (व्यवधान) मैं बड़ा प्रसन्न हूं कि आप लोग हिन्दी के लिए इतने उत्सुक हैं। (व्यवधान) मैं बहुत शुक्रगुजार हूं उधर के बैठने वालों का कि उनकी अंग्रेजियत तो कम से कम खत्म हुई और वह हिन्दुस्तानी तो हो गए।

अब यह कहा गया कि इमर्जेंसी है इसलिए एन्क्वायरी कमीशन अपना काम करना खत्म करे।

एक सदस्य—

हिन्दी में बोलिये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

मैं हिन्दी बोल रहा हूं। अंग्रेजी तो नहीं बोल रहा हूं।

(व्यवधान)

श्रीमन्, आप उनसे कहें कि मैं हिन्दी में बोल रहा हूं, अगर अंग्रेजी उनको सुनाई देती है तो ठीक है। (व्यवधान) कमीशन ने लिखा है (व्यवधान)। आयोग ने लिखा है (व्यवधान)। मैं घबड़ाने वाला व्यक्ति नहीं हूं, माफ करियेगा। तो जांच आयोग ने श्रीमन्, अपना फैसला लिखा और उस फैसले में यह लिखा कि जो लोग यह दरख्वास्त देते हैं कि यह जांच आयोग तात्कालिक स्थिति को देखते हुये अपना कार्य स्थगित कर दे, वह लोग भ्रम में हैं और भ्रम में इसलिये हैं कि पब्लिक ने पब्लिक सर्वेंट के ऊपर, जनता ने जनता के नौकर के ऊपर अपना शुबहा जाहिर किया है। उन्होंने अपने रिमार्क पास किये हैं। उनके चरित्र के ऊपर और उनके आचरण के ऊपर सन्देह प्रकट किया है। इसलिये यह जरूरी है कि उन जनसेवकों की स्थिति की जांच करने के लिये, उनका मूल्यांकन करने के लिये जिनके ऊपर उसके वर्किंग की

[श्री नरसिंहनारायण पांडेय]

जिम्मेदारी है, इसको तय करने के लिये यह जांच आयोग अपना कार्य जारी रखे। तो, श्रीमन्, जब जांच आयोग ने यह अपना एक फैसला दे दिया तो उसके बाद इस सरकार को २४ तारीख को वायरलेस के जरिये से एक सूचना भेजने की क्या आवश्यकता थी जो जांच आयोग के सेक्रेटरी के पास भेजी गई कि आप अपनी कार्यवाही को स्थगित कीजिये। सरकार विचार कर रही है। सरकार किस बात का विचार कर रही है? सन् १९५२ के जांच कमीशन की रपट को पढ़िये तो पता चलेगा कि इस सरकार को कहीं पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी जांच कमीशन से यह कहे कि जांच आयोग के कार्य को स्थगित कर दिया जाय। सरकार को केवल यह अधिकार है कि अगर आप समझते हैं कि आपातकालीन स्थिति है तो उस जांच आयोग के कार्य को खत्म कर सकते हैं। उस जांच आयोग को समाप्त कर सकते हैं लेकिन आप को यह अधिकार नहीं है कि वायरलेस देकर जांच आयोग को स्थगित कर दें।

श्री नवलकिशोर—

आपको क्या परेशानी है?

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

यह मैं नमूना दिखा रहा हूं कि जिस प्रकार से आप की न्यायपालिका प्रगति कर रही है यह उसका जरा सा नमूना है। यही मुझे परेशानी है। आपने अपने अफसरों का दिल और दिमाग इतना बढ़ा दिया है कि अभी तक तो हम पूंजीपति पूंजीपति चिल्लाते थे, लेकिन अब आप ने पूंजीपति की लाइन पर आई० सी० एस० और पी० सी० एस० का वर्ग खड़ा कर दिया है। इसकी मुझे परेशानी है। आज हो क्या रहा है? आज तानाशाही पनप रही है। आज इस देश में लाल फीताशाही पनप रही है। आज इस देश में कुनबापरस्ती पनप रही है। आज इस कुनबापरस्ती को पनपाकर इस हुकूमत के जरिये से इस देश को आप तानाशाही की तरफ ले जा रहे हैं। मैं इसको बरदाश्त करने के लिये तैयार नहीं हूं। मैं तो जनतंत्र प्रणाली का मानने वाला हूं। मैं कहता हूं कि आप भी उस को मानिये। आप के लिये भी वह दिन बुरा होगा जब इस देश में इस तरह की स्थिति होगी। इस आपात्कालीन स्थिति की आड़ में आप ऐसा न कीजिये नहीं तो आप भी उससे बच नहीं सकते। जो आप को करनी और करनी है उससे राष्ट्र आप को माफ नहीं करेगा।

श्री अधिष्ठाता—

अब आप समाप्त कीजिये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

मैं जल्दी ही समाप्त करूंगा। कुछ समय मुझे और दे दीजिये। दूसरी चीज में यह कहना चाहता हूं कि इस आपात्कालीन स्थिति में आज दाम ३० प्रतिशत बढ़ गये हैं। जूट जो कि लखीमपुर-खीरी में १४, १५ रुपये मन तक था आज वह २० रुपये मन तक है। इस वक्त दाम ३० प्रतिशत बढ़ गये हैं। आप की इमरजेन्सी और आप के डिफेन्स आफ इंडिया रूल्स कहां गये? वह किसके लिए इस्तेमाल होंगे? जखीरेबाजी से आज पूंजीपति पूंजीपति होते जा रहे हैं। आपने मिट्टी के तेल पर लाइसेन्स कर दिया। आज ८, ८ आने में मिट्टी के तेल की बोतल बिक रही है। आज दूसरी चीजों के दाम भी बढ़ गये हैं। आपने जिस मनोबल को कायम करने के लिये प्रदेश की जनता को उत्साहित किया था आज वह मनोबल कहां जा रहा है? नौगढ़ में २१ तारीख को माननीय चन्द्रभानु गुप्त जी गये थे। उन के सामने रेटीशन दिया गया था कि नौगढ़ में लोगों को ए० डी० एफ० के संबंध में पीटा गया। मैंने मुख्य मन्त्री जी को लोगों के नाम लिख कर भेजे हैं। बांसगांव में एक लेखपाल है जिसने रुपया वसूल कर के जमा नहीं किया, इसको भी मैंने स्पष्ट रूप से लिख कर दे दिया है। आज हालत यह है श्रीमन्, कि १ करोड़ ४० लाख रुपये से ऊपर लेबर अपीलेट ट्रिब्यूनल के ऐवार्ड के मुताबिक चीनी मिल के मजदूरों को पिछले सीजन के उत्पादन बोनस मिलना चाहिये था। माननीय सुचेता कृपालानी ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया था कि वेज बोर्ड के फैसले के

मुताबिक ४७ हजार रुपया मजदूरों को मिल जायगा। मैंने कहा था तथा मेरे यूनाइटेड फेडरेशन ने प्रस्ताव पास किया था कि बाकी धन एन० डी० एफ० में—१ करोड़ रुपया नेट मिल मालिकों से वसूल किया जाय। क्यों नहीं किया ? इसलिये कि मिल मालिकों से चन्दे के रूप में रुपये मिल जाते हैं। मैं चीनी मजदूरों के फेडरेशन का प्रेसीडेंट हूं और मैंने एक प्रस्ताव पास कराया कि अगर आप चीनी मिल के मालिकों से पैसा वसूल करा लेते हो तो मजदूर १ करोड़ रुपया देने के लिये तैयार है। लेकिन आप मिल मालिकों से नहीं ले सकते हैं। आप चीनी मिलों का राष्ट्रीकरण नहीं कर सकते हैं, इसलिये कि आप को चुनाव के पहले चन्दे मिल जाते हैं। अधिष्ठाता महोदय, आप को याद होगा कि पिछली मर्तबा मैंने आंकड़े दिये थे और आंकड़े दे कर यह साबित करने की कोशिश की थी कि चुनाव से १ महीने पहले १७ हजार रुपये के करीब मेरे जिले में एक चीनी मिल मालिक से लिया गया। इसलिये आप मिल मालिकों से रुपया नहीं ले सकते हो। इन शब्दों के साथ मैं आप का शुक्रगुजार हूं कि आप ने मुझे अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिया है और उम्मीद करता हूं कि जो मेरा संशोधन है वह महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण के अन्त में जोड़ दिया जायगा।

*श्री रमेशचन्द्र शर्मा (जिला जौनपुर)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि मुझे भी आपने थोड़ा सा मौका दिया। श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश हुआ है मैं उसका समर्थन कर रहा हूं। मैंने कल से बहुत से भाषण सुने। एक पुरानी पद्धति जो मैं कई सालों से इस सदन में देख रहा हूं उससे आगे जाने के लिये लोग कोशिश नहीं करना चाहते हैं। उसमें यही बात आती है कि राज्यपाल महोदय ने इस बात को छोड़ दिया या इन चीजों को वह नहीं कर रहे हैं। ठीक है, राज्यपाल महोदय अगर एक साल का पूरा बजट इस भाषण में कह देते तो शायद हमारे साथियों को संतोष न हो पाता। आज लड़ाई के युग में एक तरफ़ तो आप यह चाहते हैं कि हम आगे बढ़ें और दुश्मन का मुकाबिला करें और दूसरी तरफ़ आप चाहते हैं कि श्री राज्यपाल के भाषण में लड़ाई की एक-एक बात को दुहराया जावे। तो क्या मैं अपने साथियों से पूछूं कि यह कहां तक न्यायसंगत बात उनकी है ? राज्यपाल महोदय ने मोटे ढंग से एक आधे घंटे के छोटे भाषण के अन्दर जिस तरह इस प्रदेश के साल भर के कार्यक्रम को बतलाने की कृपा की है उसके लिये मैं उनको धन्यवाद देता हूं।

आज हिन्दुस्तान विकेन्द्रीकरण की तरफ़ जा रहा है, किन्तु कहा यहां यह जा रहा है कि नहीं यह तानाशाही की तरफ़ ले जाया जा रहा है। अगर यह तानाशाही होती तो आज जिस तरह से आप यहां और बाहर भी भाषण करते हैं उसमें रुकावट न आती ? कहां है वह ? यही सबूत है कि हम विकेन्द्रीकरण की तरफ जा रहे हैं।

श्री राज्यपाल ने कहा है कि प्रान्तीय रक्षक दल गांवों में बनेंगे और उससे पंचायती राज्य मजबूत होगा। यह तो है विकेन्द्रीकरण। गांव वालों को इसमें अधिकार मिला है। हां, आप जिस तरह का विकेन्द्रीकरण चाहते हैं वह गांधी जी तथा नेहरू जी का विकेन्द्रीकरण नहीं है। नेहरू जी का समाजवाद कागज का समाजवाद या विदेशी समाजवाद की नकल नहीं है। गांधी और नेहरू का समाजवाद गांव की जनता को शक्ति देने का, उसे ऊपर उठाने का है; उसे रोटी, कपड़ा और मकान देने का है, उसे शिक्षा देने का है और वह चल रहा है। चाहे देश की सरकार हो अथवा प्रदेश की, वह अपने कामों द्वारा, कानूनों द्वारा देश और प्रदेश की ग़रीब जनता जो गांवों में, पहाड़ों में और नदियों के किनारे बसी हुई है उसको उठाने की कोशिश कर रही है। मैं जानना चाहता हूं कि कहां तानाशाही सरकार बन रही है ? आप को दिखायी देने वाली तानाशाही हमारे विकेन्द्रीकरण से दूर है। आप सोचते कुछ हैं और कहते कुछ हैं। आप को सीधे सीधे कहना चाहिये कि हम माननीय राज्यपाल के भाषण के खिलाफ बोल रहे हैं। हमारे भाषण राजनीतिक दांवपेच के भाषण हैं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री रमेशचन्द्र शर्मा]

एक बात यह कही जा रही है कि यह चन्दा जबरदस्ती वसूल किया जा रहा है वह ग़लत है।" (व्यवधान)। मैं आप से कह रहा हूं कि आप बैठ जायं। जैसे आप को बोलने का अधिकार है वैसे ही मुझे भी। अधिष्ठाता महोदय, मैं आप को बतलाऊं कि जिस दिन से यह लड़ाई चली है और चन्दा हो रहा है, मैंने अपना एक एक मिनट इस सुरक्षा के काम में लगाया है और मुझे मालूम है कि किस प्रकार यह चन्दा इकट्ठा किया जा रहा है। चन्दा लाठी से या बल प्रयोग से वसूल किया जाने की बात कहना बिलकुल ग़लत है। यह शब्द प्रयोग करने के लायक नहीं थे। इस देश में लाठी के जोर से चन्दा नहीं लिया गया। जनता ने स्वयं समझा है और खुद दिया है। जहां जनता समझ नहीं पायी वहां हमने सभायें कीं, जनता को समझाया और उससे चन्दा प्राप्त किया। अगर लाठी का प्रयोग किया गया होता तो यह बात न कही जाती कि गरीब ने चन्दा दिया है और पूंजीपति ने नहीं दिया। जिस प्रकार गरीब से लाठी के जोर से चन्दा लिया जा सकता है उसी प्रकार से वह पूंजीपति से भी वसूल किया जाता।

इसके अतिरिक्त, अधिष्ठाता महोदय, कहा गया कि गांव में तानाशाही का राज्य बन रहा है। मुझे वैसा कहीं नहीं दिखायी दिया। न किसी गांव में तानाशाही का राज्य है और न हमारा कोई कानून ही ऐसा है। अगर वैसा होता तो जिस तरह से चीन ने अपने पड़ोसी तिब्बत पर कब्जा कर के वहां अपनी सरकार बनायी, वैसा ही हम भी कर सकते थे। क्या हम उससे दूर थे? लेकिन हमने वह नहीं किया। हमने विकेन्द्रीकरण को तमाम दुनिया में कायम किया और अपने देश में कायम किया और दुनिया की तमाम ताक़तें और देश हमारी तरह का ही विकेन्द्रीकरण अपने देशों में लागू करना चाहते हैं और उसकी तैयारी में लगे हुए हैं।

श्री अधिष्ठाता—

आपका समय समाप्त हुआ।

श्री भगवानदास यादवेन्दु—

अधिष्ठाता महोदय, महामना राज्यपाल महोदय के संबोधन पर मैंने यहां हाउस में सभी माननीय सदस्यों की विचारधारा को सुना। तमाम स्पीकर्स के लेक्चर हुए, उनको सुना। मुझे अजीब-अजीब किस्म के लोग यहां पर दिखाई पड़े। कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें वास्तव में ग़रीबी, भुखमरी और बेकारी ने तथा समाज की रुढ़ियों ने दबा रखा है। वास्तव में उनकी आवाज में एक शक्ति थी, उनकी आवाज में शोला था, उनके दिल में देशभक्ति की आग धधक रही थी। लेकिन कुछ लोग राजभक्ति के आधार पर बोल रहे थे। मैं यह कह देना चाहता हूं कि राजभक्ति और देश भक्ति में बहुत बड़ा अन्तर है। आज हमारे प्रदेश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है और साथ ही तेज़ी से बढ़ रहा है। इस बात को मैं ही नहीं, बल्कि उधर की बेंचों पर बैठने वाले भाई भी अपने हृदय पर हाथ रख कर के देखें, तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वे भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकते। आज नौकरशाही का प्रदेश में बोलबाला है। ए से लेकर जेड तक केवल नौकरशाही है, कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता है। उसने आज जनता की गाढ़ी कमाई को भ्रष्टाचार में लगाना शुरू कर दिया है। एक तरफ़ तो देश पर संकट आया है दूसरी ओर हमारे देश के प्रशासन की यह हालत है। हमेशा जब-जब देश पर आपत्तियां आयीं और संकट आया और हमले हुए तो हम लोगों ने एक साथ कदम से कदम मिला कर एक आवाज के साथ उस संकट का मुकाबला किया है। जिस समय अपने देश में संकटकाल की घोषणा हुई थी और चीन का हमला हुआ था, उस समय हमारी अलग-अलग विचारधारायें थीं, किंतु भिन्न-भिन्न विचारों के होते हुए भी, हम सब चीनी शत्रु का मुकाबला करने के लिये खड़े हो गये थे। आप को मालूम होगा कि उस समय जनसंघ की ओर से एक सत्याग्रह चल रहा था और यह देखते ही कि देश पर चीनियों ने आक्रमण किया है वह सत्याग्रह वापस ले लिया गया। लेकिन मैं कहता हूं कि आज मन्त्रियों ने, जब कि हमारे देश की आजादी को बनाये रखने के लिये त्याग और बलिदान की आवश्यकता है, कोई त्याग नहीं किया है।

मैं आपको उस समय की याद दिलाता हूं कि जब आजादी के पहले देश पर फिरंगी का राज्य था। तब श्री सुभाषचन्द्र बोस ने आई० सी० एस० की सर्विस पर लात मार दी थी, जबकि वह उस समय का सब से ऊंचा ओहदा माना जाता था। इस प्रकार से उन्होंने देश की मांग को देखते हुए यह कार्य किया था। परन्तु आज वह चेतना हमारे मन्त्रियों में नहीं है और न ही वह त्याग की भावना ही है। आज मंत्रिगण थोड़े-थोड़े पैसों के लिये कुर्सी से लालचवश चिपके हुए हैं। जो आजादी हमको पूज्य बापू ने एक धरोहर की शक्ल में दी थी, जिस को सुभाषचन्द्र बोस ने अपना जीवन दान दे कर हमारे लिये अर्जित किया था उसकी रक्षा के लिये यह मंत्री लोग अपना पद तक दान नहीं कर सकते हैं। यह लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र और समाजवाद की स्थापना का व्यर्थ ही नारा लगाया जाता है। इसके लिये यह आवश्यक है कि यह बहुरूपियापन छोड़ कर हमको अपने देश में एक स्वस्थ एवं सबल जनतंत्र की स्थापना करनी होगी। यह जो समाजवाद का एक अजीब मखौल बना रखा गया है, उस को समाप्त करना होगा। आज जब समाजवाद का नारा उधर से लगाया जाता है, और प्रतिक्रियावादी शक्तियों का जिक्र किया जाता है तो मैं यह कहूंगा कि संकट हमारे देश पर आया है, उसमें सत्तारूढ़ दल के अन्दर स्वयं ऐसे तत्व मौजूद हैं, जिनसे कि उनको सावधान रहना होगा। वह जिस प्रकार समाजवाद की बात करते हैं उससे मुझे आश्चर्य होता है। कांग्रेस के आर्गनाइजेशन में जब आल इन्डिया लेविल पर जब इन बातों का जिक्र होता है, और उन पर कुछ भी ठोस कदम नहीं उठाये जाते हैं तो मुझे दुख होता है। नेहरू जी। जिनको कि लोकतंत्र का अवतार कहा जाता है एवं जिन्होंने आज पूरे विश्व से दोस्ती करने की कोशिश की है, उनको भी इन बातों को जानकर दुख होगा। यह जो कृष्णमेनन को अलग किया गया, तो इसमें किस का हाथ था, उसमें बिलकुल प्रतिक्रियावादी शक्तियों का "अमेरिकन माउथ पीस" का हाथ था। यह पूंजीवादी मनोवृत्ति का द्योतक है।

इसलिए इस देश की प्रगति को देखते हुए मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि इस देश की स्वतंत्रता को यदि हमें कायम रखना है तो बिना किसी भेद-भाव के, बिना पार्टी के झंडे के, एक साथ मिल कर देश की सुरक्षा के लिये एक साथ होना पड़ेगा। हम जनता में बड़े मनोबल की बातें करते हैं, लम्बी चौड़ी स्पीचें देते हैं, लेकिन अपनी तरफ नहीं देखते। यहां बहुत से मंत्री ऐसे हो सकते हैं जिनकी बीबियों पर सोने की कन्डौलियां हो सकती हैं, लेकिन अपने घरों से बिलकुल सोना बाहर नहीं निकालते और जनता से कहते हैं कि सोना दे दो। मेरे पास एक सोने की अंगूठी थी जीवन में, लेकिन वह भी सुरक्षा कोष में दे दी। ३ लाख रुपया मेरी कांस्टीट्यूएंसी से आया जब कि फीरोजाबाद की एक लाख की आबादी ही है।

माल मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)---

अगर हमारे मित्र आहिस्ता बोलें तो हम भी सुन पावें, आपकी आवाज भर्रा जाती है।

श्री भगवानदास यादवेन्दु---

जब छप जायगा तब पढ़ लीजियेगा। हमारे देश की जनता ने, जब हमको खाने को नहीं मिलता था, पहिनने को नहीं मिलता था उस समय हमने अंग्रेज के खिलाफ बगावत की। वही जनता फिर चाइनीज के खिलाफ़ एक साथ हो कर, उन्हें भगाने के लिए कदम बढ़ायेगी और आप लोगों की जो अपने दो कदम के बंगलों से कार में बैठ कर आते हैं और जो गरीबी अमीरी का इंसानियत में फर्क समझते हैं उनको भी मालूम हो जायगा। आज तो संकट-कालीन स्थिति है, लेकिन अर्थ व्यवस्था ने बड़ा भारी मोड़ लिया है। आप लोगों ने जो धन तिजोरियों में कैद कर रखा है उस को ज्यादा दिन तक कैद में नहीं रख सकते, वह पैसा लामुहाला बाहर निकालना पड़ेगा---यह वक्त की आवाज है, आत्मा की आवाज है, कोई इमोशनलिटी या नाटकीयता से नहीं कहा जा रहा है।

सन् १९४६ में आप के यहां सिर्फ १० कैबिनेट मिनिस्टर और १० पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी थे और आज १७ कैबिनेट मिनिस्टर, १३ डिप्टी मिनिस्टर और करीब १५ पार्लियामेन्टरी

[श्री भगवानदास यादवेन्दु]

सेक्रेटरी हैं--इतना खर्चा आप ने प्रदेश की जनता पर लाद रखा है। यदि अपने वेतन में से कटौती करें और एक हजार के बजाय ५०० रुपया लें तो बचत हो सकती है, क्योंकि आप सोना नहीं खाते, वही रोटी खाते हैं जो भारतवर्ष का साधारण व्यक्ति खाता है। इसलिए मैं प्रार्थना करूंगा कि इस देश की रक्षा के लिए, सुरक्षा के लिए तथा देश में सही जनतंत्र और समाजवादी समाज की स्थापना के लिये अपने को बदलें और जनता के मनोबल को बढ़ाने के लिए स्वयं सब से पहले त्याग करें। जय हिन्द !

श्री रामलखन शुक्ल (जिला गोरखपुर)--

आदरणीय अधिष्ठाता महोदय, यह स्वाभाविक है कि इस सत्र के प्रारम्भ में आज के वाद-विवाद के अवसर पर उस महान् संकट की छाया हो जो हमारे देश पर आ पड़ा है। महामहिम राज्यपाल के भाषण में भी उसका संकेत था। समूचे भाषण को ध्यानपूर्वक पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि आज उनकी इच्छा, इस प्रदेश की सरकार की इच्छा, जन-जन की इच्छा यह है कि आये हुए संकट को टालने के लिए अपनी समूची शक्ति का प्रयोग करें। मान्यवर, महामान्य राज्यपाल के अभिभाषण से मैं एक वाक्य पढ़ना चाहता हूं। उस में लिखा है "जनता ने मार्ग-प्रदर्शन कर दिया है और यह अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने को समयानुसार उठावें और देश को विजय -पथ पर ले चलें'। प्रत्येक समस्या के हल के लिये कुछ आवश्यकतायें होती हैं और उसी के अनुसार उनके समाधान के लिये प्रदेश की सरकार से आशा की जाती है। हमारी योजनाओं को चलाने के लिये जिस तरह से हमारी सरकार ने उस को एक लोकतंत्रात्मक स्वरूप दिया, उसी तरह से इस संकट का मुकाबला करने के लिये भी अपने प्रयासों को एक ऐसा स्वरूप दिया जिससे कि हमारी विकास की योजनाओं में तथा सुरक्षा कार्य में एक प्रकार का समन्वय स्थापित हो सके और हम बिना किसी परेशानी के अपने प्रयासों में आगे बढ़ सकें। इसके लिये इससे भी जरूरी बात यह थी कि हम जनता के मनोबल को ऊंचा रख सकें इन्हीं सब बातों पर विचार करके, उसकी गम्भीरता का ठीक-ठीक अनुभव कर के हमारी सरकार ने अपना कार्यक्रम बनाया जिसके अनुसार ग्राम रक्षा दल बना, जिसके अनुसार १८ से ४५ वर्ष तक की उम्र के लोगों की एक सेना बनायी गयी, जिसके अनुसार एक अन्य सेना बनी, कृषि उत्पादन की ओर विशेष ध्यान दिया गया, और इस संकटकाल का सामना करने के लिये उचित कदम उठाये गये। इस संकटकाल का अहसास जब तक प्रदेश के जन जन में नहीं होगा, तब तक हम उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे। सरकार ने क्षेत्र समितियों तथा जिला परिषद् के संगठन के माध्यम से सुरक्षा प्रयत्न को आगे बढ़ाने का कार्य किया है और इसके लिये एक श्रम बैंक की भी स्थापना है। इस प्रकार का कार्य किया है और इसके लिये इस प्रकार सरकार ने सुरक्षा की दिशा में एक महान् और ठोस कदम उठाया है। हमें संतोष है कि महा-मान्य राज्यपाल महोदय ने इन सब बातों का उल्लेख करके हमें और सरकार को एक उत्साह प्रदान किया है और समय की आवश्यकताओं के अनुकूल जो सही कदम उठाये गये हैं उनकी चर्चा की है।

मान्यवर, और भी बहुत सी बातें हैं जिनकी ओर मैं नहीं जाऊंगा। इतना निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे विरोधी दल के माननीय नेताओं ने इस संकटकाल में अपने रुख में परि-वर्तन नहीं किया है। उनका यह कहना कि अब इमर्जेंसी नहीं रही, ग़लत है। एक तरफ़ तो वे यह कहते हैं कि चीन की वापस जाने वाली नीति युद्ध की नीति है, दूसरी तरफ़ वे यह फरमाते हैं कि अब कोई इमरजेन्सी नहीं है, यह मैं इस प्रदेश के लिये एक दुर्भाग्य की बात समझता हूं। एक विडम्बना की बात समझता हूं। समाजवादी झंडे के जो अलमबरदार हैं वे भी यही नारा लगाते हैं कि अब इमरजन्सी नहीं है। यह सुन कर बड़ा आश्चार्य होता है। अगर आप यह कहते कि इमरजेन्सी को मीट करने के लिये सरकार ने यह काम नहीं किया या फलां काम ठीक नहीं किया तो बात समझ में आ सकती थी। लेकिन यह कहना कि इमरजेन्सी नहीं है, इसके लिये भावी इतिहास के विद्यार्थी क्या कहेंगे ? वे सोचेंगे कि जब देश की सुरक्षा के लिये देश की ताकतें आगे बढ़ रही थीं तब उत्तर प्रदेश की विरोधी पार्टियों यह कह रही थीं कि

अब इमरजेन्सी नहीं है। माननीय नेता विरोधी दल ने यह भी कहा कि होम गार्ड्स और प्रान्तीय रक्षा दल का कार्य 'रीयल डिफेंस' का कार्य नहीं है लेकिन 'रीयल डिफेंस' का क्या काम है इस ओर उन्होंने संकेत नहीं किया। एक ओर जब जनता सरकार के कार्यों का निरीक्षण कर रही है तो दूसरी ओर वह इसका भी निरीक्षण कर रही है कि दूसरे लोग अपना कर्तव्य किस प्रकार से निभा रहे हैं। हम समझते हैं कि जनता समझदार है और उस समझदारी से वह सब के मूल्य को आंकती है। इसलिये आज इस बात का अवसर नहीं है कि हम एक दूसरे को चुनौती दें। चैलेंज और काउन्टर चैलेन्ज का यह अवसर नहीं है।

एक साथी ने कहा कि हम समाजवाद में विश्वास करते हैं इसलिये चीन के साथ हमारी सिम्पेथी है। यह बेसिरपैर की बात उन्होंने कह दी। जो हिन्दी-चीनी-भाई भाई का नारा हमने लगाया था वह तो हमारी संस्कृति के अनुकूल ही था, हमारा नारा तो वसुधैव कुटुंबकम् सदैव से रहा है। लेकिन जहां कहीं समाजवाद का नाम आ जाता है, वे चौंक जाते हैं। मैं समाजवादी पार्टियों से निवेदन करूंगा कि वे प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ मिल कर नारे न लगायें, इससे समाजवाद के आन्दोलन को धक्का पहुंचेगा।

*श्री बलवानसिंह—

श्रीमन्, मैंने बड़े गौर से भाषणों को सुना, खासतौर से कम्युनिस्ट भाइयों को तथा कांग्रेस दल के लोगों को। मैं समझता था कि इस संकट की स्थिति में देश की सब राजनीतिक पार्टियों ने सरकार को जो सहयोग दिया है उससे उसका कुछ दृष्टिकोण बदलेगा, लेकिन जब मैंने माननीय राज्यपाल के भाषण को सुना तो मुझे बड़ी निराशा हुई।

इस समय हमारे सामने एक बहुत बड़ा सवाल यह है कि देश के सामने इस समय इमरजेंसी है या नहीं? मैं तो इस खयाल का हूं कि इस मुल्क में इमर्जेंसी तब तक रहेगी जब तक कि चीन हिन्दुस्तान की जमीन जो लद्दाख में है उसे छोड़ नहीं देता। लेकिन इस सरकार ने जो इमर्जेंसी का पैमाना मान रखा है, वह पैमाना बड़ा गलत है। आज आप जबरदस्ती चन्दा वसूल कर रहें हैं, मुकदमों के अन्दर वसूल कर रहें हैं और मैं तो जिम्मेदारी के साथ यह बात कहता हूं कि कचहरियों के अन्दर मुकदमों के ऊपर चन्दा लिया जाता है। पिस्तौल, बन्दूकों के लाइसेंस देने पर हजार-हजार और ढ़ाई-ढाई सौ रुपये लिये जाते हैं। आज लाइसेंस और परमिट देने पर रुपया लिया जा रहा है और इस तरह से देश की जनता के जोश को तोड़ा जा रहा है। संकटकालीन स्थिति के नाम पर इस जम्हूरियत के अन्दर जिस तरह से इमर्जेंसी पावर ली गयी है, वह ढंग भी कुछ अच्छा नहीं रहा। डेमोक्रेसी के यह माने नहीं हैं कि मुल्क की फौजी ताकत कमजोर हो। हिन्दुस्तान क्या नहीं जानता था कि चीन क्या है? यह मुल्क इस चीज को जानता था क्योंकि १९३५ में ही चीन के माऊ ने कहा था कि तिब्बत तो चीन की हथेली है और नेपाल, बर्मा आदि उंगलियां हैं। इस तरह से चीन की हरकतों को हम जानते थे।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बलवानसिंह]

क्यूबा से जब रूसी फौजें वापस आयीं तो चीन ने श्री ख्रुश्चेव को बुजदिल कहा था और जब नेफा व लद्दाख से चीन की फौजें वापस गयीं तो रूस ने उसे होशियार कहा । इस तरह से दोनों में कोई फर्क नहीं है, दोनों का मकसद एक है कि किसी तरह से कम्युनिज्म का विस्तार व फैलाव हो। अब किस शक्ल में हो, दोनों के अमल में फर्क हो सकता है, लेकिन दोनों की मंजिल एक है। रूस चाहता है कि जितने गोरे मुल्क हैं उनकी लीडरशिप उसे मिले और इसी तरह से चीन भी एशिया व अफ्रीका के काले मुंह वालों की लीडरशिप चाहता है । चीन से इस मुल्क का सिर्फ जमीन का या कुछ पोस्ट्स का ही झगड़ा नहीं है, जिसके आजाद करने की बात हो, बल्कि उसके साथ ही साथ आइडियोलाजिकल वार भी है, खयालात की लड़ाई भी है । क्या हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में 'टा' और 'बा' का राज्य हो । जहां तक च्यांगकाई शेक की बात है, प्रजातन्त्र को वह भी नहीं चाहता । कहने के लिये तो पहले यही कहा जाता था कि कोई सोशलिस्ट कंट्री किसी दूसरे सोशलिस्ट कंट्री पर आक्रमण नहीं कर सकता, लेकिन सब ने देख लिया कि चीन ने हिन्दुस्तान पर हमला बोल दिया । इसी असेम्बली की २८, २९ व ३० दिसम्बर, सन् १९५९ की जो कार्यवाही में है उसमें भी देखा जा सकता है कि कुछ लोगों ने यहां तक कहा कि चीन कभी इस देश पर हमला कर ही नहीं सकता। तो वह तिब्बत की आजादी क्या थी ? यह हमारे सामने एक प्रश्न है, यह एक आइडियालाजिकल वार है, एक विचारों का संघर्ष है जो विचार करने की बात है।

कम्यूनिस्ट चीन ने जो चेलेन्ज हमारे सामने रखा है क्या उसको यह कांग्रेस की मिक्स्ड एकोनामी या देश की यह गरीबी और भुखमरी दूर करने देगी और क्या आज अपनी इस हालत में हम चीन के हमले का मुकाबला कर सकते हैं ? इस तरह से आप तैयार नहीं हो सकते और अगर यों ही यह देश कांग्रेस हुकूमत में रहा जैसे कि यह आज है और यही कांस्टीट्यूशन और कानून रहा तो कम्यूनिज्म से भी बदतर यहां के लोगों की हालत होगी और कोई राहत गरीबों को नहीं मिलेगी । आज हम फौजी शक्ति को बढ़ायें, कौन इसके लिये रोकता है कि वह न बढ़ाई जाये, आज देश चाहता है कि फौजी शक्ति बढ़े, हम लोग चाहते हैं और यह संयुक्त समाजवादी दल चाहता है और वह इस पक्ष में है कि देश की फौजी शक्ति बढ़े । आज दुनिया में भारत की जो बेइज्जती हुई है इससे ज्यादा और देश की बेइज्जती क्या हो सकती है ? बड़ी शान के साथ चीन की फौजें हमारे यहां घुसती आईं, नेफा और लद्दाख में लड़ाई हुई और फिर वापस हुये, लेकिन एक भी चीनी फौज का सिपाही हमारे क्षेत्र में नहीं पकड़ा जा सका और एक सिपाही भी हमारी फौज के कब्जे में नहीं आया जब कि हमारे हजारों सिपाही उनकी जेलों में बन्द किये गये और हम बहादुरी के साथ लौटते चले आये । हमारे प्रधान मंत्री केवल देश के सामने यह कहते रह गये कि चीन ने गद्दारी की है, यह एग्रेशन है लेकिन लड़ाई नहीं है ।

आज आप कहते है कि हम एमर्जेन्सी को तोड़ रहे हैं, लेकिन हमारा चार्ज है कि सरकार स्वयं एमर्जेन्सी पीरियड को तोड़ रही है । कोलम्बो प्रस्ताव को मानने के मानी ही यह है कि यहां पर एमर्जेन्सी नहीं है । आप इन कोलम्बो प्रस्तावों को मान रहे हैं जिनमें हजारों वर्ग मील भारत की जमीन चीन के कब्जे में चली जायगी । हमारा दल इन कोलम्बो प्रस्तावों को मानने के लिये तैयार नहीं है । इसलिये हम कहते हैं कि आप स्वयं सिद्ध कर रहे हैं कि एमर्जेन्सी नहीं है । आप चाहते हैं कि देश आज जैसा है वैसा ही रहे । आज आपकी हिम्मत नहीं है कि आप अपनी खोई हुई भूमि को छीन सकें । आप केवल गरीब के चीथड़ों को नोचने के लिये, उनको परेशान करने के लिये, अमीरों के संरक्षण के लिये ला ऐन्ड आर्डर को तोड़ने के लिये इमर्जेंसी का ढोंग रच रहे हैं । आपकी भ्रष्टाचार को रोकने की हिम्मत नहीं है, आज खुले आम जितना भ्रष्टाचार है उतना तो कभी अंग्रेजों के जमाने में भी यहां नहीं था । आज गांवों में रात को कोई हिफाजत लोगों की नहीं है, चोरी-डकैती, राहजनी पूरे जोर पर है और पता नहीं कि यह सरकार चल कैसे रही है ? हो सकता है कि हमारे गोविन्द सहाय जी बड़े टेलेन्टेड आदमी हैं यह कोई मिक्स्ड एकोनामी की बात करें और वह इस कांग्रेस के सड़े हुये समाजवाद की तारीफ करें, और यह भी हो सकता है कि उधर से माननीय नवल किशोर जी खड़े हो कर यह कह दें कि हम केबिनेट को कम करने के लिये तैयार नहीं हैं । आज वह रिहेंड डेम से अल्मूनियम के कारखाने

के लिये तो बिड़ला को सस्ती बिजली दे सकते हैं, देश के कारखानों के जरिये से वह पूंजीपतियों की जेबें भरने के लिये तैयार हैं, लेकिन आज बर्फीले पहाड़ों पर जो किसान का बालक मर रहा है, जो सिपाही जान दे रहा है, उस की तरफ उन का ध्यान नहीं है । परन्तु आज देश में ऐतिहासिक तब्दीली आ रही है उसके आते हुये यदि आपने इस मिटी हुई कांग्रेस से जो बदबू आने लगी है उस को आप ने नहीं रोका तो यह आक्रामक देश आप की तरफ निगाहे लगाये है ।

देश की नान-एलायनमेंट की पालिसी ने रूस और चीन में रिफ्ट किया है, किन्तु वह दोनों दोस्त हैं, भाई हैं, वह दोनों समझते हैं कि दुनिया में वार से कम्युनिज्म नहीं आयेगा । लड़ाई से नहीं आयेगा, कोल्ड वार से आयेगा । हिन्दुस्तान की आइडियोलोजी के ऊपर यह हमला है और हमारे दल ने उसके लिये आल्टरनेट जवाब दिया है, डेमोक्रेटिक सोशलिज्म । इसीलिये यू० एस० पी० की नींव पड़ी है ताकि भारत में जम्हूरियत जिन्दा रहे । अतः कांग्रेस पार्टी से मेरी मांग है कि अगर आप वाकई में समाजवाद मानते हैं तो यू० एस० पी० की आइडियालाजी को मानें । कुछ लोग कहते हैं कि यह चलेगी कि नहीं ? हमारे सामने जो कम्यूनिज्म का चैलेन्ज है उसको हम ऐक्सेप्ट करने के लिये तैयार हैं । आपको याद रखना चाहिये एशिया और यूरोप में जहां जहां सोशलिस्ट पार्टी में रिफ्ट रही वहीं कम्युनिज्म बढ़ा, इससे हमको सबक लेना चाहिये । पूंजीवादी नहीं चाहते कि यहां समता आये, जो भी पार्टी इस उद्देश्य को लेकर चलेगी वह यहां कामयाब नहीं हो सकती । हमारे समाजवादी संयुक्त दल ने प्रदेश के अन्दर प्रजातन्त्रीय समाजवाद को मजबूत करने की जिम्मेदारी ली है और माओ का यह ख्याल कभी पूरा नहीं होने देंगे कि कम्युनिज्म यहां स्थापित किया जाय, इसलिये हमने यह कदम उठाया है ।

हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी दो हिस्सों में बंटी है, एक माओ की और दूसरी ख्रुश्चेव की । अब तो देश में अगर कोई भक्त रहेगा तो इस मुल्क का रहेगा । ख्रुश्चेव और माओ अपने देश की बात करते हैं, उन दोनों की आइडियोलाजी से अगर यहां की कम्युनिस्ट पार्टी चलेगी तो देश धरातल को जायगा । इसलिये यहां अगर प्रजातन्त्रीय समाजवाद चलाना है तो कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इंडिया को तोड़ना होगा और हमारे साथ आकर बैठना होगा । जब हिटलर रूस को चीर रहा था तो स्टालिनग्रेड में स्टालिन प्रेसीडेंट रूजवेल्ट से भीख मांग रहे थे, यह तो आपके उस देश का हाल था, इसको आप क्यों भूल जाते हैं । स्वेडन तक के तो वह कर्जदार हैं । हिन्दुस्तान में अगर दो पार्टियों के मिलन की बात हुई है तो यह उचित ही है इसका आपको स्वागत करना चाहिये, और जनसंघ, कम्युनिस्ट पार्टी जो दूसरे देश की बात करती हैं, यह दोनों बातें इर्रेलीवेंट हैं, इससे भारत का कोई भला नहीं होने वाला है । क्या आप समझते हैं कि एक रिहन्द डैम बना कर या दो, चार हजार स्कूल खोल कर या कुछ सड़कें बना कर देश के अन्दर उठती हुई ऐतिहासिक तब्दीली को रोकने में कांग्रेस कामयाब होगी ? यहां का गरीब जो आज अपना खून बहा रहा है यह किस के लिये बहा रहा है ? आज आप पूंजीपतियों से कुछ नहीं ले सके । मुझे दुःख हुआ कि जब कानपुर में हमारे मुख्य मंत्री जी गये तो वहां के पूंजीपतियों ने पैसा नहीं दिया । ५ लाख रुपया उसने दिया जिसने ६५ लाख रुपया इस सरकार से लिया अपनी मिल चलाने के लिये और जो आज ६० हजार रुपया रोज की अपनी आमदनी करता है । मिक्स्ड एकोनामी की बात गरीबी, बेकारी और भ्रष्टाचार फैलाने के बाद इस कांग्रेस राज्य के अन्दर क्या हो सकती है ? मुझको उम्मीद है कि आप लोगों में से बहुत से होशियार लोग हैं । इस मुल्क को बचाइये और इसका तरीका अब यही है कि हम लड़ाई की तो तैयारी करें, लेकिन इस वक्त जरूरत है कि खेतों की पैदावार बढ़े । इस प्रदेश में किसानों के दो लाख कुंए बेकार पड़े हैं । कई लाख टन अनाज अब भी अमरीका से आ रहा है । ऐग्रीकल्चरल कंट्री है हमारा और आज हम इस तरह से भिखमंगे हो चुके हैं । कि हम जम्हूरियत से लड़ने के काबिल नहीं रह सके और न हम जम्हूरियत को बचाने के काबिल रह सके हैं । चीन से लड़ने का साहस हमारे अन्दर नहीं रह गया है । अगर लड़ने का साहस होता तो कोलम्बो प्रपोजल्स नहीं आते और हम हिम्मत के साथ कहते कि जो जमीन हमको अंग्रेज दे गये थे वह हम एक एक इंच लेकर रहेंगे । छः देशों की कोलम्बो कान्फ्रेन्स हुई । उसमें से एक ने भी आपका साथ नहीं दिया । आपकी फारेन पालिसी फेल हुई । इस वक्त मैं हिन्दुस्तान के

[श्री बलवानसिंह]

प्राइम मिनिस्टर के ऊपर कुछ भी कहने के लिये तैयार नहीं हूं, लेकिन यह जरूर कहने के लिये तैयार हूं कि पिछले १५ सालों में यह मुल्क नीचे की तरफ गिरा है। हो सकता है कि आज जेड० ए० अहमद साहब और सी० बी० गुप्ता साहब दोस्त हो जांय, लेकिन वे जा किधर रहें हैं ? क्या इससे वे समाजवाद की तरफ जा रहें हैं ? क्या इससे मुल्क बचेगा ? आज जो हमारे सामने चैलेन्ज आया है, जो इस देश की जमीन और जमीर, दोनों पर हमला हुआ है, मैं चाहता था कि गवर्नर साहब के एड्रेस में कोई नयी चीज आती, लेकिन वही पिटा पिटाया भाषण ।

श्री कृष्णानन्द राय (जिला गाजीपुर)--

भाषा के ऊपर कुछ कह दीजिये ।

श्री बलवानसिंह--

भाषा के ऊपर मेरे वही विचार हैं जो किसी देशभक्त के हो सकते हैं ।

आखिर में मेरा यही कहना है कि आज हम जिस दौर से गुजर रहें हैं मुझे उम्मीद थी कि इस इमरजेन्सी पीरियड के लिये गवर्नर साहब कोई नया प्रजातांत्रिक समाजवाद हमको देंगे, लेकिन आज जो चीज हमको मिल रही है उससे इस देश में उदासीनता आ रही है ।

आखिर में एक बात कह कर मैं खत्म करूंगा। मुझको बड़ा दुःख हो रहा है कि गरीबों पर से आपका विश्वास उठ रहा है । आप देखते नहीं है कि कितना चंदा उसने दिया है । आज हमारे प्रदेश के पास इतना भी पैसा नहीं है कि तीन हवाई जहाज भी खरीद सकें । किसी मुल्क की हिफाजत चन्दे से नहीं हुई है । कैसे मुल्क की हिफाजत हो, यह मैं एक मिनट में बताये देता हूं । आप इन बड़ी-बड़ी मिलों का राष्ट्रीयकरण कर दीजिये, चीनी मिलों का कर दीजिये, एल्मूनियम कारखाने का राष्ट्रीयकरण कर दीजये । आप उनसे पैसा लीजिये जिनके पास पैसा है ।

*कारागार राज्य मंत्री (श्री गोविन्दसहाय)--

अधिष्ठाता महोदय, मैंने माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के संबंध में, जो अपोजीशन की ओर से स्पीचेज सुनीं, उनके आधार पर मैं इतना तो निश्चय ही कह सकता हूं कि इस बार अपोजीशन ने सरकार के प्रति बहुत नर्मी का रुख अपनाया है, उसके लिये मैं उनका आभारी हूं । उन्होंने प्रादेशिक नीति पर कोई आलोचना नहीं की है । सारी बहस उन्होंने एक वैदेशिक नीति के बारे में ही की है और सुरक्षा के संबंध में की है । इसलिये सरकार की नीति के ताल्लुक में तो मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि आपको भी उससें कोई इख्तलाफ नहीं है।

मुझे कुछ बातों को सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि आप चाहे विश्वास करें या न करें, लेकिन मैं अपोजीशन को बड़े आदर की निगाह से देखता हूं और कोशिश करता हूं कि उसकी बात के पूरे सार को लूं । जो बात जिम्मेदार लोगों की तरफ से कही गई, काश उन्होंने अपनी गर्दन को थोड़ा लचीली करके देखा होता तो मैं नहीं कह सकता कि वे ऐसी बात कह सकते । कहां गया कि इमर्जेन्सी खत्म होनी चाहिये क्योंकि कोलम्बो प्रोपोजल्स मंजूर हो गये हैं । हमने मंजूर किये हैं,आपने नहीं किये हैं और चीन ने नहीं किये हैं तो आपके और चीन की वजह से इमर्जेन्सी रखना जरूरी है । मान लीजिये कि हमारी कोई भी राय हो और नेकनीयती के बजाय आपके शब्दों में बदनीयती हो, लेकिन जो आप दलील दे रहें हैं और हम में थोड़ी सी कमजोरी आती भी है तो भी हम इसको हटा नहीं सकते हैं । इसलये मैं आशा करता हूं कि इसके बारे में कोई गुंजायश नहीं है ।

लेकिन फिर भी अपोजीशन जो सुरक्षा के संबंध में कहता है मैं उसको कबूल करता हूं कि हिन्दुस्तान को जैसी लड़ाई में पड़ना पड़ा है वह पहले किस्म की है । वैसे प्युपिल्स वार में हम शरीक हुए हैं । लेकिन कोलोनियल पावर्स ने हमें घसीटा था । हमें अपना अनुभव नहीं था । इस

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बार नये ढंग की लड़ाई में हमें उतरना पड़ा है और हमको यह दावा नहीं है कि हम सब कुछ जानते हैं । हम बहुत सी बातें सीखेंगे । अब लड़ाई में बहुत तब्दीली हो गई है । एक लड़ाई के औजार दूसरी लड़ाई में बेकार हो जाते हैं । जितने औजार पहली लड़ाई में इस्तेमाल हुए दूसरी में बेकार हो गये । इसी तरह से टेक्निक्स बदलती रहती हैं । इसलिये सुरक्षा के संबंध में जितने अच्छे विचार मिल सकें कि किस तरह से लड़ाई प्यूपिल्स वार में बदलकर तैयारी कर सकते हैं, उसकी कदर करनी चाहिये । लेकिन अफसोस है कि सदन में या बाहर जितने सुझाव दिये गये हैं अगर हम उनको मानते तो उनसें हम को लाभ होने वाला नहीं है । चाइना को लाभ होने वाला है । यानी अपोजीशन का जो स्टैन्ड है बिलकुल उधर ले जाता है जिधर चायना ले जाना चाहता है, जैसा कि मिसाल के तौर पर चाइना का सारा टेकनीक इंडियन पीपुल को बुरा कहने का नहीं है । उसका टेकनीक इंडियन गवर्नमेंट और इंडियन गवर्नमेंट में नेहरू की परसोनैलिटी को मार्टल ब्लो देना है । क्योंकि जितनी नीतियों का नेहरू ने निर्माण किया है सारी की सारी उनके कम्पटीशन में जाती हैं । दूसरे यह कि हिन्दुस्तान को नान-अलाइनमेंट से हटाना है । तीसरे हिन्दुस्तान जो डेमोक्रैटिक प्रासेस से तरक्की करना चाहता है, उसको उससें हटा कर लड़ाई में, टेंशन के आलम में डालना है । यह चायना का ध्येय है । जो आपका ऐप्रोच है वह भी यही है ।

अपोजीशन से सबसे ज्यादा हमला हुआ है प्राइम मिनिस्टर की अयोग्यता, अदूरदर्शिता, नाकाबलियत, दिल की कमजोरी, हाथों के पतलेपन, दिमाग के खोखलेपन पर । जितने शब्द कहे जा सकते हैं सारे के सारे अपोजीशन की तरफ से इसमें इस्तेमाल हुये । अभी सदन में कहा गया प्राइम मिनिस्टर के हाथों को इतना मजबूत करने की जरूरत नहीं है, जितना उनके दिल को मजबूत करने की जरूरत है यानी वह दिल के मरीज हैं, दिल कमजोर है कहीं लरजिश न खा जाय । मेरा खयाल है कि चायना भी यह लैंगुएज नहीं यूज करता जो नतीजा है आपके शब्दों का । दूसरे चायना इस लड़ाई में इंडियन गवर्नमेंट से इंडियन पीपुल को अलग करना चाहता है । सही बात है, लड़ाई लड़ने का यह तरीका होता है, हर मुल्क की यह दानिशमन्दी होती है कि पीपुल को गवर्नमेंट से जुदा करो ताकि सारे वार एफर्ट्स गिर जायं । जो भी वार एफर्ट्स हो सकते हैं गवर्नमेंट के जरिये हो सकते हैं, जैसी भी गवर्नमेंट हो । एक प्रोसीजर हमने तय किया है, गले हैं, सड़े हैं, लूले हैं, लंगड़े हैं क्योंकि कल कहा गया कि क्या सड़े गले लोगों को तौलते हैं, बहरहाल जैसे भी हैं, लोगों ने हमको भी चुना है आपको भी चुना है । गवर्नमेंट एक प्रतीक है, पीपुल की तैयारी करने की, मानसिक तैयारी करने की, औद्योगिक तयारी करने की, बौद्धिक तैयारी करने की, उसके बारे में यह राय हो, जैसा कि एक माननीय सदस्य कह रहे थे कि हम चाइना से लड़ने के योग्य नहीं हैं । मैं उनका अहसानमन्द हूं कि उन्होंने इधर वालों को नहीं कहा । उन्होंने कहा कि हम लड़ाई लड़ने के योग्य नहीं हैं । अगर यह खबर आज दुनिया में जाय कि हिन्दुस्तान के लेजिस्लेचर में एक बढ़ती हुई पार्टी के लीडर की राय है कि हम चायना से नहीं लड़ सकते हैं तो आप लड़ाई हार ही गये, आपने तो मान लिया । (व्यवधान) हमसे मतलब हम ही होता है ।

श्री बलवानसिंह—

मेरा मतलब था मजबूत बनिये ।

श्री गोविन्दसहाय—

एक एक शब्द जो आप यूज करते हैं उसके मतलब होते हैं ।

श्री अधिष्ठाता—

आप व्याख्यान जारी रखें । माननीय बलवानसिंह के झगड़े में न पड़ें ।

श्री गोविन्दसहाय—

आपके दिल में क्या है यह दुनिया नहीं जानती । जो फिकरे जबान पर हैं और कागज पर लिखे गये हैं उनमें आपने कहा कि हम अयोग्य हैं । हम नहीं लड़ सकते । अगर यह खबर जाय कि हम अयोग्य हैं, हमारे लीडर का दिल कमजोर है, हमारी तैयारी नहीं है, जो तैयारी है वह गलत है, तो आप लड़ाई हार गये, मैं आपसे कहता हूं । और इसलिये मैं आपसे ऐसी आशा करता हूं कि जो भी शब्द आप बोलें वह नपातुला होना चाहिये क्योंकि लड़ाई में शब्द जो बोले जाते हैं

[श्री गोविन्द सहाय]

उनसे कंट्री का मारेल बनता है । आप देखें, फ्रांस जैसा मुल्क १४ दिन में हार गया क्योंकि उसका मोरेल गिर गया। अंग्रेजों का मोरेल नहीं गिरा, अंग्रेज हारते हारते जीत गये और हिटलर जीतते जीतते हार गया । इसलिये मान लिया कि कमियां हैं, जैसा मैं जानता हूं कि चायना से लड़ने की हमारी कोई तैयारी नहीं थी, हम नहीं प्लान करते थे कि चायना ऐसा गलत काम करेगा और मेरा आज भी यकीन है कि शायद इतिहास इस बात को बतायेगा कि चायना ने हिन्दुस्तान पर ऐग्रेशन करके अपने को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाया है और उन तमाम सिद्धांतों को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाया जिनकी कि वह चर्चा करता रहा है और जो हमसे यह कहते हैं कि उनको सात साल से पता था, कोई कहता है आठ साल से पता था, कोई कहता है ६ साल से पता था, बहरहाल आपको पता रहा हो, जिनका दिमाग चीनियों जसा ही हो वह इस कारीगरी का पता चला सकते थे। हमको नहीं पता था और आज भी मैं आपसे कहता हूं कि क्या आपको चायना की सिर्फ एक ही बात का पता था कि वह आक्रमण करेगा या यह भी आपको पता था कि वह आक्रमण करके आसाम के मध्य तक आ जायगा तो एकदम से लौट जायगा ? मेरा यकीन है कि चायना का इस ढंग से पीछे लौटना रेकग्नीशन है इस बात का कि उसकी लीडरशिप को इस बात का एहसास हुआ कि हम फंस गये और यह मामला महंगा पड़ने वाला है । (व्यवधान) मैं चेयरमैन महोदय, बड़े आदर के साथ अपोजीशन से यह आशा करता हूं कि मैं न खुद किसी से प्रोवोक होता हूं और न चाहता हूं कि आप किसी मेरी बात से प्रोवोक हों ।

कुंवर श्रीपालसिंह---

माओ की वार टेकनीक जो पुस्तक है उसको जरा आप पढ़ लें तो मालूम हो जाय कि वह क्यों वापस गया है ।

श्री गोविन्दसहाय---

वही मैं कह रहा था और जो बात मैं कह रहा था वह आपने भी सिद्ध कर दी कि माओ की कारीगरी आपको ज्यादा मालूम है । यह मैं खुद ही कह रहा हूं ।

(इस समय ४ बजकर २५ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुये।)

श्री बलवानसिंह---

श्रीमन्, हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री ने कहा कि हम लोग कमजोर हैं, चीन ज्यादा ताकतवर है और उसकी फौज दुनिया के अन्दर सब से ज्यादा बड़ी है । यह मेरे शब्द नहीं हैं ।

श्री गोविन्दसहाय---

अब जब हर लाल जी ने क्या कहा, किस कान्टेक्स्ट में कहा यह बात तो जानी जा सकती है । मगर आपको जवाहर लाल जी की सिर्फ यही बात याद रही, और पचासों बातें मैं उनकी बता सकता हूं । बहरहाल, वह कोई बहस की बात नहीं है । आपकी स्लिप आफ टंग हो गई और आप गलत बात कह गये, स्टेट्समैनशिप यही है कि आप उसको मान लीजिये कि आप गलत बात कह गये । जैसा मैंने कहा चायना हिन्दुस्तान को उसकी मूल नीतियों से हटाना चाहता है । आप भी हमको वही मशविरा देते हैं ।

श्री उपाध्यक्ष---

जरा आपस में बातचीत न करिये ।

श्री गोविन्दसहाय---

चायना हमको ननएलाइनमेंट से हटाना चाहता है, आप भी हमको वही मशविरा देते हैं । चायना हमको बड़ी लड़ाई में फंसाना चाहता है, आपका मशविरा भी यही है कि हम न सिर्फ चायना से लड़ें बल्कि जो उसके दोस्त हैं उनसें भी जाकर लड़ें । इन मशविरों से वह बात ज्यादा सही साबित होती है, जो मैं कह रहा हूं । अगर आप यह मशविरा दें कि इस वार एफर्ट्स को चलाने के लिये सिविल डिफेंस का यह रुख होना चाहिये ।

हर क्लास के लिये यह प्रोग्राम होना चाहिये, जो खामियां इस लड़ाई में सामने आई हैं, जिन कमियों का अनुभव हुआ है उन कमियों को दूर करना चाहिये तब तो हमें फायदा होगा। वह एक भी विचार ऐसा नहीं दे सके इन चार महीनों में इस सदन में या बाहर कि लड़ाई को कैसे कामयाबी के साथ एक्जीक्यूट करें और उसका क्या प्रोग्राम हो इसके बारे में कोई डिटेल्स उनकी तरफ से हमको नहीं मिली। मैं खुद इस बात को कबूल करता हूं जैसा कि हमारे और लोगों ने भी कबूल किया है कि इसमें कुछ गलतियां हुई। यह एक माडर्न वार है। हमारे लिये नया काम है लेकिन उसमें हम आपकी सलाह से वंचित रहे। इसके अतिरिक्त जो चारजेज हम चीन पर लगाते हैं वही बातें कहकर आप साबित करते है कि वह गलत है। जैसे कि हमारा चार्ज ३ बातों का चीन पर है। एक तो बैड फेथ कि उसकी बातों का यकीन नहीं है। दूसरा ऐग्रेशन कि उसने हमारे देश पर ऐग्रेशन किया है, और तीसरा एक्सपैन्शनिज्म कि वह फैलाँव करना चाहता है। यह हमारे उसके ऊपर तीन चार्ज है। आप हमको क्या मशविरा देते हैं। जहां तक बैड फेथ का सवाल है मैं उसके विषय में यह कहूंगा कि कोलम्बो प्रपोजल्स में कुछ पीस की बात थी, यानी हमने पार्लियामेंट के अन्दर एक नीति अपनाई और जब चीन वापस गया तो हमारे लिये यह लाजिमी था और आजकल के जमाने में यह लाजिमी है कि सारी दुनिया के जनमत को देखना पड़ता है और एक राय आम्मा को देखना पड़ता है। उसकी बाबत हमारे प्राइम मिनिस्टर ने यह एलान किया कि अगर चीन ८ सितम्बर, १९६२ की लाइन तक वापस चला जाय तो सिर्फ इतनी बात तय हो सकती है कि हम टेबिल पर बैठें, यानी उस प्रकार की नीति अपनाई गई। जब यह बात तय हो गई तो दुनियां के लोगों ने इसको जाना और दुनिया के लोगों ने इसमें दिलचस्पी ली और दिलचस्पी लेने के बाद एक मसविदा तैयार किया। आज आप कहते है कि यह न मानो। अगर आपकी बात मान ली जाय तो दुनिया के लोग कहेंगे कि हिन्दुस्तान की लीडरशिप में यकीन नहीं है, उसकी बातों में यकीन नहीं है। जो चार्ज हम चीन पर लगाते है बैड फेथ का वही हम पर लगाया जायगा।

आप मशविरा देते हैं कि तिब्बत पर अटैक करिये। अब तिब्बत कैसे उसके पास गया यह तो अलग बात है, लेकिन तिब्बत हिन्दुस्तान का जुज नहीं था। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने तिब्बत रिकग्नाइज किया कि वह चीन का अन्तरंग पार्ट है और ब्रिटिश गवर्नमेंट ने मैकमोहन लाइन को सीमा करार दी। हमने तिब्बत को उस तरह से प्रोटेस्ट के साथ रिकग्नाइज किया। आप मशविरा देते हैं कि तिब्बत पर अटैक करिये। क्या दुनिया इसको एग्रेशन नहीं कहेगी? एक तरफ आप हमसे शिकायत करते हैं कि हमारी मिलिटरी कमजोर है, उसको पीछे हटना पड़ा और दूसरी सांस में ही कहते है कि तिब्बत पर हम अटैक कर दें। अगर उस तरह से किया जायगा तो क्या हम पर ऐग्रेशन का चार्ज नहीं आयेगा?

एक दूसरा चार्ज हम पर यह लगाया जाता है कि हिन्दुस्तान की सीमाओं को हम निरंतर कम करते जा रहे है। पहले हिन्दुस्तान की सीमा बहुत बड़ी थी। एक दफा पाकिस्तान बनाया गया तो सीमा खत्म हो गई। अब वह कहते हैं कि इधर भी कटने वाला है। हमारी सीमायें अफगानिस्तान तक थीं, पच्छिम में और पूर्व में कम्बोडिया तक थीं और मलाया तक थीं। अगर आपकी बात मान ली जाय तो क्या यह ऐग्रेशन की तरफ हमारा कदम नहीं होगा? मैं सिर्फ यह बात कहना चाहता हूं कि इस जमाने में हम दूसरे मुल्क को ऐग्रेसर कहते हैं जब कि उसने हमारी जमीन पर हमला किया, तो क्या हम किसी दूसरे की जमीन पर अटैक कर सकते हैं? हम ऐसा नहीं कर सकते है। यह उनका दूसरा मशविरा था।

कुछ दोस्तों ने शिकायत की कि लड़ाई चन्दे से नहीं जीती जा सकती। अगर चन्दा वसूल करने के लिये अदालतों में इस तरीके से बरता जाता है, जैसा कि बतलाया गया, तो वह नामुनासिब है। जिस जिले में मुझे जाने का मौका हुआ है मैंने पब्लिकली इस बात को कहा है यह हो सकता है कि कहीं कुछ गलती हुई हो। लेकिन अगर आफिशियल्स चन्दा जमा करते हैं तो अपने निजी उपयोग के लिये तो जमा नहीं करते। अगर कहीं किसी ने किया है तो उसको रोकना चाहिये, कोई स्पेसिफिक शिकायत हो तो उसको दूर करना चाहिये।

[श्री गोविन्दसहाय]

लेकिन चूंकि यह वार एफर्ट है इसमें लोगों का अगर मनोबल टूट गया और जो उत्साह लोगों ने दिखलाया है वह भंग हो गया तो आप महज हथियारों और फौजों के बल लड़ाई नहीं जीत सकते। देवरिया ने अगर सोना अधिक दिया है तो उग्रसेन जी को भी गौरव होना चाहिये था और उनको भी मेरी ही तरह से वहां के लोगों को बधाई देना चाहिये था। अब इसमें यह कहना कि कहीं से मोल लिया गया या कुछ और हुआ, यह छोटी बातें हैं, इनको कहने से कोई नतीजा नहीं निकलता है। जो फायदे की बात है, हमें उन्हीं पर अपने को कंन्संट्रेट करना है। जैसा मैंने कहा कि यह नया काम है इसमें गलतियां हमसे हो सकती हैं।

मार्डन वार में तीन चीजें जरूरी हैं। पहला मोरेल, दूसरा इंडस्ट्रियल पोटेंशल और तीसरा वार पोटेंशल। अनेक शिकायतें हैं, लेकिन जैसा मैंने कहा कि यह केवल सरकार का ही काम नहीं है जो उसे करना है। आप को भी यह लिहाज रखना है कि कोई काम कहीं ऐसा न हो जाय जिससे आपकी जो इच्छा है उसका ही सैबोटेज हो जाय। अभी कल ही जो स्पीचेज हुई हैं उनमें कहा गया कि हमारे लीडर्स निकम्मे है, हमारी फौजें पीछे हटीं और हमारी मिलिटरी पराजित हुई। अगर आप कहते है कि हमारी मिलिटरी की पराजय हुई तो आप मिलिटरी के मोरेल को तोड़ते हैं। अगर पराजय हुई भी तो भी हमें कोशिश करनी चाहिये यह जानने की कि किन बातों की वजह से हुई। मैं नहीं मानता हूं कि हिन्दुस्तान की मिलिटरी की पराजय हुई, एक फ्रंट पर कुछ खास कारणों से हमारी तैयारियां नहीं थीं जिसके कारण यह डिबेकिल हमारे साथ हुआ, और यह डिबेकिल हमारे साथ ही नहीं बल्कि दुनिया की जो बड़ी सुसज्जित कौमें हैं जिनके पास हर किस्म के औजार हैं, ब्रिटेन की जर्मनी के मुकाबिले में हुई, अमरीकन्स की चीनियों के मुकाबिले में हुई, अभी कोरियन वार में जो अमरीकी फौजों का डिबेकिल हुआ वह दुनिया के इतिहास में दूसरे नम्बर का डिबेकिल है। और एक जगह पर मिलिटरी डिबेकिल को समूची मिलिटरी की पराजय कहना और सारी नीतियों को छोड़ने की बात कहना, यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। यह गुस्से की बात तो जरूर है, विवेक की बात नहीं है। मैं जानता हूं कि आपको चोट लगती है, लेकिन हमको भी लगती है। देश की एक इंच भूमि भी अगर शक्ति के जोर में कोई ले लेता है तो देश को जीने का अधिकार नहीं है। उसको कोई जीने भी नहीं देगा अगर उसमें शक्ति नहीं है कि वह अपनी भूमि की रक्षा कर सकें। जब हम आपको यह क्रेडिट देते है कि आप मातृभक्ति से प्रेरित हैं तो हम भी आशा करते हैं अगर पूरे नहीं तो कम से कम एक बटा चार, एक बटा दस कुछ भी हमको आप भी क्रेडिट देंगे कि अगर आपसे ज्यादा नहीं तो आपसे कम भी नहीं हैं देश के प्रति हमारा प्रेम। लेकिन यह कहना कि यह सब करके तुम देश को खत्म कर दोगे, देश मर जायगा तो यह सब बातें सबोटेजिंग आफ मोरेल के सिवाय और कुछ हो नहीं सकती है। इन सब बातों से नुकसान होता है उस ध्येय को जिस ध्येय से आप प्रेरित है।

इसके साथ साथ आपने जो यह कहा है कि इमरजेंसी का उचित उपयोग होना चाहिये वह सही है और इमरजेंसी का उपयोग अपनी पार्टी को बढ़ाने में नहीं होना चाहिये, यह भी सही है। यह आपने कहा कि होम गार्ड्स काहे के लिये इस्तेमाल होंगे? यह होम गार्डस, गार्ड आफ आनर किसे देंगे? तो आप समझें कि गार्ड आफ आनर तो देश की सम्पत्ति है। वह आपके ही काम आयेंगे और हमारे भी काम आयेंगे, वह देश के काम आयेगा। पार्टी, गवर्नमेंट और कंट्री, तीनों को एक में न मिलाइये। आपका खयाल यह हो रहा है कि हम और बातों में निकम्मे हैं और इसमें भी हमारी बदनीयती है और इमरजेंसी के नाम पर हम पी० आर० डी० आदि की स्थापना कर के अपनी पार्टी को ही और बढ़ाना चाहते है (व्यवधान) इससे उसका वास्ता नहीं है। वह पर्सनल बात है। मैं समझता हूं कि पार्टी, गवर्नमेंट और कंट्री, इन सब को एक में मिलाना नहीं चाहिये। क्राइसेस में यह बात सही है कि गवर्नमेंट ही एक जरिया हो सकती है रेजिस्टेंस को आर्गनाइज करने का। और इसलिये मेरा खयाल है कि आप के शकूक सही नहीं हैं।

कुछ चर्चा यहां आइडियालोजी की की गयी और इस के लिये इस सदन को कुंवर श्रीपाल सिंह जी का आभारी होना चाहिये। उन्होंने वाकई डिबेट में कुछ जान डाली और उसे आइडियोलाजिकल स्तर पर लाने की कोशिश की। मैं इस से इत्तफाक करता हूं कि चीन एक आइडियालाजी को रिप्रेजेंट करता है और उस आइडियालोजी का मुकाबला करने के लिये हमें हर किसान में, मजदूर में, हर आदमी में एक आइडियोलाजिकल फायर पैदा करनी चाहिये। वह आइडियोलाजी क्या हो सकती है ? कुंवर श्रीपाल जी का खयाल है कि वह आइडियालाजी आर्गनाइज ही नहीं हो सकती जब तक कि आप सोशलिज्म को मानते हैं। उनकी बात का थीम यही है। बलवान सिंह जी का खयाल है कि वह आइडियालाजिकल थीम सिर्फ सोशलिज्म ही हो सकता है और हमारा और कम्युनिस्ट दोस्तों का भी यह कहना है कि सोशलिज्म से ही यह संभव है और इस में कोई मतभेद नहीं है।

अब मैं कुंवर साहब से बड़े अदब से कहना चाहूंगा कि जब वे सोशलिज्म को छोड़ने की बात कहते हैं तो उन्हें यह ध्यान रखना चाहिये कि सारी दुनिया की जो इस वक्त करेंट्स हैं विचारों की पिछले १००, १५० सालों की, और जो यहां की व्यवस्था और परम्परा है, जो उन के कारण उथल-पुथल हुई है दुनिया में, वह सब इस सोशलिज्म के कारण ही हुई और उसे उन्हें आंखों से ओझल नहीं करना चाहिये। आज की दुनिया में रेल, तार, टेलीफोन और वायरलेस ने लोगों को एक दूसरे से जोड़ा है और एक ऐसी इंटरनेशनल व्यवस्था का निर्माण हुआ है कि जिसे हम सोशलिज्म कह सकते हैं। यह सोशलिज्म कैपिटलिज्म की प्रतिक्रियारूप में उभर कर सामने आया है। जैसे कैपिटलिज्म इंटरनेशनल है वैसे ही यह सोशलिज्म भी इंटरनेशनल है। फर्क है सोशलिज्म को लाने की टेकनीक में, हमारे और चीन में यहीं भेद है। फर्क इसलिये है कि वह सोशलिज्म की नकाब पहन कर उससे हट रहा है और हम उससे हटे नहीं। सोशलिज्म ने दुनिया के करोड़ों इंसानों की जिन्दगी बनायी है और उसका नतीजा हमें आज दिखायी दे रहा है। पिछड़े हुए मुल्कों ने प्लानिंग के जरिये, सोशलिज्म को अपना कर अपनी शक्ति को बढ़ाया है, अपनी तरक्की की है इसलिये हमारे लिये सोशलिज्म का छोड़ना मुश्किल है। डेमोक्रेटिक सोशलिज्म हमने अपनाया है और इसीलिये हम इधर बैठे हैं और आप उधर। असल में आपने सिर्फ हमें छोड़ा है। जहां तक सोशलिज्म की बात है वह तो हिसाब किताब की बात है। आपका सोशलिज्म अलग पार्टी बनाकर चल सकता है यह सही नहीं है। जिस पार्टी ने आजादी दिलायी है उसका रुख सोशलिज्म की तरफ मोड़ कर लाना आसान है और मैंने इसका तजुरबा किया है। मैंने गर्दिश में कई साल बिताये हैं और यह मैं सफाई से कहना चाहता हूं। मैं ईमानदारी से वह बात छिपाना नहीं चाहता। मेरा खयाल था कि कांग्रेस के जरिये सोशलिज्म नहीं लाया जा सकता, लेकिन तजुरबे ने मुझे यह बतलाया कि चूंकि कांग्रेस की रूट्स लोगों में है, उसके पीछे एक ट्रेडीशन है, एक परम्परा है, एक इतिहास है, इसलिये एक चले चलाये धंधे के जरिये से काम करना आसान है बनिस्बत किसी एक नये धंधे के जरिये कोई नया काम करने के। इसलिये तजुरबे की बिना पर मैं कहना चहता हूं कि सोशलिज्म को लाने के लिये कांग्रेस का मेकैनिज्म ज्यादा उपयुक्त है। मैं यह नहीं कहता कि कांग्रेस में सभी सोशलिस्ट है, लेकिन मेरा यह यकीन है कि सोशलिज्म पर जब आप बहस करें और उसे देश में लाने की बात करें तो उसके लिये कांग्रेस का मैकेनिज्म ज्यादा व्यावहारिक लगता है। इसलिये मैं आपको यह भी दावत देता हूं कि बजाय इसके कि रोज रोज यह झगड़े होते रहें, यहां पर तो मैं नहीं समझता हूं कि इस क्राइसिस के जमाने में इसकी कहां तक आवश्यकता है। असलियत में हमें सोशलिज्म के उसूलों को इम्पलीमेंट करना है और हमने उन्हें किया है। आपको यह मालूम होना चाहिये कि उनको बड़ी मुस्तैदी से इम्पलीमेंट करने की आज आवश्यकता है। मैं तो यही कहूंगा कि सोशलिज्म के बारे में हमारे अन्दर गट्स की कमी है। आप देखें कि जिस मुस्तैदी के साथ आज सोशलिज्म के उसूलों का इम्पलीमेंटेशन होना चाहिये, वह आज नहीं हो रहा है। इसलिये आज जरूरत है कि हम और आप मिल कर उन उसूलों को पाने की कोशिश करें। हमको चाइनीज से लड़ना है और अपने देश की रक्षा करनी है।

[श्री गोविन्दसहाय]

मैं आपको एक बात और बता दना चाहता हूं कि आखिर चीन ने हमारे ऊपर क्यों हमला किया है ? इसलिये कि जब उसने देखा कि हिन्दुस्तान का सोशलिज्म तरक्की पर है, उसकी गुंडविल और दूसरे देशों में बढ़ती जा रही है और उस वजह से चीन का जो तरीका है वह लोगों की आंखों से हटता जा रहा है, इसलिये उसने भारतवर्ष के ऊपर हमला किया। उसने हमारी सोशलिज्म की प्रणाली की सफलता को देखकर ही ऐसा किया इसलिये हम सोशलिज्म को नहीं छोड़ सकते हैं।

मैं माननीय बलवान सिंह जी को भी यही राय दूंगा कि वह कम्यूनिज्म से भी इत्तिफाक रखें। मैं आपको बता दूं कि कम्यूनिस्ट होते होते भी आदमी फासिस्ट हो जाता है। हो सकता है कि शायद लड़ते लड़ते ऐसा हो जाय। आप जर्मनी को देख लें कि वह सोशलिज्म से लड़ते-लड़ते बाद में फासिस्ट हो गया, वह बाद में फासिज्म से नेशनलिज्म पर आ गया। इसलिये मुझे डर लगता है कि कहीं उनका विरोध करते-करते आपकी गाड़ी उस लाइन से न उतर जाय जो आपको और हमें जनता के हित के लिये कायम रखनी है। इसलिये मैं समझता हूं कि जो बातें आज सदन में कही गई, उनको हमें सोचना चाहिये और उन्हें समझ कर उन पर चलने की कोशिश करनी चाहिये और अपने दिमाग को व्यर्थ के झगड़े में नहीं लगाना चाहिये। आपको यह महसूस करना चाहिये कि यह बड़ा ही नाजुक दौर है। हमको नई शक्तियों और नये विचारों एवं नई टेकनीक्स को अपनाना है। इसलिये हमको काफी विचार विनिमय की जरूरत पड़ेगी। अगर आप उस दिशा में लगें तो सरकार को आपकी नीतियों से काफी लाभ हो सकता है। इस समय जो स्थिति पैदा हो गई है, उसको हमको और आपको दोनों को मिलकर संभालना है। हमने क्यों एलिशन नहीं बनाया है। आज की स्थिति को देखते हुये हमारे और आपके मेल की बड़ी आवश्यकता है। इसलिये मैं आपको दावत देता हूं कि मेल हमारी पालिसीज में भी होना चाहिये। अगर आप पालिसीज का विरोध करते है और ऐसी ही खिलाफत करते जाते हैं तो देश का कल्याण कभी नहीं हो सकता और देश के कल्याण की बातें केवल कागज पर रह जायेंगी। हमसे ज्यादा आपके खून में गर्मी है और यह भी हो सकता है कि पावर में रहते रहते कुछ हमारे अन्दर खामियां आ गई हों और हम अपनी उन ताकतों का सदुपयोग न कर पर रहे हों, इसलिये आप हम से मिलकर चलिये। मैं आपसे यह जरूर कहूंगा कि इधर चीन के आक्रमण के बाद से चार महीनों में एक भी आपने ऐसा उदाहरण नहीं प्रस्तुत किया कि जिसे हम यह कह सकें कि यह क्रियात्मक सुझाव हमारे सामने आया है जिससे कि वार एफर्ट में मदद मिल सकती हो। आपको ऐसे काम करने चाहिये और ऐसे सुझाव देने चाहिये कि जिनसे एडमिनिस्ट्रेशन के नये आधारों को बल मिले। मैं समझता हूं कि यदि आप इस सिद्धांत का पालन करते तो इससे हमारा और आपका दोनों का कल्याण हो सकता था। आप कहते हैं कि हम चीन का मुकाबला नहीं कर सकते, परन्तु मैं कहता हूं कि यदि आप हमसे मिल कर चलें तो हम अपनी शक्तियों का ठीक तरीके से उपयोग करके, उसको भगा सकते है और आसानी से उसका मुकाबला कर सकते है।

*श्री शारदाभक्तसिंह (जिला हरदोई)--

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय नेता विरोधी दल द्वारा प्रस्तुत संशोधनों का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। पिछले दो दिन से जो वादविवाद चल रहा है, उसके अनुभव से मैंने यह पाया कि पिछले दिनों में देश में जो दुःखद घटनायें घटी हैं। उनसे हमने कोई शिक्षा नहीं ली। हम काल्पनिक संसार से अभी वास्तविकता पर आ नहीं पाये है। माननीय गोबिन्द सहाय जी की दूरदर्शिता की मैं प्रशंसा करता हूं कि इसी सदन में वह भविष्य में क्या होने वाला है इसको बार बार बता देते है और जब भविष्य में वह बात नहीं होती है तो पूरे वर्णन के साथ यह भी बता देते है कि क्या कारण थे कि नहीं हुई। इस विश्लेषण की मैं

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

तारीफ अवश्य करता हूं, लेकिन इस बात को हम नहीं भूल सकते कि कम्युनिस्ट चीन का आक्रमण इस देश पर हुआ और उससे जो वातावरण देश में बना और भारतीय जनसंघ और सभी दलों की ओर से उस सुरक्षा के कार्य में अपनी दलगत भावनाओं को भुलाकर एक साथ मिलकर एक अजेय शक्ति का निर्माण करने के लिये सहयोग का हाथ बढ़ाया गया। आज भी हम उस सहयोग को देने के लिये जो अपने से हो सकता है कर रहे हैं और आतुर भी हैं।

माननीय गोविन्द सहाय ने कहा कि विरोधी दलों की ओर से हमें कोई ऐसी बात इन ४ महीनों में नहीं बतायी गयी जिससे हम जनता के मनोबल को बढ़ा सकते, सुरक्षा के कार्यों में आगे बढ़ सकते। मैं उनसे एक ही बात कहना चाहता हूं, क्योंकि उन्होंने सुरक्षा के प्रश्न पर काफी विवेचन सा जाहिर किया है कि जब आक्रमण के विरुद्ध प्रदेश की जनता ने प्रतिक्रिया व्यक्त की उससे यह निर्विवाद सिद्ध है कि उसकी मौलिक एकता, अन्तर्भूत राष्ट्रीयता और उत्कट देश-भक्ति की भावना का प्रकटीकरण हुआ। स्थान-स्थान पर लोगों ने दिल खोल कर धन दिया और अपने इस संकल्प को प्रकट किया कि शत्रु से लोहा लेने में कोई कसर नहीं उठा रखी जायगी। त्याग और बलिदान के उदाहरण देश के सम्मुख आये, लोगों में प्रेरणा हुई कि हम शत्रु से जब तक एक इंच भूमि पर भी उसके चिन्ह है, बराबर लड़ाई जारी रखेंगे चाहे कितना भी त्याग क्यों न करना पड़े और इन्हीं जनभावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए हमारी संस्था ने एक संकल्प लिया और निश्चय किया कि हम अपने पवित्र देश की पवित्र भूमि से एक एक इंच से जब तक आक्रमणकारी को भगा नहीं देते तब तक हम चैन नहीं लेंगे, हम आराम हराम समझेंगे और उस संकल्प को इस भारत के नागरिकों ने एक परम पवित्र प्रतिज्ञा के रूप में, व्रत के रूप में देखा। और जब देश में युद्ध प्रयत्नों के लिये सामग्री इकट्ठा हो रही थी, उस समय यह घोषणा करना, उस पवित्र पावन प्रतिज्ञा को छोड़ कर चीन का कोलम्बो प्रस्ताव के संबंध में जो रवैया अख्तियार किया गया, क्या उसने जनता के मनोबल पर प्रभाव नहीं किया है? आज जनता स्तंभित है। १२ हजार वर्ग मील भूमि को चीन दबाये बैठा है, उसने हमारे पौरुष को ललकारा है, वीरता को चुनौती दी है और कहा है कि भारत देश पर हमला करके और अपने आप वापस जाकर हम अनुभव कर रहे हैं कि हमारे द्वारा वह दे.ा चला गया। अच्छा है, चला जाय, हम भी उसका स्वागत करते हैं, लेकिन हम इस बात को भूल नहीं सकते कि अगर दुश्मन हमारे घर में आकर तमाचा मार कर यह कह कर वापस चला जाय कि देखो, अगर गड़बड़ करोगे तो फिर आयेंगे, तो हम उसे वापस जाना नहीं कहते, वह हमारी पराजय और पराभूत की अवस्था है। और उस पराजय की अवस्था में प्रदेश की जनता ने यह अनुभव किया है कि जिस दृढ़ता के साथ मार्गदर्शन होना चाहिये, उससे हम अलग हट रहे हैं। चारों तरफ मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता थी, हम निश्चय करते और निश्चय पर डटे रहते कि जब तक भारत की एक इंच भूमि पर शत्रु का कब्जा रहेगा, तब तक हम समझौते की बात नहीं करेंगे।

भारतीय जनता ने यह निश्चय किया है कि ८ सितम्बर की बात के अलावा अन्य किसी बात को कह कर कोई समझौता करना जनता के मनोबल को गिराना है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि भारतीय जनसंघ का यह निश्चित मत है कि इमरजेन्सी को खत्म नहीं करना चाहिये, हम उसको तब तक रखना चाहते हैं जब तक कि हमारी एक इंच भूमि भी शत्रु के अधिकार में रहती है। हमारी तरफ से विरोधी दल के नेता ने यह कभी नहीं कहा कि हम इमरजेन्सी नहीं चाहते या देश में संकटकालीन स्थिति नहीं है। उनके कहने का अभिप्राय यह था कि जिस तरह से कांग्रेस और तथाकथित संकटकालीन स्थिति चल रही है, सीमा क्षेत्र पर अगर चीनी आगे नहीं बढ़ेंगे तो हम भी नहीं बढ़ेंगे जो यह भावना है, तथा इस परिस्थिति का अनुचित लाभ उठाकर जो विरोधी पक्षों को प्रभावहीन बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है, वह प्रजा-तंत्र के लिये, राष्ट्रीय एकता के लिये, घातक है और इसलिये हमने यह बात कही थी। इस संकटकालीन स्थिति का जिस तरह से सत्तारूढ़ दल दुरुपयोग कर रहा है वह हम नहीं चाहते। भारतीय जन संघ और हम समझते हैं कि आज देश पर सबसे बड़ा संकट है और उसका सामना करने के लिये हमें एक अजेय शक्ति खड़ी करनी होगी। आपस के मतभेद को भुला कर एक

[श्री शारदाभक्तसिंह]
साथ खड़े होकर दुश्मन का सामना करना होगा और उसके लिये जिन साधनों की तथा त्याग की आवश्यकता होगी उसको करना होगा ।

माननीय गोविन्द सहाय जी कह रहे थे कि हमने अपने संशोधनों में प्रदेश की नीतियों के ऊपर कोई बात नहीं कही है, जिससे यह पता चलता है कि हम उनकी नीतियों से सहमत हैं । यह आपकी उदारता नहीं है । जब कि देश इस संकट काल से गुजर रहा है, उस समय हम आपस की नीतियों को आगे नहीं बढ़ाना चाहते और इसलिये उसकी चर्चा नहीं है । हमारी आपकी नीतियों में गहरा मतभेद है, लेकिन हम उस पर कुछ कहने का यह अवसर नहीं समझते, इसलिये उस पर कुछ नहीं कहा है। हम इस समय यह उचित नहीं समझते कि हम आपस के पार्टी प्रोग्राम को लेकर एक दूसरे की आलोचना करें। इस कारण हमने सरकार का ध्यान उस ओर केवल आकर्षित किया है और उन्हें सजग किया है जिससे कि हम इस संकट का सामना कर सकें ।

मंत्रिमंडल को छोटा करने की बात जो कही गयी वह इसलिये नहीं कही गयी कि उस पर खर्चा बहुत ज्यादा है । वह तो इसलिये है कि आज देश पर संकट है और ऐसा करके आप जनता के सामने यह कह सकते हैं कि हम त्याग करेंगे, और तब दूसरों से अपेक्षा करेंगे। जब देश पर संकट की बात सोचते हैं तो हमारे सामने महाराणा प्रताप की प्रतिमा खड़ी हो जाती है । जब चित्तौड़ उनके हाथ से चला गया तो उन्होंने निश्चय किया कि जब तक चित्तौड़ की एक, एक इंच भूमि को प्राप्त नहीं कर लेंगे तब तक चारपाई पर नहीं सोवेंगे और बरतनों में खाना नहीं खावेंगे । माननीय गोविन्द सहाय जी इस पर हंसेंगे क्योंकि वह तो साम्यवादी विचार के हैं । लेकिन देश उन भावनाओं की कद्र करता है । वह देश जिन्दा नहीं रह सकता जो अपने महापुरुषों से मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता, उनसे सबक लेकर भविष्य की ओर बढ़ने का प्रयत्न नहीं करता । मंत्रिमंडल को निश्चय करना चाहिये था कि अपने जीवन की आवश्यकताओं को काट कर सामग्री जुटावें । जनता की भावना का आदर करना सरकार का कर्त्तव्य है । जनता चाहती है कि अगर ६ घंटे काम करके १६ आदमी काम चलाते हैं तो आज आप ८ आदमी १२ घंटे काम करके कार्य चलावें । अगर जनता का मनोबल बनाये रखना है तो देश के लिये सरकार को भी कुछ परित्याग करना होगा । लेकिन यह सरकार तो विरोधी दल और जनता की भावनाओं का आदर नहीं करती । आप अपनी उसी बात पर बने रहते हैं कि हम काम करते हैं, एफीशेंसी चाहिये और जैसे सामान्य समय में निरन्तर मिनिस्ट्री बढ़ती चली जाती है उसी प्रकार आप मंत्रिमंडल को रखना चाहते हैं ।

माननीय गोविंद सहाय जी ने कहा कि हम उन्हें नान–एलाइनमेंट की पालिसी से अलग करना चाहते हैं । भारतीय जन संघ के कई प्रस्तावों में हमने निश्चय किया है कि विदेशी नीति में नान-एलाइनमेंट की पालिसी का हम समर्थन करते हैं, लेकिन हमारा यह सरकार के प्रति आरोप है कि जहां हम यह चाहते हैं कि दोनों गुटों से अलग रहकर भारत के उद्दात्त हितों का संरक्षण करने के लिये अपनी नीति यथार्थवादी बनावें वहां कांग्रेस सरकार ने बराबर रूस की ओर झुकने की प्रवृत्ति दिखाई है । दुश्मन का तरीका होता है कि उसे जीतने के लिये उसके बीच में ऐसे आदमी खड़े करो जो उसकी तारीफ करें, जिससे वह अपनी कमजोरियों को समझ ही न पावें । ऐसे ही कुछ लोग हमारे बीच में आज पैदा हो रहे हैं जिनसे सरकार को सचेत रहना चाहिये । मनुष्य गलती करता है परन्तु उनसे अनुभव करके कुछ लाभ भी भविष्य के लिये उठाता है । जहां देश की सुरक्षा और मान मर्यादा का प्रश्न है वहां इतिहास आपको क्षमा नहीं करेगा । आप कहते हैं कि आप जानते नहीं थे, अचानक हमला कर दिया । ८ या १० वर्ष से सीमा के बारे में विवाद चल रहा था, छुटपुट झगड़े हो रहे थे, हमारे ऐम्बेसेडर जो बाहर थे उनसे हमें सूचनायें प्राप्त हो रही थीं लेकिन हमारी सरकार को पता नहीं चला कि चीन हमारे देश के साथ विश्वासघात करेगा । विस्तारवादी नीति को कौन नहीं जानता था । आप इतिहास पढ़ते हैं, सुनते हैं, लिखते भी हैं और बनाते भी हैं । लेकिन इस बारे में यह कहना कि हम समझ नहीं पाये थे कि चीन ऐसा करेगा,

यह समझ में आने वाली बात नहीं है। इस पर कोई विश्वास नहीं कर सकता है। जब से कम्युनिस्ट चीन का जन्म हुआ है और जब जब वह समर्थ हुआ है, उसने विस्तारवादी नीति पर आचरण किया है, पड़ोसी देशों को उसने हड़पने की कोशिश की है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि जितने भी कम्युनिस्ट देश हैं सभी की विस्तारवादी नीति है चाहे वह रूस हो या चीन हो। आज रूस से चीन कुछ अलग सा मालूम पड़ता है और किसी कारण से रूस से आपको हमदर्दी है, लेकिन मैं आपको यह चेतावनी दे देना चाहता हूं कि जिस प्रकार से आप हिन्दी-चीनी भाई-भाई को आप नहीं समझ पाये, उसके पंचशील के उद्घोष को नहीं समझ पाये, उसी प्रकार से आप आज गलती कर रहे हैं और वह यह कि साम्यवादी पार्टी को आज आप अपने साथ समझ रहे हैं। आप गलती को दुहरा रहे हैं, इतिहास की पुनरावृत्ति करना चाहते हैं। संसद में एक भाषण हुआ जिसमें कहा गया कि सीता जी परीक्षा देकर आयीं, लेकिन जब राम के सम्मुख प्रस्तुत की गयीं तो फिर परीक्षा देने के लिये कहा गया। तब उन्होंने कहा कि हे पृथ्वी माता फट जाओ, जिसमें मैं समाजाऊं।

इस प्रकार से अगर हमारे (कम्युनिस्टों के) रिजोल्यूशन पास करने के बाद भी हमें पवित्र नहीं समझा गया तो हम भी पृथ्वी से प्रार्थना करेंगे कि हे पृथ्वी माता फट जाओ कि हम उसमें घुस जायं। हम तो उसका एक ही मतलब समझे और वह यह कि अगर हमारे रिजोल्यूशन पर विश्वास नहीं किया गया तो हम अन्डर ग्राउन्ड हो जायेंगे और जहां कहीं उनके ऊपर कड़ी दृष्टि की गयी वहां वे अन्डर ग्राउन्ड हो भी गये। लेकिन मैं कह देना चाहता हूं कि हम एक भी ऐसे आदमी को नहीं छोड़ सकते जो इस तरह की बात कह सकता कि देश को खतरा पैदा हो सकता है। कम्युनिस्ट पार्टी से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है लेकिन हम यह चाहते हैं कि देश की सुरक्षा के लिये प्रभावी कदम उठाये जायें।

श्री श्रीराम तिवारी (जिला उन्नाव)--

माननीय उपाध्य महोदय, माननीय नौरंगलाल जी द्वारा प्रस्तुत राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं। मुझे इस बात का हर्ष है कि विरोधीदल के नेता माननीय राजा साहब ने जो बहुत सी बातें कहीं थीं उनको माननीय शारदाभक्त सिंह जी ने सुधार दिया। इमरजेंसी के बारे में एक ओर जनसंघ दल कहता है कि हम में दलगत राजनीति न लाई जाय लेकिन दूसरी ओर ही वह कहता है कि कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिये। लेकिन हम, कांग्रेस और यह सरकार यह कहती है कि चाहे वह कम्युनिस्ट हो या कम्युनिलिस्ट हो किसी भी राष्ट्र विरोधी तत्व को बरदाश्त नहीं किया जायगा और उसके विरुद्ध कदम उठाया जायगा, लेकिन राजा साहब या किसी के कहने से किसी पार्टी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती।

दूसरी बात यह कही गयी कि युद्ध प्रयत्नों में जिस प्रकार से इनर्जी लगायी जानी चाहिये उस प्रकार से शासक दल की ओर से नहीं लगायी जा रही है। लेकिन मैं तो कहता हूं कि चीन द्वारा आक्रमण होने के बाद राष्ट्रनायक पंडित जवाहर लाल नेहरू की आवाज पर यहां की जनता ने जैसी एकता दिखलायी है, उस पर भी विरोधी दल के नेता आज पंडित नेहरू व उनके नेतृत्व की आलोचना कर रहे हैं। इस तरह से वे जनता के मनोबल को गिरा रहे हैं। जैसे चीन की ओर से आज कहा जाता है कि नेहरू सरकार और भारतवर्ष की राज्य सरकारें जनता से जबरदस्ती चन्दा वसूल कर रही है, फौजों में जबरदस्ती भर्ती की जा रही है, उसी तरह से आज जनसंघ के नेता और विरोधी दल के लोग भी कहते हैं कि चन्दे की वसूली जबरदस्ती की जा रही है। क्या चीन और विरोधी दलों की एक सी आवाज नहीं है ?

हमारे राजा साहब ने पी०आर०डी० पर बहुत आक्षेप किया और यह कहा कि उसका इस्तेमाल कांग्रेस अपने लिये करेगी और शासक दल अपने को मजबूत बनाने के लिये पी०आर० डी० को आर्गनाइज कर रहा है। लेकिन राजा साहब ने जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिये कुछ नहीं कहा जिसके लिये एक समय में कहा गया था कि महात्मा गांधी की हत्या में भी उसके कुछ लोगों का हाथ था। जिस प्रकार से एक समय हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बटवारे के समय गांधी जी की नीति के विरुद्ध और गांधी जी के प्रति घृणा उत्पन्न की जाती थी उसी प्रकार

[श्री श्रीराम तिवारी]

चीन द्वारा आक्रमण के नाम पर आप यहां तानाशाही तरीका लाना चाहते हैं और उसके लिये नेहरू जी के प्रति घृणा उत्पन्न करने की चेष्टा की जा रही है। क्या यह तरीका ठीक है? क्या यह राष्ट्र के मनोबल को, देश की जनता के मनोबल को बढ़ावा देने वाला है या चीन के मनोबल को बढ़ावा देने वाला है?

समय थोड़ा है इसलिये मैं अधिक न कह कर राज्यपाल महोदय के सम्बोधन के सम्बन्ध में भी कुछ कह देना चाहता हूं। उस अभिभाषण में निस्संदेह वे सारी चीजें आ गयी हैं जो कि आनी चाहिये। विकेन्द्रीकरण के सम्बन्ध में उन्होंने बतलाया है कि पूरी तरह से विकेन्द्रीकरण करने की चेष्टा की जा रही है। लेकिन सरकार को यह भी देखना है कि कहां केन्द्रीकरण की जरूरत है, क्योंकि कई चीजें ऐसी होती हैं जहां इसकी जरूरत होती है। जैसे हमारे जिले उन्नाव के जिला परिषद् के अध्यक्ष का मसला है अध्यक्ष को इतने अधिक अधिकार दे दिये गये हैं और सरकार ने अपने पास कोई ऐसे अधिकार नहीं रखे जिससे भ्रष्टाचार या ऐसी कोई चीज हो तो उसको खत्म किया जा सके। विकेन्द्रीकरण तो होना ही चाहिए लेकिन कुछ नियंत्रण सरकार को अपने पास भी रखना चाहिये।

सहकारिता के सम्बन्ध में भी मुझे यह कहना है कि जगह-जगह गांव-गांव में साधन सहकारी समिति आदि कायम हो रही है लेकिन उसमें भी कहीं-कहीं भ्रष्टाचार है उसे दूर करने में लाल-फीताशाही को बाधक नहीं होना चाहिये। उन्नाव की सहकारी बैंक समिति में गबन का एक केस वहां के डाइरेक्टरों ने पकड़ा लेकिन अभी तक वह फाइल लालफीताशाही में पड़ी हुई है। तो सरकार की तरफ से इधर भी ध्यान देना चाहिये। इन शब्दों के साथ, राज्यपाल महोदय के सम्बोधन पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश हुआ है, उसका मैं समर्थन करता हूं।

श्री कृष्णपालसिंह (जिला रायबरेली)--

श्रीमन्, मैं एक स्पष्टीकरण माननीय सदस्य से चाहता हूं जो उन्होंने जनसंघ दल पर गांधी जी की हत्या का आरोप लगाया। अगर माननीय सदस्य को इतनी जानकारी है तो इसकी भी उनको जानकारी अवश्य होगी कि वह पिस्तौल कहां से आया और उसे किसने दिया, तो इसे भी कृपया बतला दें।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कल से महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर जो दोनों ओर से चर्चायें हो रही हैं उनको सुनने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जिस तरीके से पिछले सत्र में सरकार की साधारण चलने वाली नीति थी वही महामहिम राज्यपाल द्वारा प्रदर्शित हुई थी, ठीक उसी तरह से उसी पिटी पिटाई शब्दावली में इस सत्र में भी उन्होंने सम्बोधन किया। विरोधी पक्ष की ओर से और सरकारी पार्टी की ओर से जो आलोचनायें हुई उनमें सबसे बड़ी बात यह है कि आज चीनी हमले के कारण देश में संकटकालीन स्थिति पैदा हुई है। विरोधी पक्ष के लोग कहते हैं कि उसको खत्म किया जाय और सरकारी पक्ष कहता है कि वह अभी भी है। माननीय गोविंद सहाय जी ने जिस शब्दावली में अपनी बातें कहीं महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण को मैंने पढ़ा उससे मालूम होता है कि सरकारी पक्ष के लोग और उनकी पार्टी जिस तरह के विचार प्रकट करती है उससे मालूम होता है कि वह समझते हैं कि देश के सामने कोई संकट की स्थिति नहीं है और अगर वह रही होती तो माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में इस तरह की चीज न होती। ऐसी परिस्थिति में सुरक्षा की नीति क्या हो और देश की फौजी व्यवस्था कैसी हो यह सब होना चाहिये था। मैं समझता हूं कि कोई भी देश जो युद्ध की परिस्थिति में होता है उसके सामने ३ मुख्य प्रश्न होते हैं। एक तो यह कि उस की सुरक्षा कैसे हो और वह किस तरह से शस्त्रास्त्र से सम्पन्न हो, किस तरह से हथियार और अस्त्रों का उत्पादन बढ़े और किस तरह से जिन्दगी की आधुनिक जरूरी चीजें हमारे खलियानों में अन्न और कारखानों में आवश्यक सामान तैयार हो और तीसरे किस तरह से देश की जनता को सुशिक्षित किया जाय। यही ३ योजनाएं उस स्थिति में मुख्य रूप से आनी चाहिये लेकिन महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण

में इनका कोई भी जिक्र नहीं है । सरकार जिस तरह से इस प्रदेश की चल रही है उसी तरह से वह अगले साल भी चलती रहेगी । गुप्ता जी की गाड़ी जैसे पहले चलती थी और जिस तरह से कांग्रेस के नेता समारोहों में भाषण देते रहे हैं और रोज उद्घाटन करते रहे हैं वैसे ही आगे भी करते रहेंगे ।

माननीय गोविंद सहाय जी ने कहा कि विरोधी पक्ष को ऐसी बात नहीं कहना चाहिये कि जिससे देश का मनोबल गिरे । इससे मैं सहमत हूं कि किसी को देश के मनोबल गिराने की बात नहीं करना चाहिये लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि आज इस देश में कांग्रेस पार्टी के नेताओं और सरकारी पक्ष के सदस्यों और मंत्रियों द्वारा जो बातें कही जाती हैं और जो आचरण किये जाते हैं और यदि यही व्यवस्था जारी रहती है तो क्या उससे देश का मनोबल उठता है ? वह और गिरता है । ८ नवम्बर को जो प्रस्ताव लोकसभा में पारित हुआ था, उस पर हम अगर गौर करें, उसमें कहा गया था कि किसी भी हालत में हम देश की एक-एक इंच जमीन को विदेशियों के कब्जेसे निकालेंगे चाहें हमें युद्ध ही क्योंन करना पड़े और चाहे कितनीही कठिनाइयां हों। लेकिन जब लोकसभा में यह प्रस्ताव पास हो चुका था तो ८ सितम्बर की स्थिति को मानने का और कोलम्बो प्रस्ताव को मानने का प्रश्न कहां आता ह । इसकी विशद विवेचना माननीय गोविन्द सहाय जी ने की । आज जो लोग इस देश के लद्दाख की जमीन को कंकरीली और पथरीली बताते हैं और इस संघर्ष को छोटी-मोटी लड़ाई कहते हैं और जो कोलम्बो प्रस्ताव को मान्यता प्रदान करते हैं और जो अब ८ सितम्बर की बात करते हैं तो क्या यह सब बातें ऐसी नहीं हैं कि जिनसे देश का मनोबल गिरता है ? आज कांग्रेस में किस तरह के तत्व हैं मैं इसका निरूपण करना चाहता हूं । मेरी समझ से उसमें दो तरह के लोग हैं । एक तो वह जो देशद्रोही हैं और देश के लिये घातक हैं जो कहते हैं कि लद्दाख की जमीन तो कंकरीली पथरीली है कि जहां पर घास भी नहीं उगती, अब ऐसी बात कहने वालों को मैं देशद्रोही समझता हूं । और चीन की लड़ाई का हवाला देते हुए गोविन्द सहाय जी ने कहा वह क्यों वापस चला गया ? मैं कहना चाहता हूं कि वह इसलिये नहीं वापस चला गया कि उसने अपनी गलती महसूस की, वह इसलिये वापस चला गया कि हिन्दुस्तान की जनता में गर्मी आ रही थी, उसने देखा मेनन को हटा दिया गया और मैं तो कहता हूं अगर तेजपुर तक चीनी चले आते तो कांग्रेस सरकार का यहां टिकना असम्भव हो जाता । चीन वाला इतना बेवकूफ़ नहीं था, वह समझता था कि मौजूदा दिल्लीश्वर के बिना दिल्ली में ढुलमुल यकीन दोस्त कौन मिलेगा । अगर दिल्ली वाला दोस्त चला गया तो जो हमने हिमालय के दर्रों में अपना स्थायित्व पैदा किया है वह छिन जायगा । उसके हमला करने का मकसद एक ही था, वह हिमालय को अपने हाथ में लेना चाहता था और उसने हिमालय के दर्रों पर अपना अधिकार जमा लिया है और गोविन्द सहाय ऐसे लोग और उनकी तरह के कांग्रेस पार्टी में जो हामी हैं आज उस चीनी झंडे की बुलन्दी के लिये ८ सितम्बर और कोलम्बो प्रस्ताव का समर्थन करते हैं, मैं ऐसे लोगों को देशद्रोही समझता हूं और जिस प्रकार से काश्मीर की समस्या पिछले ११ साल से लटक रही है, जिस तरह से इस देश का बटवारा हुआ अगर यही पद्धति चलती रही तो चीनी पैर भी यहां जमा रहेगा । इसलिये मैं कहता हूं कि अगर चीनी हमलावरों को यहां से निकालना चाहते हैं तो कांग्रेस सरकार को यहां से अपदस्थ करना बहुत जरूरी है । संकटकालीन स्थिति पैदा करके आप किन लोगों को गिरफ्तार करते हैं, मैं बतलाना चाहता हूं । माननीय गोविन्द सहाय जी कहते हैं संकटकालीन स्थिति है और रहनी चाहिये । लेकिन दुनिया का कोई उदाहरण नहीं बताया कि संकटकालीन स्थिति पैदा करके युद्ध की तैयारी की हो । संकटकालीन स्थिति तभी होती है जब युद्ध हो रहा हो । हमारे जवाहरलाल जी ने शान्ति-निकेतन में चीनी भाषा के प्रोफेसर डाक्टर शान को देखते ही कहा कि चीनी जनतासे हमारी लड़ाई नहीं है, बल्कि चीनी सरकार से लड़ाई है । क्या माओ और चाऊ लड़ने आये थे ? जो आदमी इस तरह की बात करता है वह देश के मनोबल को नीचे गिराता है न कि विरोधी दल के लोग । अगर सरकार सुरक्षा में संलग्न रहना चाहती है तो राज्यपाल के अभिभाषण में इसका जिक्र होना चाहिये था कि उत्तराखंड, पिथौरागढ़, नैनीताल आदि जो उत्तरी इलाके हैं वहां के लोगों को किस तरह से सुशिक्षित करें ताकि वह विदेशियों से मुकाबला कर सकें। नेफ़ा की आबादी

[श्री काशीनाथ मिश्र]

६ लाख थी, लेकिन वहां उथल पुथल मच गई हमला होते ही। क्या यही हालत आप उत्तराखण्ड में भी पैदा करना चाहते हैं? मैं उन मिनिस्टरों को मनोबल नीचे गिराने का जिम्मेदार समझता हूं। मैंने बलिया में सुना था जिसमें एक मंत्री ने कहा कि नौकरी के लिये नौजवान मारे-मारे फिरते हो, अब तो रास्ता खुल गया है फौज में भरती हो जाओ। कितनी गन्दी बात है। जो इस तरह से अपना आत्म सम्मान बेचते हैं नौकरी के लिये वह क्या फौज में जाकर भारत की रक्षा कर सकते हैं? भारत में, जो अंग्रेजों के जमाने की गरीब लोगों की फौज है, जिनको अंग्रेज भुक्खड़ सिपाही कहता था, क्या ये भुक्खड़ सिपाही देश की रक्षा करेंगे? कोई भी देश इस तरह की फ़ौज से अपनी आजादी की रक्षा कर पाया है? इसलिये सोशलिस्ट पार्टी की तरफ़ से बार-बार यह कहा गया कि तुम अनिवार्य सैनिक भरती करो, कोई उम्र आप रख लें और उस उम्र में जितने लोग आयें, चाहे वह प्रधान मंत्री का लड़का हो, चाहे करोड़पति का लड़का हो, चाहे मजदूर और किसान का लड़का हो, वह ८–१० लाख की, जो फौज बनेगी, वही देश की रक्षा कर सकती है, इन भुक्खड़ लोगों की फौज से देश की हिफ़ाजत नहीं हो सकती। तो मैं आपके द्वारा निहायत अदब से कहना चाहता हूं कि जिस तरह से कांग्रेस सरकार और कांग्रेस के लोग अपनी नीति चला रहे हैं उससे देश मुतवातिर कमजोर होता जायगा और मैं अपील करना चाहता हूं कि जो लोग देश की रक्षा करना चाहते हैं उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि कांग्रेस को अपदस्थ करें नहीं तो कांग्रेस राज्य के चलते देश की रक्षा और सुरक्षा नहीं हो सकती। जब तक इस देश में कांग्रेसी राज रहेगा चीनी पैर भी जमा रहेगा।

श्री उपाध्यक्ष––

आपका समय समाप्त हो गया।

*श्री राजदेव (जिला देवरिया)––

उपाध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के सम्बोधन पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव आया है उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। आज उस पर वाद-विवाद का तीसरा दिन है। इस देश और प्रदेश की सुरक्षा पर काफ़ी लम्बी बहस चल रही है और इस सदन के संयुक्त समाजवादी दल के जो उग्रसेन जी और साथी बलवान सिंह के भाषण हुये उनको सुनने का मुझे मौका मिला। और यह भी सुनने का मौका मिला कि इस देश के जवानों में पौरुष नहीं है चीन का मुकाबला करने के लिये। कहा जा रहा है कि इधर के लोग देशद्रोही हैं। हम को तो ऐसा आभास मिल रहा है कि संयुक्त समाजवादी दल का प्रत्येक आदमी देशद्रोही है। (व्यवधान) जब २२ सौ मील लम्बी सीमाओं पर घमासान युद्ध हो रहा था (श्री मैनेजर सिंह के कुछ कहने पर)।

श्री उपाध्यक्ष––

माननीय मैनेजर सिंह जी, उन्हें बोलने दीजिये।

श्री राजदेव––

यह मुकाबला करने की भावना संयुक्त समाजवादी दल में नहीं हो सकती। हमारे देश का एक-एक बच्चा इतनी शक्ति रखता है (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष––

माननीय मैनेजर सिंह जी, कृपया शान्त रहें।

श्री राजदेव––

सुरक्षा पर इस प्रकार की आलोचनायें की जा रहीं हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि महाभारत का जिस समय अन्त हो जाता है और भीष्म शर शैय्या पर पड़े थे तो उस समय उन्होंने कहा कि मुझे तकिया चाहिये। लोग अच्छी से अच्छी तकिया लाये लेकिन उन्होंने कहा कि यह तकिया नहीं चाहिये, इस अन्तिम क्षण में जो वीरों की तकिया होती है मुझे वह तकिया चाहिये। अर्जुन भी वहां पर खड़े थे। उन्होंने पांच बाण मारे और वह तकिया उनको मिल गया। तो

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

यह वह देश है। इसकी एक-एक इंच भूमि के लिये इधर के बैठने वाले लड़ेंगे। (श्री मैनेजर सिंह के पुनः कुछ कहने पर)

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय मैनेजरसिंह जी, अब बहुत हो गया।

श्री मैनेजरसिंह (जिला बलिया)---

उपाध्यक्ष जी, माननीय सदस्य ने कहा कि समाजवादी दल का एक-एक आदमी देशद्रोही है।

श्री उपाध्यक्ष---

मैनेजरसिंह जी, जरा शान्त रहिये।

श्री राजदेव---

उपाध्यक्ष महोदय, यही सभ्यता दिखाते हैं कि ये कोई बात भी सुनने के लिये तैयार नहीं है और किसी को सुनने देना नहीं चाहते हैं। इनमें इतनी हिम्मत भी नहीं है कि यह बात सुन सकें। माननीय उग्रसेन जी अपने कलेजे पर हाथ रखें। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष---

देखिये, शोरगुल न हो। आप लोग शान्त रहिये। माननीय बैजनाथ सिंह जी आप क्यों शोर-गुल करते हैं।

श्री राजदेव---

उपाध्यक्ष महोदय, चाहे उग्रसेन जी हों, चाहे बलवान सिंह जी हों, मैं आशा करता हूं कि ये लोग देश के हाथ मजबूत करेंगे। ये लोग देश को आगे ले जाने के लिये हमारे नेता माननीय पंडित जवाहरलाल जी के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलेंगे। जब चीन ने हमारे देश पर हमला किया था तो पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक जनता ने हमारे देश के नेताओं का साथ दिया और देश के नौजवान चीन का मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये। आज हम चीन का मुकाबला करने लिये पूरी तरह से तैयार हैं। सीमा के संबंध में लड़ाई में अक्सर कुछ भूमि इधर की उधर हो जाती है और उधर की इधर हो जाती है। कुछ भूमि ले लेने से कोई देश लड़ाई नहीं जीत सकता है। आप लोगों को मालूम होगा कि हिटलर की कितनी बड़ी तैयारी थी और शुरू में उसने कितना हिस्सा जीत लिया था परन्तु अन्त में जाकर हिटलर की हार हुई। वह दिन दूर नहीं है जब हमारा देश चीनियों को निकाल बाहर करेगा। आज हिम्मत के साथ सीना खोल कर सामने आना चाहिये। उधर से कहा जाता है कि चन्दा जबर्दस्ती वसूल किया जाता है। यह ठीक नहीं है। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि जब देश ही नहीं रहेगा तो सारी चीजें क्या होंगी?

श्री चन्द्रबलीसिंह---

जो भारतमाता को कंकड़-पत्थर कहता है वह क्या है?

श्री राजदेव---

इसलिये श्रीमन्, मैं आपके द्वारा अपने साथियों से कहता हूं कि वे हमारे भाई हैं। इसलिये उनकी तरफ से अच्छे-अच्छे सुझाव आने चाहिये। देश की रक्षा के लिये उनको हमारे साथ चलना चाहिये। जवाहरलाल जी के साथ हम सबको आगे बढ़ना चाहिये। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वह दिन दूर नहीं है जब चीन के माओ और चाऊ की सेनाओं को निकाल बाहर किया जायगा। मैं आशा करता हूं कि इस हाउस में, जब कि देश पर हमला हुआ है, तो वे ऐसी कोई बात नहीं कहेंगे जिससे दूसरे लोग लाभ उठा सकें। आज देश के सैनिकों का हौसला बढ़ाना चाहिये। हमें चीन को निकाल फेंकना है और आप को सरकार का साथ देना है।

समाजवाद की आप बात करते हैं, आप से बढ़ कर इधर समाजवादी बैठे हैं।

श्री उपाध्यक्ष---

आपका समय समाप्त।

*श्री ब्रह्मदत्त मायर (जिला सहारनपुर)---

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस संघर्ष के बाद, जो इस हाउस में हुआ, चाहता हूं कि वातावरण को थोड़ा सा बदल दूं। एक तरफ हमारे माननीय मैनेजर सिंह जी थे और दूसरी तरफ उन्हीं के बुजुर्ग रिश्तेदार माननीय रेवेन्यू मिनिस्टर साहब खड़े देख रहे थे। (व्यवधान)। आपने ही एक दफा फरमाया था कि आप की उनसे रिश्तेदारी है। बहरहाल, मैं यह कहूंगा कि---हसीनों से न मिल ऐ दिल बहुत ये देखे भाले हैं, नहीं डसने से ये रुकते हैं सितमगर महा काले हैं---तो हमारे पंडित जी ने जिस पर नजर डाली वह एक काला फनदार सांप निकला। पहले हमें यह बताया गया कि हिन्दुओ, डटे रहो पाकिस्तान के अन्दर, तुम्हारा बाल-बका नहीं होने का। उसका नतीजा देखा गया। पंडित जी की एक गलती ने करोड़ों हिन्दुओं का घर बरबाद कर दिया। दूसरी गलती---उस शेख अब्दुल्ला को अपनाया, उसे गोद में जगह दी जिसने कश्मीर का सत्यानाश कर दिया। तीसरी गलती की कि माओ और चाऊ को गले लगाया जो सब से भयानक दुश्मन नजर आ रहा है। चौथी गलती जो वह करने जा रहे हैं उसे इतिहास नहीं बख्शेगा। (व्यवधान) नये-नये कांग्रेसी, नये-नये पिट्ठू लाकर मैदान में खड़े कर दिये। चौथी गलती वह यह कर रहे हैं कि जो इस प्रकार का वातावरण पैदा किया जा रहा है।

अब मैं सबसे पहले राज्यपाल महोदय के वक्तव्य के बारे में, जो सुरक्षा के सम्बन्ध में कहा गया, उस सिलसिले में कहना चाहूंगा कि देश का बच्चा-बच्चा जो है वह चीनी आक्रमण से डट कर मुकाबला करने के लिए तैयार है और तैयार रहना चाहता है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि जिस उत्साह के साथ देश ने एक आवाज के साथ एक जान होकर इस मुकाबले के लिए अपने को तैयार किया हमारी हुकूमत उस तमाम उत्साह को, उस तमाम हौसले को चैनलाइज नहीं कर पायी, उसे वह आफिशियलाइज करने की तरफ ध्यान देने लगी। चन्दा इकट्ठा होगा तो सरकारी आदमी इकट्ठा करेगा, भर्ती होगी तो सरकारी आदमी करेंगे, प्रोपेगेंडा होगा तो सरकारी आदमी करेंगे। इस सबसे असली मकसद जो था वह जाता रहा। ५४ जिले प्रान्त के एक-एक मिनिस्टर या पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी के हाथ बेच दिये गए। औरों के बारे में ज्यादा मैं नहीं कह सकता, लेकिन अपने जिले के बारे में कह सकता हूं कि हमारे जिले के माननीय ठाकुर फूल सिंह जी कैबिनेट के मिनिस्टर हैं, वह जाते हैं और कहते हैं कि जिले में चन्दा अगर कोई इकट्ठा करेगा तो उनका पिट्ठू भगवानदास करेगा। कलेक्टर कहता है कि मैं तो वही करूंगा जो मिनिस्टर साहब कहेंगे। दूसरा कोई व्यक्ति जिले में चन्दा नहीं इकट्ठा कर सकता। अगर किसी को करना है तो उन्हीं के पिछलग्गुओं के द्वारा करे। उनको यह बर्दाश्त नहीं है कि कोई दूसरा आदमी हिम्मत और हौसले के साथ पब्लिक में आकर खड़ा हो जाय और उनके पांव लड़खड़ा जायं। उन लोगों के हाथ में जिला दे रखा है जिनके बारे में मैं कह सकता हूं कि एक पैसा नहीं दिया है। यह जितने कांग्रेसी बने फिरते हैं, हमारे जिले के किसी ने एक पैसा अपने पास से नहीं दिया है, किस मुंह से वह बाजार में निकलेंगे और किस मुंह से मांगेंगे? न ठाकुर फूलसिंह ने दिया और न उनके किसी पिट्ठू ने दिया। हमारे म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन साहब हैं, एक लाख रुपया म्युनिसिपल बोर्ड से दिया और उसी की डींग हांकते फिरते हैं। गुप्ता जी के पास भी आये थे, पूछा सेठ जी आपने कितना दिया, दूसरे सदस्य भी बैठे हुए थे, कह दिया हमने तो एक लाख रुपया दे दिया। उन्होंने कहा १ लाख रुपया तो म्युनिसिपैलिटी से दिया है, अपने पल्ले से क्या दिया? यह हालत जहां पर हो नेताओं की और चौधरियों की और हुकूमत के कर्णधारों की वह राज्य को कितने दिन चला पायेंगे? किसके भरोसे ये हुकूमत को चलाना चाहते हैं? हम इनके हाथ में अपनी इज्जत नहीं देना चाहते हैं। हम इस मामले में इनके हाथ अपनी इज्जत और जमीन को बेच नहीं सकते जो इस तरह से इस हुकूमत को चलाना चाहते है। हमने आपका समर्थन किया और हमने हर तरीके से अपने आपको न्योछावर करने के लिये आगे किया, लेकिन उस मुहब्बत को जहां आपको आगे हाथ बढ़ाकर अपनाना चाहिये था, आपके अफसरों ने और आपके साथियों ने हमारे उस प्रेम के हाथ को पीछे हटा दिया।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इसलिये हमको दूसरा रास्ता अख्तियार करना पड़ा । जब हमने देखा कि हमारे यहां रेलवे स्टेशन पर पंजाब की तरफ से ३, ४ गाड़ियां रोजाना जवानों से भरकर नेफा की तरफ जा रही हैं तो हम लोगों ने रेलवे स्टेशन पर पहुंचना शुरू कर दिया और उनके लिये जो हमसे हो सका, मेवा, दूध, चाय, फल, मूमफली, बिसकुट और डबल रोटी ले जाना शुरू कर दिया और उन जवानों को हम लोग भेंट करने लगे ।

श्री उपाध्यक्ष—

अब आप भाषण कल जारी रखियेगा ।

(इसके बाद सदन ५ बजकर ३० मिनट पर अगले दिन के साढ़े १० बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊः
६ फरवरी, १९६३ ।

नत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रश्न १५ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३९ पर)

FROM

SRI, B. D. SETH, I. A. S.,
MUKHYA NAGAR ADHIKARI,
NAGAR MAHAPALIKA; ALLAHABAD.

To

THE UP SACHIV,
UTTAR PRADESH SHASAN, LUCKNOW,
SAHKARITA (KH) VIBHAG.

Dated Allahabad, January 31, 1963.

SIR,

WITH reference to your letter no. 207C/XIICE-AC42/1962, dated January 16, 1963, followed by the telegram and confirmation letter dated January 29, 1963, I have the honour to send as follows the required informations :

(1) During the period from April 1, 1961 to March 31, 1962, 16 samples of Milk were taken from the Vendors of the Co-operative Milk Supply Union Ltd., 100/165, Bai-Ka-Bagh, Allahabad and out of them 13 were found adulteraled and 3 Genuine.

(2) Complaints, to take the cognisance, have been filed, in the court of competent jurisdiction on January 15, 1963.

Yours faithfully,
(Sd.) B D. SETH,
Mukhya Nagar Adhikari.

नत्थी 'ख'

(देखिये तारांकित प्रश्न २१ का उत्तर पीछे पृष्ठ १४३ पर)

बाराबंकी जिले के ब्लाक सेनीटरी इन्स्पेक्टरों के नाम तथा उन ब्लाकों में उनके कार्यकाल की अवधि

तहसील	ब्लाक	सेनीटरी इन्स्पेक्टर का नाम	२७-११-६२ तक कार्यकाल की अवधि	टिप्पणी
१—सदर (नबावगंज)	बंकी	श्री के० एम० शर्मा	१ वर्ष	
२— ,,	हरख	श्री के० पी० गुप्ता	३ वर्ष	
३— ,,	देवा	श्री जी० सी० अग्निहोत्री	३ मास	
४— ,,	मसौली	श्री एस० के० वर्मा	१ १/२ वर्ष	
५—फतेहपुर	रामनगर	श्री एम ० पी० खरे	२ वर्ष	
६— ,,	सूरतगंज	श्री के० सी० तिवारी	९ मास	इन्होंने कार्य से त्यागपत्र दे दिया है ।
७— ,,	निन्दोरा	श्री एस० सी० निगम	६ मास	
८— ,,	फतेहपुर	श्री एस० बी० श्रीवास्तव	३ वर्ष	
९—हैदरगढ़	हैदरगढ़	श्री किशन लाल	२ वर्ष	
१०—,,	त्रिवेनीगंज	श्री एल० बी० सिंह	९ मास	इनका स्थानान्तरण सिद्धौर कर दिया गया है और इनको बनी कोंडर ब्लाक का अतिरिक्त चार्ज दे दिया गया है । इनके स्थान पर श्री जे० सी० शर्मा भेजे गये हैं ।
११— ,,	सिद्धौर	श्री जगदीश सिंह	९ मास	इनके स्थान पर लाल बक्श सिंह की नियुक्ति हुई है ।
१२—रामसनेही घाट	मवई	श्री सी० एस० दीक्षित	३ वर्ष	

तहसील	ब्लाक	सेनीटरी इन्सपेक्टर का नाम	२७-११-६२ तक कार्यकाल की अवधि	टिप्पणी
१३—रामसनेही घाट	पूरे डलहौं	श्री सी० एस० दीक्षित	३ वर्ष	इनके स्थान पर श्री जगदीश सिंह को नियुक्त हुई है ।
१४— ,,	बनीकोंडर	जगदीश सिंह	६ मास	इनका स्थानान्तरण पूरे डलहौं हो गया है और इनके स्थान पर श्री लाल बक्श सिंह कार्य कर रहे हैं ।
१५— ,,	बौली (भिल्सर)	श्री टी० एन० श्रीवास्तव	६ मास	
१६— ,,	दर्याबाद	श्री सुखदेव सिंह	३ मास	

नत्थी 'ग'

(देखिये तारांकित प्रश्न २६ का उत्तर पीछे पृष्ठ १४७ पर)

सूची

क्रम सं०	ग्राम का नाम	क्षेत्र का नाम
१—चौकिन परवा मजरा पिथरहरा	.. ..	.. नरैनी
२—कोलाहा	.. ..	.. नरैनी
३—गिरधरपुर	.. ..	.. नरैनी
४—नसेनी	.. ..	.. नरैनी
५—नाई	.. ..	.. महुवा
६—नौनार	.. ..	.. पहाड़ी
७—नादीं	.. ..	.. पहाड़ी
८—रमपुरिया अग्वल	..	.. पहाड़ी
९—भौरों	.. ..	.. मानिकपुर
१०—भौरां	.. ..	.. मानिकपुर
११—हनुवा	.. ..	.. मानिकपुर
१२—कुटिल्हाई	.. ..	.. मानिकपुर
१३—शिवरामपुर	.. ..	.. शिवरामपुर
१४—परवा तरौहा	.. ..	.. शिवरामपुर
१५—पिन्डारन	.. ..	.. बबेरू
१६—खपटिहा कलां	.. ..	.. तिन्दवारी
१७—बिसंडा	.. ..	.. बिसंडा
१८—बरोहरा	.. ..	.. बिसंडा
कुल योग	१८	

नत्थी 'घ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ३१ का उत्तर पीछे पृष्ठ १४८ पर)

बांदा जिले के प्रत्येक विकास खंडों में वित्तीय वर्ष १९६१–६२ तथा १९६२–६३ में विविध कार्यों पर खर्च का विवरण।

क्रम-संख्या	विकास क्षेत्र का नाम	आवास या पुनर्वास		पेय जल व्यवस्था		आर्थिक विकास के लिये सहायता		अस्पृश्यता निवारण	
		१९६१–६२	६२–६३	६१–६२	६२–६३	६१–६२	६२–६३	६१–६२	६२–६३
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१—तिन्दवारी	..	५००	७५०	१,०५०	—	—	—	—	—
२—बड़ोरार खुर्द	..	१,०५०	—	—	—	—	—	—	—
३—जसपुरा	..	—	—	१,४००	—	—	—	—	—
४—महुआ	..	—	८,५००	१,४४०	—	—	३,०००	—	—
५—नरैनी	..	७५०	२,२५०	६,०९८	१,४८५	—	५००	२०	—
६—बबेरू	..	—	—	१,०२५	१,४७०	—	—	—	—
७—कमासिन	..	१०,०००	—	२५०	—	—	—	—	—
८—बिसन्डा	..	—	५००	१,२५४	३,२००	—	—	—	८
९—शिवरामपुर	..	—	—	३,८००	५००	—	—	—	—
१०—पहाड़ो	..	—	—	१४,७८०	३,२४०	—	—	—	—
११—मानिकपुर	..	१८,०००	५,०००	२०,६४४	२,४००	—	—	—	८
१२—मऊ ..	..	१४,७५०	—	२०,२१८	२,४९०	—	—	२०	—
१३—रामनगर	..	—	—	३,२५०	—	—	—	—	—

नत्थी 'ङ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ४४ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५३ पर)

प्रदेश में जिलेवार उन अस्पतालों की संख्या जहां प्रसव के लिये सुविधायें उपलब्ध हैं।

जिले का नाम	राजकीय अस्पतालों की संख्या	प्राइमरी हेल्थ सेंटरों की संख्या जहां प्रसव की सुविधायें उपलब्ध हैं	लोकल बाडीज के अस्पतालों की संख्या	प्राइवेट संस्थाओं द्वारा संचालित अस्पतालों की संख्या	योग
१--आगरा	३	..	१	३	७
२--अलीगढ़	४	४	..	१	९
३--अलमोड़ा	३	२	..	..	५
४--आजमगढ़	२	४	३	१	१०
५--बहराइच	४	४	..	..	८
६--बलिया	४	३	..	..	७
७--बांदा	२	४	..	१	७
८--बाराबंकी	३	५	..	..	८
९--बरेली	४	..	..	१	५
१०--बिजनौर	४	..	२	..	६
११--बदायूं	४	६	..	..	१०
१२--बुलन्दशहर	६	७	१	२	१६
१३--बस्ती	३	..	..	..	३
१४--चमोली	१६	३	..	..	१९
१५--देहरादून	३	२	२	१	८
१६--इटावा	३	..	१	..	४
१७--एटा	२	..	..	१	३
१८--फैजाबाद	४	..	२	१	७
१९--फतेहगढ़	५	४	१	१	११
२०--फतेहपुर	१	४	..	१	६
२१--गाजीपुर	२	३	२	..	७
२२--गोंडा	१	..	..	१	२
२३--गोरखपुर	३	..	..	..	३
२४--हमीरपुर	३	..	..	..	३
२५--हरदोई	४	..	१	..	५
२६--जौनपुर	२	..	..	..	२
२७--झांसी	३	..	..	२	५
२८--कानपुर	२	४	६	१	१३
२९--खेरी	४	..	..	..	४
३०--लखनऊ	११	७	८	६	३२
३१--मथुरा	८	५	५	२	२०

जिले का नाम	राजकीय अस्पतालों की संख्या	प्राइमरी हेल्थ सेंटरों की संख्या जहां प्रसव की सुविधायें उपलब्ध हैं	लोकल बाडीज के अस्पनालों की संख्या	प्राइवेट संस्थाओं द्वारा संचालित अस्पतालों की संख्या	योग
३२—मैनपुरी	२	..	..	..	२
३३—मेरठ	७	२१	१	१	३०
३४—मुरादाबाद	५	३	२	..	१०
३५—मुजफ्फरनगर	६	..	..	१	७
३६—नैनीताल	६	..	१	..	७
३७—प्रतापगढ़	१	..	..	१	२
३८—पौड़ी गढ़वाल	५	२	..	..	७
३९—रायबरेली	२	४	..	..	६
४०—रामपुर	१	३	..	..	४
४१—सहारनपुर	४	६	..	..	१०
४२—सीतापुर	३	२	४	..	९
४३—शाहजहांपुर	४	२	६	५	१७
४४—टेहरी गढ़वाल	२	..	..	..	२
४५—उन्नाव	२	..	..	..	२
४६—वाराणसी	५	२	२	..	९
४७—पीलीभीत	१	..	..	..	१
४८—पिथौरागढ़	१	..	..	..	१

नत्थी 'च'

(देखिये अतारांकित प्रश्न १ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५८ पर)

क्रम-संख्या	ब्लाक का नाम	वर्ष	कोयले की गाड़ियों की संख्या जो दी गई	ग्राम सभा का नाम	प्रथम श्रेणी के ईंटों की संख्या जो दी गई
१	लोनी ..	१९६०–६१	१०	ग्राम गृह निर्माण विकास नगर, पंच लोक नीरसपुर व अरथला।	१२,८६,०००
		१९६१–६२	३५	फरूख नगर ..	६०,०००
				जावली	७५,०००
				मकनपुर	६०,०००
				अरथला	३०,०००
				सुन्दरपुरी	२५,०००
				सिहानों	२५,०००
				सिद्दीक नगर	५०,०००
				करका माडेन	५०,०००
				निस तौली	३०,०००
				साहिबाबाद	५०,०००
				छूजारसी	२०,०००
				नेवला	२०,०००
				बनथला	५०,०००
				उद्योग कार्य	२०,०००
				गृह निर्माण कार्य विकास नगर, पंच लोक नीरसपुर व अरथला	२७,३५,०००
				हरिजन गृह निर्माण सिकन्दरपुर	२,००,०००
				योग ..	३५,००,०००
				..	..
		१९६१–६२	३	शाहपुर	४०,०००
				मोयंयाकूतपुर	२०,०००
				रईसपुर	४०,०००
				काजीपुर	६५,०००
					+ १०,०००
				नाहल	३८,०००
				सदरपुर	४१,६५०
				इकला	२४,९५०
				महरौली	२०,४००
				योग ..	२,९०,०००
					१०,०००
२	रजापुर ..	१९६०–६१			
		१९६१–६२			

क्रम-संख्या	ब्लाक का नाम	वर्ष	कोयले की गाड़ियों की संख्या जो दी गई	ग्राम सभा का नाम	प्रथम श्रेणी के ईंटों की संख्या जो दी गई
३	मुरादनगर ..	१९६०–६१	..	..	..
		१९६१–६२	८	असालत नगर	४,२२,०००
				नवीपुर	४०,०००
				खुर्रमपुर	१४,०००
				हिसाली	३०,०००
				सैतली	७८,०००
				उखला रुसी	३,०००
				अबूपुर	८,०००
				जलीलपुर	५,०००
				रावली कलां	१,०८,०००
				सुठारी	१,०८,७५०
				सुराना	३९,०००
				नगपुर	४०,०००
				हिमावती	१,००,०००
				हमीरपुर गढ़ी	२०,०००
				काकड़ा	४,०००
				मनेड़ा	१५,०००
				योग ..	१०,३४,७५०
४	छपरौली ..	१९६०–६१	..	..	..
		१९६१–६२	३	ककड़ीपुर	२,५०,०००
				कीरठल	२,००,०००
				असारा	५०,०००
				कुरेड़ी	२,००,०००
				टांडा	५०,०००
				योग	७,५०,०००

किसी भी भट्ठे वाले ने कम ईंटें नहीं दीं और न किसी ने कन्ट्रोल से अधिक दाम लगाये।

नत्थी 'छ'

(देखिये अतारांकित प्रश्न ११ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५९ पर)

प्रथम पंचवर्षीय योजना में गाजीपुर में खुले जच्चा-बच्चा केन्द्र

१—मरदह
२—जलालाबाद
३—कासिमाबाद
४—गंगोली
५—सैदपुर
६—गहमर

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में गाजीपुर में खुले जच्चा-बच्चा केन्द्र

१—जंगीपुर, २—देवकली, ३—भितरी, ४—रामपुर माझा, ५—नन्दगंज, ६—उचौरी, ७—सवना, ८—खानपुर, ९—गोरखा, १०—करमपुर, ११—बारा चोर, १२—कटीरमा, १३—असावर, १४—रेवतीपुर, १५—शेरपुर, १६—नवली, १७—लावा, १८—महराजगंज।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित विकास खंडों में उनके सामने लिखी हुई संख्या के अनुसार जच्चा-बच्चा केन्द्र खोले जायंगे। चूंकि ये उपकेन्द्र विकास खण्ड समिति जिसा परिषद्, जिला स्वास्थ्य अधिकारी तथा सिविल सर्जन के परामर्श से, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के स्थापित होने पर खोले जाते हैं अतः उनके नाम बताना अभी सम्भव नहीं है :

विकास खण्ड का नाम	जच्चा बच्चा केन्द्रों की संख्या
१—करन्डा	४
२—मरदह	३
३—विरनो	३
४—मुहम्मदाबाद	३
५—भावरकोल	४
६—वाराचवर	१
७—रेवतीपुर	१
८—जैमानिया	३
९—भदौरा	३
१०—सादात	३
११—मनिहारी	४
१२—जखनिया	३

नत्थी 'ज'

(देखिये अतारांकित प्रश्न २१ का उत्तर पीछे पृष्ठ १६२ पर)

हरिजन सहायक समिति के सदस्यों की सूची

१—अध्यक्ष, अन्तरिम जिला परिषद्		अध्यक्ष
२—शासन द्वारा मनोनीत		श्री लाल बहादुर सिंह एम० एल० ए०
३—श्री पन्ना लाल सोनकर ..	..	.. सदस्य
४—श्री विष्णु सहाय,	ब्लाक प्रमुख	धर्मापुर ,,
५—श्री जगन्नाथ	,,	सिकरारा ,,
६—श्री ईश्वरी प्रसाद यादव		करंजा क़लां ,,
७—श्री वशिष्ट नारायन सिंह	,,	वक्शा ,,
८—श्री दीप नारायन सिंह	,,	केराकत ,,
९—श्री फतेह बहादुर सिंह	,,	डोभी ,,
१०—श्री बलसिंगार	,,	जलालापुर ,,
११—श्री शंकर प्रसाद	,,	मुफ्तीगंज ,,
१२—श्री दीप नारायण	,,	शाहगंज ,,
१३—श्री विक्रमाजीत	,,	बदलापुर ,,
१४—श्री केवला प्रसाद	,,	सोइथा ,,
१५—श्री हरिश्चन्द्र यादव	,,	खुटहन ,,
१६—श्री मोती लाल	,,	मछली शहर ,,
१७—श्री शीतला प्रसाद	,,	मु० बादहाशपुर ,,
१८—श्री उदरेज	,,	महराजगंज ,,
१९—श्री राम लखन	,,	सुजानगंज ,,
२०—श्री दयाशंकर	,,	मडियाहूं ,,
२१—श्री तेज बहादुर	,,	बरसठी ,,
२२—श्री रामकृष्ण बहादुर	,,	रामपुर ,,
२३—श्री चन्द्रेज	,,	रामनगर ,,
२४—श्री भगवती दीन तिवारी		एम० एल० ए० ,,
२५—श्री राम समझावन		,, ,,
२६—श्री लखन सिंह		,, ,,
२७—श्री यादवेन्द्र दत्त दुबे		,, ,,
२८—श्री कुंवर हरपाल सिंह		,, ,,
२९—श्री केशरी प्रसाद पांडे		,, ,,
३०—श्री जगन्नाथ राव		,, ,,
३१—श्री रमेश चन्द्र शर्मा		,, ,,
३२—श्री लक्ष्मी शंकर यादव		,, ,,
३३—श्री गनपत राम		एम ० पी० ,,
३४—श्री राम प्रताप चौधरी		प्रबन्धक ।

नत्थी 'झ'

(देखिये अतारांकित प्रश्न २२ का उत्तर पीछे पृष्ठ १६२ पर)

गोंडा जिले की सहकारी कृषि समितियों के नाम एवं ग्राम की सूची

१—कटैया भारी संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम कटैया भारी, पत्रालय भल्डा, जिला गोंडा।

२—श्री नगर संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम श्री नगर, पत्रालय भल्डा, जिला गोंडा। ।

३—विनहोनी संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम विनहोनी, पत्रालय तुलसीपुर, जिला गोंडा

४—तुलसीपुर संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम तुलसीपुर, पत्रालय गोंडा कचेहरी, जिला गोंडा।

५—पडरी कृपाल संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम व पत्रालय पडरी कृपाल, जिला गोंडा।

६—आजाद नगर संयुक्त सहकारी, कृषि समिति, ग्राम आजाद नगर, पत्रालय भल्डा, जिला गोंडा।

७—हरिहरपुर संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम हरिहरपुर, पत्रालय भल्डा, जिला गोंडा।

८—गुलरहा संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम गुलरहा, पत्रालय पस्का, जिला गोंडा।

९—उदवत नगर संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम उदवतनगर, पत्रालय विहसार जिला गोंडा।

२०—लेडेहना गुट सामूहिक सहकारी कृषि समिति, ग्राम लेडेहना, पत्रालय मनिकापुर, जिला गोंडा।

११—सालपुर बौतल संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम खालपुर बौतल, पत्रालय हरैय्या-गढ़, जिला गोंडा।

१२—डोमा काल्पी संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम डोमा काल्पी, पत्रालय वांसगांव, जिला गोंडा।

१३—थतैया मथैया संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम थतैया मतैया, पत्रालय ठकुरापुर, जिला गोंडा।

१४—सरैय्या चौबे संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम सरैय्या चौबे, पत्रालय, गोंडा कचहरी, जिला गोंडा।

१५—बेल्वा नोहर संयुक्त सहकारी कृषि समिति, ग्राम बेहवानोहर, पत्रालय खरग् चांदपुर, जिला गोंडा।

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० ३०८ एल० ए०—१९५३ (प्रो०)—८५०।